

निर्यापक मुनिपुंगवश्री 108 सुधासागरजी महाराज के सान्निध्यमें श्री जैन मंदिर हरीपर्वत आगरा में दिनांक 7-10  
अक्टूबर 2023 को आयोजित राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी

## प्रमुख जैन सम्मेलन, शास्त्रार्थ, श्रमण संस्कृति संस्थान और शिक्षण शिविर

- डॉ. आशीष जैन आचार्य, शाहगढ़

(राष्ट्रपति सम्मानित)

### ❖ प्रस्तावना -

जैन धर्म अनादि काल से चला आ रहा है। जैनधर्म का प्रारंभ और अंत नहीं है क्योंकि जैनधर्म में प्रवर्तक, पालक और संहारक की कोई भूमिका नहीं है। यह धर्म मानव मात्र के लिए नहीं अपितु जीव मात्र के लिए है। इसने सदा प्रत्येक जीव के कल्याण की भावना भाई और उसके कल्याण के मार्ग को प्रशस्त करने के लिए उपक्रम साधे हैं। ऐसे में, आज जहाँ अनेक धर्मों की प्ररूपणाएं अनेक प्रकार से जनमानस कर रहा है वहीं जैन धर्म अपने नियम और सिद्धान्तों पर सदा की तरह अडिग है। जैन आचार संहिता हो या जैन नियमावली यह सभी जीवों पर सदा एक जैसी ही लागू होती है। देश, काल, परिस्थिति, द्रव्य आदि की अपेक्षा से इसमें कोई बदलाव नहीं होता है। इसलिए अनेक धर्मों, धार्मिकों, शिक्षाविदों, मनीषियों, दार्शनिकों का कहना है कि जैन धर्म अत्यंत कठिन है जिस कारण से प्रत्येक जनमानस को इसका पालन करना मुश्किल होता है, इसलिए आज जैन धर्म में मानने वालों की संख्या कम होती जा रही है। यहाँ सिर्फ इतना ही कहना श्रेयस्कर होगा कि संख्या की बढ़ोत्तरी के लिए जैन धर्म कभी-भी अपने सिद्धान्तों के साथ कोई समझौता नहीं करेगा। इस उद्देश्य को लेकर सम्पूर्ण भारत वर्ष में प्राचीन काल से ही अनेक जैन सम्मेलन हुए, शास्त्रार्थ हुए और अनेक शिक्षण संस्थाओं का उदय हुआ तथा इन शिक्षण संस्थाओं छोटे-छोटे समयानुकूल शिविरों का आयोजन किया जिससे लोग जैन धर्म के मूल प्राण को समझ तदनुरूप आचरण कर सके।

भगवान वर्धमान स्वामी का जीवन्त जीवन आप भी सम्पूर्ण विश्व के लिए अहिंसा-शांति के लिए प्रेरणास्रोत है। उन्होंने अहिंसा और शांति के जिस प्रकार से जनमानस उद्बोधन दिया है, उसका प्रभाव आज भी समाज पर पड़ रहा है। सांसारिक प्रत्येक कार्य में अहिंसक शैली से जीवन जीना यह एक अद्भुत शैली का अन्वेषण कर जनसामान्य को जीवन जीने की शैली सिखाने का कार्य भगवान महावीरस्वामी जी ने किया है। इस संबंध में, अनेक प्राचीन आचार्यों ने अपनी लेखनी से भगवान महावीर स्वामीजी की वाणी यथावत् लिखकर जिनधर्म प्रभावना के साथ-साथ जनमानस को

अहिंसक रीति से जीने के लिए प्रेरित किया है। कोई भी महामानव हो, उसका लक्ष्य निश्चित होता है। उस लक्ष्य प्राप्ति के मध्य में जो-जो भी सहायक और श्रेष्ठ उपक्रम होते हैं उन स्पर्श करते हुए लोक कल्याण की भावना पूर्वक उपदेश देते हैं, स्वयं आचारण करते हैं, स्वयं करके दिखाते हैं। भगवान महावीर स्वामी के पश्चात् अनेक महापुरुष हुए हैं जिनमें -आचार्यश्री भद्रबाहु स्वामी, आचार्यश्री धरसेन स्वामी, आचार्य पुष्पदंत-भूतबलिजी, आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी, आचार्य उमास्वामी, आचार्यश्री समन्तभद्र स्वामी जी, आचार्यश्री जिनसेनस्वामीजी, आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज एवं निर्यापक मुनिपुंगव सुधासागरजी महाराज आदि। इन महापुरुषों ने जिनधर्म की प्रभावना में नवीन गति प्रदान की है। ये वे महापुरुष हैं जिन्होंने आचारण की पराकाष्ठा को जिया है और अन्य लोगों को जीने दो के सिद्धांत को आत्मसात् करने महनीय उपक्रम साधा है। आधारशिला प्रत्येक महापुरुष की जिनधर्म ही है और लक्ष्य भी जिनधर्मानुकूल चर्यापूर्वक मुक्ति का मार्ग आत्मस्वातंत्र्य अर्थात् सिद्धत्व प्राप्त करना है। इस सभी विषयों के मध्य जिनधर्म की दृढ़तम प्रतीति लोगों के हृदय में विद्यमान रहे, इसके लिए अनेक प्रयास किए गए और किए जा रहे हैं। ऐसे में, प्राचीन काल से लेकर अर्वाचीन काल तक अनेक कार्यों के लिए एक आयोजना का निर्माण किया। जिसमें जैन सम्मलेन, यति सम्मेलन, शास्त्रार्थ, गुरुकुलों की स्थापना, जन-जन तक शिक्षा के स्रोतों को संवहन, आचारण और समीचीन वृत्ति के सूत्रपात आदि संलग्न हैं।

❖ **जैन धर्म का सामान्य परिचय** - जैन शब्द की व्युत्पत्ति है - जिन एव। यद्वा जिन उपास्यदेवतास्येति। जिन्+अण्। जिनोपासकः इति जैनः। जिनः जयति इति जिनः। जि+इण् षिञ् जीति। इति नक्। अर्हन्, बुद्धः विष्णुः च। जिनानां इन्द्रः इति जिनेन्द्रः।

जो 'जिन' के अनुयायी हों उन्हें 'जैन' कहते हैं। 'जिन' शब्द बना है संस्कृत के 'जि' धातु से। 'जि' माने - जीतना। 'जिन' माने जीतने वाला। जिन्होंने अपने मन को जीत लिया, अपनी तन मन वाणी को जीत लिया और विशिष्ट आत्मज्ञान को पाकर सर्वज्ञ या पूर्णज्ञान प्राप्त किया उन आप्त पुरुष को जिनेन्द्र या जिन कहा जाता है। जैन धर्म अर्थात् 'जिन' भगवान् का धर्म।

जिसने इन्द्रियों को जीत लिया है जो आत्मविजयी हो गया है वह जिनेन्द्र है। ऐसा जिनेन्द्र भगवान के द्वारा कहा गया धर्म जिनधर्म जैन धर्म है। इस जैन धर्म में श्रमण और श्रावक इन मार्गों का कथन किया गया है। यही दो मार्ग हैं जिसमें साक्षात् और परम्परा से मोक्ष प्राप्त करने का मार्ग बताया गया है। बिना मुनि मुद्रा धारण किए कोई भी जिनेन्द्र नहीं बन सकता है। इसके लिए उसे नग्नदिगम्बरत्व होना पड़ता है और श्रमण स्वरूप को धारणा करना पड़ता है। जैन धर्म में 24 तीर्थंकरों हुए हैं। उन्होंने भी इसी मार्ग को अपनाया है। जिनमें प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव (आदिनाथ) तथा अन्तिम तीर्थंकर महावीर स्वामी हैं। जैन धर्म की अत्यन्त प्राचीनता सिद्ध करने वाले अनेक

उल्लेख साहित्य और विशेषकर पौराणिक साहित्यों में प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं। प्रमुखतया जैन धर्म की दो शाखाएँ हैं - दिगम्बर और श्वेताम्बर। जो नग्न दिगम्बरत्व रहते हैं वे दिगम्बर साधु हैं और जो श्वेत वस्त्रों को धारण करते हैं वे श्वेताम्बर साधु हैं।

जैन दर्शन में कण-कण स्वतंत्र है इस सृष्टि का या किसी जीव का कोई कर्ता नहीं है, पालन करने वाला और संहारक भी नहीं है। जीव स्वयं के कर्मों का ही कर्ता और भोक्ता है -

**स्वयं कृतं कर्म यदात्मना पुरा, तदीयं लभते शुभाशुभम्।**

**परेण दत्तं यदि लभ्यते स्फुटं, स्वयं कृतं कर्म निरर्थकं तदा।।**

प्रत्येक जीव स्वयं के द्वारा किए गए कर्मों का फल शुभ और अशुभ रूप भोगता है। यदि कोई ऐसा कहे कि दूसरे के द्वारा किए गए कर्म का फल कोई दूसरा भोगेगा तो स्वयं के द्वारा किए गए कर्म निरर्थक हो जायेंगे। सभी जीव अपने अपने कर्मों का फल भोगते हैं। जैन दर्शन में भगवान न कर्ता और न ही भोक्ता माने जाते हैं। जैन दर्शन में सृष्टिकर्ता को कोई स्थान नहीं दिया गया है। जैन धर्म में अनेक शासन देवी-देवता हैं पर उन्हें जिनेन्द्र देव के रक्षक देवी-देवताओं के रूप में ग्रहण किया गया है, न कि कोई इष्ट वस्तु को देने वाले देवी-देवता के रूप में। जैन धर्म में तीर्थंकरों जिन्हें जिनदेव, जिनेन्द्र या वीतराग भगवान कहा जाता है अर्थात् अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु इनकी आराधना का ही विशेष महत्व है, अन्य किसी का नहीं है। इन्हीं तीर्थंकरादि का अनुसरण कर आत्मबोध, ज्ञान और तन और मन पर विजय पाने का प्रयास किया जाता है।

❖ **जैन धर्म की प्राचीनता और उसका ऐतिहासिक पक्ष** - जैन धर्म भारत की श्रमण परम्परा से निकला प्राचीन धर्म और दर्शन है। जैन अर्थात् कर्मों का नाश करनेवाले 'जिन भगवान' के अनुयायी। सिन्धु घाटी से मिले जैन अवशेष जैन धर्म को सबसे प्राचीन धर्म का दर्जा देते हैं।

सम्मेल शिखर, राजगिर, पावापुरी, गिरनार, शत्रुंजय, श्रवणबेलगोला आदि जैनो के प्रसिद्ध तीर्थ हैं। पर्यूषण पर्व या दशलाक्षणी, और श्रुत पंचमी इनके मुख्य त्यौहार हैं। अहमदाबाद, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और बंगाल राजस्थान आदि के अनेक जैन आजकल भारत के अग्रगण्य उद्योगपति और व्यापारियों में गिने जाते हैं।

जैन धर्म का उद्भव की स्थिति अस्पष्ट है। जैन ग्रंथों के अनुसार धर्म वस्तु का स्वाभाव समझाता है, इसलिए जब से सृष्टि है तब से धर्म है, और जब तक सृष्टि है, तब तक धर्म रहेगा, अर्थात् जैन धर्म सदा से अस्तित्व में था और सदा रहेगा। इतिहासकारों द्वारा <sup>[2][3][4][5][6]</sup> जैन धर्म का मूल भी सिन्धु घाटी सभ्यता से जोड़ा जाता है जो हिन्दू आर्य प्रवास से पूर्व की देशी आध्यात्मिकता

को दर्शाता है। सिन्धु घाटी से मिले जैन शिलालेख भी जैन धर्म के सबसे प्राचीन धर्म होने की पुष्टि करते हैं।<sup>[7][8][9]</sup> अन्य शोधार्थियों के अनुसार श्रमण परम्परा ऐतिहासिक वैदिक धर्म के हिन्द-आर्य प्रथाओं के साथ समकालीन और पृथक् हुआ।<sup>[10]</sup>

जैन ग्रंथों के अनुसार वर्तमान में प्रचलित जैन धर्म भगवान आदिनाथ के समय से प्रचलन में आया। यहीं से जो तीर्थंकर परम्परा प्रारम्भ हुयी वह भगवान महावीर या वर्धमान तक चलती रही जिन्होंने ईसा से ५२७ वर्ष पूर्व निर्वाण प्राप्त किया था। भगवान महावीर के समय से पीछे कुछ लोग विशेषकर यूरोपियन विद्वान् जैन धर्म का प्रचलित होना मानते हैं। उनके अनुसार यह धर्म बौद्ध धर्म के पीछे उसी के कुछ तत्वों को लेकर और उनमें कुछ ब्राह्मण धर्म की शैली मिलाकर खड़ा किया गया। जिस प्रकार बौद्धों में २४ बुद्ध है उसी प्रकार जैनों में भी २४ तीर्थंकर है। जैन शब्द जिन शब्द से बना है। जिन बना है 'जि' धातु से जिसका अर्थ है जीतना। 'जिन अर्थात् जीतने वाला' जिसने स्वयं को जीत लिया उसे जितेंद्रिय कहते हैं।

**ऐतिहासिक रूपरेखा -** जैन मान्यता के अनुसार जैन धर्म अनादि काल से चला आया है अनंत काल तक चलता रहेगा। इस धर्म का प्रचार करने के लिये समय-समय पर अनेक तीर्थंकरों का आविर्भाव होता रहता है। जैन धर्म के २४ तीर्थंकरों में ऋषभ प्रथम और महावीर अंतिम तीर्थंकर थे।

महावीर के ११ गणधर (मुख्य शिष्य) थे -- इंद्रभूति गौतम, अग्निभूति गौतम, वायुभूति गौतम, व्यक्तस्वामी, सुधर्मास्वामी, मंडितपुत्र, मौर्यपुत्र, अकंपितगौतम, अचलभ्राता, मेतार्य स्वामी और प्रभासस्वामी। महावीर स्वयं क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुए थे लेकिन उनके सभी गणधर ब्राह्मण थे। इनमें गौतम इंद्रभूति और सुधर्मा को छोड़कर नौ गणधरों ने महावीर भगवान के जीवन काल में ही देह त्याग किया। जिस रात्रि को महावीर ने निर्वाण पाया उसी रात्रि को गौतम इंद्रभूति को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई।

महावीर-निर्वाण के पश्चात् सुधर्मा २० वर्ष तक जैन संघ के अधिपति रहे। बाद में संघ का भार जंबूस्वामी के सुपुर्द कर दिया गया और इस प्रकार जैन परंपरा आगे बढ़ती रही। जंबूस्वामी के पश्चात् केवलज्ञान और निर्वाण-गमन के द्वार बंद हो गए।

पाश्वर्ननाथ की मान्यता का अनुसरण कर लिच्छवि कुलोत्पन्न महावीर ने चतुर्विध संघ को ढुढ़ बनाने के लिये गणतंत्रवादी आदर्श पर संघ के नियमों को संघटित किया। निर्ग्रन्थ धर्म का प्रचार करने के लिए ज्ञातपुत्र महावीर ने बिहार में राजगृह, चंपा (भागलपुर), मछिया (मुंगेर), वैशाली (बसाढ़) और मिथिला (जनकपुर) आदि तथा उत्तर-प्रदेश

में बनारस, कौशांबी (कोसम) अयोध्या, श्रावस्ति (सहेट-महेट) और स्थूणा (स्थानेश्वर) आदि स्थानों में विहार किया। उस समय यही आर्य क्षेत्र कहलाता था, शेष क्षेत्र अनार्य था।

मगध के राजा बिंबसार (श्रेणिक) और अजातशत्रु (कूणिक) को जैनधर्म का अनुयायी कहा गया है। राजसिंह श्रेणिक द्वारा महावीर से प्रश्न पूछे जाने का उल्लेख जैन शास्त्रों में आता है। चंपा नगरी में महावीर भगवान के समवसृत होने पर अजातशत्रु का अपने दलबल सहित उनके दर्शनार्थ गमन करने का वर्णन प्राचीन आगमों में मिलता है। नंद राजाओं के समय भद्रबाहु और स्थूलभद्र बड़े प्रतिभाशाली जैन आचार्य हुए जिन्होंने जैन धर्म को समुन्नत बनाया। आचार्य महागिरि स्थूलभद्र के प्रधान शिष्यों में से थे। तत्पश्चात् पाटलिपुत्र में चंद्रगुप्त मौर्य (\*२५- \*०२ ई० पूर्व) का राज्य हुआ। इस समय मगध में भयंकर दुष्काल पड़ा और जैन साधु मगध छोड़कर चले गए। दुष्काल समाप्त होने पर जब लौटकर आए तब पाटलिपुत्र में जैन आगमों की प्रथम वाचना हुई जो 'पाटलिपुत्र-वाचना' के नाम से कही जाती है। दिगंबर जैन परंपरा के अनुसार चंद्रगुप्त ने जैन दीक्षा ग्रहण की और दक्षिण भारत में श्रवणबेलगोला में देह-त्याग किया। चंद्रगुप्त के बाद अशोक (२७२-२ \*२ ई० पू०) के पौत्र राजा संप्रति (२२०-२११ ई० पू०) का नाम जैन ग्रंथों में बहुत आदर के साथ लिया जाता है। आचार्य महागिरि के शिष्य सुहस्ति ने संप्रति को जैन धर्म में दीक्षित किया। संप्रति ने महाराष्ट्र, आंध्र, द्रविड़, कुर्ग आदि प्रदेशों में अपने सुभटों को भेजकर जैन श्रमणसंघ की विशेष प्रभावना की।

कलिंग का सम्राट् खारवेल जैन धर्म का परम अनुयायी था। मगध का राजा नंद, जो जिन-प्रतिमा उठाकर ले गया था, उसे वह वापस लाया। कटक के पास उदयगिरि से प्राप्त, शिलालेखों से पता चलता है कि खारवेल ने ऋषभ की प्रतिमा निर्माण कराई और जैन साधुओं के रहने के लिये गुफाएँ खुदवाईं। तत्पश्चात् ईसवी सन् के पूर्व प्रथम शताब्दी में उज्जैनी के राजा विक्रमादित्य के पिता गर्दभिल्ल से उत्तेजित किए जाने पर कालकाचार्य का ईरान जाकर शक राजाओं को हिंदुस्तान में लाने का उल्लेख जैन ग्रंथों में मिलता है। कालकाचार्य को प्रतिष्ठान (पैठन, महाराष्ट्र) के राजा सातवाहन का समकालीन बताया गया है। फिर आचार्य पादलिप्त, वज्रस्वामी और आर्यरक्षित ने संघ का अधिपतित्व किया। इस प्रकार जैन धर्म की उन्नति होती गई और अब वह दूर दूर तक फैल गया।

मथुरा में ईसवी सन् के आरंभ के जो शिलालेख उपलब्ध हुए हैं। उनसे पता लगता है कि किसी समय मथुरा जैन धर्म का बड़ा केंद्र था तथा व्यापारी और निम्नवर्ग के लोग इस धर्म के अनुयायी थे। यहाँ के शिलालेखों में जो जैन आचार्यों के गण, कुल और शाखाओं का उल्लेख है वह भद्रबाहु के कल्पसूत्र की स्थाविरावलि में ज्यों का त्यों मिलता है। ईसवी सन् \*६०-७\* के लगभग आर्य स्कंदिल की अध्यक्षता में मथुरा में जैन आगमों की दूसरी वाचना हुई, इससे भी मथुरा के महत्त्व का

पता चलता है। इस काल के प्रमुख जैन आचार्यों में उमास्वाति, कुंदकुंद, सिद्धसेन और समंतभद्र आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं जिन्होंने अपनी अलौकिक प्रतिभा के बल से जैन साहित्य को पुष्पित और पल्लवित किया।

गुप्त राजाओं का काल भारतवर्ष का सुवर्णकाल कहा जाता है। इस समय जैन धर्म उत्तरोत्तर उन्नत दशा को प्राप्त होता गया। गुजरात में गिरनार और शत्रुंजय जैनों के परम तीर्थ माने गए हैं। ईसवी सन् की ७वीं शताब्दी में देवर्धिगणि क्षमाश्रमण के अधिपतित्व में वल्लभी में जैन आगमों की अंतिम वाचना स्वीकार कर उन्हें लिपिबद्ध कर दिया गया। आगे चलकर चावड़ा वंश के राजा वनराज ने राजगद्दी पर आसीन होने के पूर्व (७२०-७८०) जैन मुनि शीलगुणसूरि के उपदेश से प्रभावित हो गुजरात का प्रसिद्ध अणहिल्लपुर पाटण नाम का नगर बसाया। आचार्य हरिभद्र और अकलंक जैसे प्रकांड विद्वानों का इस समय जन्म हुआ; जिन्होंने न्यायसिद्धांत आदि विषयों पर ग्रंथ लिखकर जैन धर्म को समुन्नत किया।

फिर चालुक्य वंश के स्थापक राजा मूलराज (९६१-९९६) ने जैन मंदिर का निर्माण कराया। अणहिल्लपुर पाटण के राजा सिद्धराज जयसिंह कलिकाल सर्वज्ञ हेमचंद्र (जन्म १०८८ ई०) के समकालीन थे। सिद्धराज जयसिंह की मृत्यु हो जाने पर उनका भतीजा कुमारपाल गुजरात की गद्दी पर बैठा। कुमारपाल, हेमचंद्र को राजगुरु की तरह मानते थे। इस समय आदर्श जैन राज्य स्थापित करने का प्रयत्न किया गया जिसके फलस्वरूप अनेक सुंदर जैन मंदिरों का निर्माण हुआ; प्राणि हिंसा, शिकार, मांस-भक्षण आदि को रोकने की घोषणा की गई और यज्ञ के अवसर पर पशुहिंसा के बदले ब्राह्मणों को अनाज होम करने का आदेश दिया गया। इसी समय वस्तुपाल और तेजपाल मंत्रियों ने गिरनार, शत्रुंजय तथा आबू पर्वतों पर कलापूर्ण भव्य मंदिरों का निर्माण किया।

दक्षिण भारत में भी जैनधर्म का प्रसार हुआ, खासकर दिगंबर जैनों का वहाँ प्रवेश हुआ। ईसा सन् की प्रारंभिक शताब्दियों से ही तमिल साहित्य पर जैन धर्म का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। चोल और चेर इस धर्म के अनुयायी बने। महाराष्ट्र, कर्नाटक, मद्रास राज्य के उत्तरी भाग, कुर्ग, आंध्र और मैसूर राज्य में अनेक जैन धर्मानुयायी लोग बसते थे, इस पता इन स्थानों के जीर्णोद्धार देवालयों और शिलालेखों से लगता है। कर्नाटक दिगंबर संप्रदाय का मुख्य धाम था। दिगंबर आचार्य समंतभद्र और पूज्यपाद ने इस प्रदेश में घूम घूमकर जैन धर्म का अभ्युत्थान किया था। गंग और राष्ट्रकूट राजवंशों के आश्रय से जैन धर्म उन्नत हुआ। गंगवंशी राजा राजमल्ल के मंत्री और सेनापति तथा सिद्धांतचक्रवर्ती नेमिचंद्र के गुरु चामुंडराय ने सन् ९८० में अरिष्टनेमि का भव्य

देवालय और गोमटेश्वर में बाहुवली जी की विशाल प्रतिमा का निर्माण कराया। चामुंडराय सुप्रद्धि कविरत्न का आश्रयदाता था। राष्ट्रकूट वंश के राजाओं में अमोघवर्ष प्रथम (८१५-८७७ ई०) जैन आचार्य जिनसेन के शिष्य थे। अमोघवर्ष ने जिनसेन के शिष्य गुणभद्र को भी आश्रय दिया। कदंबवंशी भी अधिकतर जैने धर्म के अनुयायी रहे।

मुसलमानों के राज्य में अनेक बादशाहों ने जैन मुनियों को सम्मानित कर उच्च पद पर बैठाया। सुलतान फिरोजशाह तुगलक (१३५१-१३८८) ने रत्नशेखरसूरि को, तुगलक सुलतान मुहम्मद शाह ने जिरप्रभसूरि के और सम्राट् अकबर (१५५६-१९०५) ने हरिविजयसूरि को सम्मानित किया। इसी प्रकार औरंगजेब (१६५९-१७०७) ने अपने दरबार के जवेरी शांतिदास जैन को शत्रुंजय पर्वत और उसकी दो लाख की आमदनी, तथा अहमदशाह बहादुर (१७४८-१७४५) ने जगत्सेठ महताबराय को पारसनाथ पर्वत देकर पुरस्कृत किया।

#### ❖ जैन धर्म के प्रमुख सिद्धान्त -

❖ **अहिंसा परमो धर्मः** - कर्मरूपी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर 'वर्धमान महावीर' ने सिद्धत्व की प्राप्ति की और वे 'जिन' इस संज्ञा से अभिहित हुए हैं। अतः उनके कहा गया दिव्योपदेश जिनवाणी कही गयी है। जैन धर्म में अहिंसा को परमधर्म माना गया है। सब जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता, अतएव इस धर्म में प्राणिवध के त्याग का सर्वप्रथम उपदेश है। केवल प्राणों का ही वध नहीं, बल्कि दूसरों को पीड़ा पहुँचाने वाले असत्य भाषण को भी हिंसा का एक अंग बताया है। महावीर ने अपने शिष्यों तथा अनुयायियों को उपदेश देते हुए कहा है कि उन्हें बोलते-चलते, उठते-बैठते, सोते और खाते-पीते सदा यत्नशील रहना चाहिए। अयत्नाचार पूर्वक कामभोगों में आसक्ति ही हिंसा है, इसलिये विकारों पर विजय पाना, इन्द्रियों का दमन करना और अपनी समस्त वृत्तियों को संकुचित करने को जैन धर्म में सच्ची अहिंसा बताया है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति में भी जीवन है, अतएव पृथ्वी आदि एकेन्द्रिय जीवों की हिंसा का भी जैन धर्म में निषेध है।

❖ **कर्म** - जैन धर्म का दूसरा महत्वपूर्ण सिद्धान्त है कर्म। महावीर ने बार-बार कहा है कि जो जैसा अच्छा, बुरा कर्म करता है उसका फल अवश्य ही भोगना पड़ता है तथा मनुष्य चाहे जो प्राप्त कर सकता है, चाहे जो बन सकता है, इसलिये अपने भाग्य का विधाता वह स्वयं है। जैनधर्म में ईश्वर को जगत् का कर्त्ता नहीं माना गया, तप आदि सत्कर्मों द्वारा आत्मविकास की सर्वोच्च अवस्था को ही ईश्वर बताया है। यहाँ नित्य, एक अथवा मुक्त ईश्वर को अथवा अवतारवाद को स्वीकार नहीं किया गया। ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तराय इन आठ कर्मों का नाश होने से जीव जब कर्म के बन्धन से मुक्त हो जाता है तो वह ईश्वर बन जाता है तथा राग-द्वेष से मुक्त हो जाने के कारण वह इस संसार में फिर कभी नहीं लौटता है।

- ❖ **छः द्रव्य** - जैनधर्म में जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल नाम के छः द्रव्य माने गए हैं। ये द्रव्य लोकाकाश में पाए जाते हैं, अलोकाकाश में केवल आकाश ही है।
- ❖ **सात तत्व** - जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा और मोक्ष ये सात तत्व हैं। इन तत्वों के श्रद्धान से सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है। सम्यग्दर्शन के बाद सम्यग्ज्ञान और फिर व्रत, तप, संयम आदि के पालन करने से सम्यक्चारित्र उत्पन्न होता है। इन तीन रत्नों को मोक्ष का मार्ग बताया है। जैन सिद्धान्त में रत्नत्रय की पूर्णता प्राप्त कर लेने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है। ये 'रत्नत्रय' हैं-सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान तथा सम्यक् चारित्र। मोक्ष होने पर जीव समस्त कर्मों के बन्धन से मुक्त हो जाता है और ऊर्ध्वगति होने के कारण वह लोक के अग्रभाग में सिद्धशिला पर अवस्थित हो जाता है। उसे अनंत दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त सुख और अनन्त वीर्य की प्राप्ति होती है और वह अन्तकाल तक वहाँ निवास करता है, वहाँ से लौटकर नहीं आता।
- ❖ **अनेकान्तवाद -**
- ❖ **अनेकांतवाद का अर्थ** - जब वस्तु के पूर्ण स्वरूप को समझने के लिए अनेक दृष्टिकोण का उपयोग कर के वस्तु का स्वीकार किया जाए तो उस शैली को अनेकांतवाद कहते हैं। वस्तु का स्वरूप इतना विस्तृत व गहन है कि किसी एक वाक्य में उसे सम्पूर्ण रूप से समझाया नहीं जा सकता। इसलिए जैन धर्म के अंतर्गत सभी दृष्टिकोणों को न्यायपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। अनेकांतवाद अर्थात् अंत को समझाने के लिए कोई एक वाद समर्थ नहीं है। अनेकांतवाद यह सिद्धान्त जैन दर्शन का प्राण है। यह सिद्धान्त जैनधर्म में अनवरत रूप से विद्यमान है।
- ❖ **अनेकांतवाद का सिद्धांत** - अनेकांतवाद जैन दर्शन का सिद्धांत है। इसका अभिप्राय यह है कि संसार की प्रत्येक वस्तु विरुद्ध प्रतीत होने वाले अनंत कर्मों के भिन्न-भिन्न आशय हैं। वस्तु के संबंध में विभिन्न दर्शनों की जो विभिन्न मान्यताएँ हैं, अपेक्षाभेद एवं दृष्टिभेद से वे सब सत्य हैं। उनमें से किसी एक को यथार्थ मानना और अन्यो को अयथार्थ मानना उचित नहीं है। वस्तु को कुछ परिमित रूपों में ही देखना नयदृष्टि है, प्रमाणदृष्टि नहीं। नयदृष्टि का अर्थ है एकांकी दृष्टि और प्रमाणदृष्टि का सर्वांगीण दृष्टि।

इस जगत् में अनेक वस्तुएँ हैं और उनके अनेक धर्म (गुण-तत्व) हैं। जैन दर्शन मानता है कि मनुष्यों, पशुओं, पक्षियों, पेड़ और पौधों में ही चेतना या जीव नहीं होते हैं, बल्कि धातुओं और पत्थरों जैसे दृश्यमान-जड़ पदार्थ भी जीव स्कन्ध समान होता है। पुद्गलाणु भी अनेक और अनंत हैं, जिनके संघात बनते-बिगड़ते रहते हैं।

अनेकांतवाद कहता है कि वस्तु के अनेक गुण-धर्म होते हैं। वस्तु की पर्याएँ बदलती रहती है। इसका मतलब कि पदार्थ उत्पन्न और विनष्ट होता रहता है, परिवर्तनशील, आकस्मिक और अनित्य

है। अतः पदार्थ या द्रव्य का लक्षण है- बनना, बिगड़ना और फिर बन जाना। यही अनेकांतवाद का सार है।

इसे इस तरह से समझना चाहिए कि हर वस्तु को मुख्य और गौण, दो भागों में बाँटें तो एक दृष्टि से एक चीज सत्मानि जा सकती है, दूसरी दृष्टि से असत्। अनेकांत में समस्त विरोधों का समन्वय हो जाता है। अतः सत्य को अनेक दृष्टिकोण से देखा जा सकता है।

- **अनेकांतवाद को प्रदर्शित करती यह कहानी** - अनेकान्तवाद को एक हाथी और पांच अंधों की कहानी से बहुत ही सरल तरीके से समझा जा सकता है। पांच अंधे एक हाथी को छूते हैं और उसके बाद अपने-अपने अनुभव को बताते हैं।

एक अंधा हाथी की पूँछ पकड़ता है तो उसे लगता है कि यह रस्सी जैसी कोई चीज है, इसी तरह दूसरा अंधा व्यक्ति हाथी की सूँड़ पकड़ता है उसे लगता है कि यह कोई साँप है। इसी तरह तीसरे ने हाथी का पाँव पकड़ा और कहा कि यह खंभे जैसी कोई चीज है, किसी ने हाथी के कान पकड़े तो उसने कहा कि यह कोई सूप जैसी चीज है, सबकी अपनी अपनी व्याख्याएं।

जब सब एक साथ आए तो बड़ा बवाल मचा। सबने सच को महसूस किया था पर पूर्ण सत्य को नहीं, एक ही वस्तु में कई गुण होते हैं पर हर इंसान के अपने दृष्टिकोण की वजह से उसे वस्तु के कुछ गुण गौण तो कुछ प्रमुखता से दिखाई देते हैं। यही अनेकान्तवाद का सार है।

- ❖ **स्याद्वाद** - 'स्याद्वाद' का अर्थ 'सापेक्षतावाद' होता है। यह जैन दर्शन के अंतर्गत किसी वस्तु के गुण को समझने, समझाने और अभिव्यक्त करने का सापेक्षिक सिद्धांत है। 'सापेक्षता' अर्थात् 'किसी अपेक्षा से'। अपेक्षा के विचारों से कोई भी चीज सत्भी हो सकती है और असत्भी। इसी को 'सत्तभंगी नय' से समझाया जाता है। इसी का नाम 'स्याद्वाद' है।

जैन धर्म के अनुसार भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से देखे जाने के कारण प्रत्येक ज्ञान भी भिन्न-भिन्न हो सकता है। केवल दो ('सत्य' और 'असत्य') नहीं, बल्कि सात स्तरीय तर्कपद्धति। ज्ञान की यह विभिन्नता सात प्रकार की हो सकती है-

(१) स्यात्-अस्ति (है)

(२) स्यात्-नास्ति (नहीं है)

(\*) स्यात् अस्ति च नास्ति च (है और नहीं है)

(४) स्यात् अवक्तव्यम् (कहा नहीं जा सकता)

(५) स्यात् अस्ति च अवक्तव्यम् च (है किन्तु कहा नहीं जा सकता)

(६) स्यात् नास्ति च अवक्तव्यम् च (नहीं है और कहा नहीं जा सकता)

(७) स्यात् अस्ति च नास्ति च अवक्तव्यम् च (है, नहीं है और कहा नहीं जा सकता।)

❖ **अनुयोग-** जैनागम चार भागों में विभक्त है, जिन्हें चार अनुयोग कहते हैं - प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग। इन चारों में क्रमसे कथाएँ व पुराण, कर्म सिद्धांत व लोक विभाग, जीव का आचार-विचार और चेतनाचेतन द्रव्यों का स्वरूप व तत्त्वों का निर्देश है। इसके अतिरिक्त वस्तु का कथन करने में जिन अधिकारों की आवश्यकता होती है उन्हें अनुयोगद्वारा कहते हैं। इन दोनों ही प्रकार के अनुयोगों का कथन इस अधिकार में किया गया है। ये चार अनुयोग हैं -

1. **प्रथमानुयोग** - धर्म, अर्थ, काम मोक्ष का अथवा एक पुरुष के आश्रय कथा का अथवा त्रेसठ पुरुषों के चरित्र का अथवा पुण्य का अथवा रत्नत्रय और ध्यान का है कथन जिसमें सो प्रथमानुयोग रूप शास्त्र जानना चाहिए।
2. **चरणानुयोग** - सम्यग्ज्ञान ही गृहस्थ और मुनियों के चारित्र की उत्पत्ति, वृद्धि, रक्षा के अंगभूत चरणानुयोग शास्त्र को विशेष प्रकार से जानता है।
3. **करणानुयोग** - लोक अलोक के विभाग को, युगों के परिवर्तन को तथा चारों गतियों को दर्पण के समान प्रगट करनेवाले करणानुयोग को सम्यग्ज्ञान जानता है।
4. **द्रव्यानुयोग** - समयसार आदि प्राभृत और तत्त्वार्थसूत्र तथा सिद्धांत आदि शास्त्रों में मुख्यता से शुद्ध-अशुद्ध जीव आदि छः द्रव्य आदि का जो वर्णन किया गया है वह द्रव्यानुयोग कहलाता है।

❖ **आचार विचार** - जैन पन्थ में आत्मशुद्धि पर बल दिया गया है। आत्मशुद्धि प्राप्त करने के लिये जैन धर्म में शरीर ममत्व भाव के त्याग और संसार-भोगों से विरक्ति के भाव को मुख्य माना गया है। निर्ग्रन्थ और निष्परिग्रही होने के कारण जैन साधु नग्न मुद्रा में विचरण करते हैं। यह बाह्य तप भी अन्तरंग शुद्धि के लिये ही किया जाता था। जैन दर्शन कहता है कि भले ही कोई नग्न अवस्था में रहे या एक-एक महीने उपवास करे, किन्तु यदि उसके मन में माया है तो उसे सिद्धि मिलने वाली नहीं। जैन आचार-विचार के पालन करने को 'शूरों का मार्ग' कहा गया है। जैसे लोहे के चने चबाना, बालू का ग्रास भक्षण करना, समुद्र को भुजाओं से पार करना और तलवार की धार पर चलना दुःसाध्य है, वैसे ही निर्ग्रन्थ प्रवचन के आचरण को भी दुःसाध्य कहा गया है।

जैन धर्म में भी जाति भेद को स्वीकार नहीं किया गया। जैन ग्रन्थों में स्पष्टतया कहा गया है कि सच्चा ब्राह्मण वही है जिसने राग, द्वेष और भय पर विजय प्राप्त की है और जो अपनी इन्द्रियों पर निग्रह रखता है। जैन धर्म में अपने-अपने कर्मों के अनुसार ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की

कल्पना की गई है, किसी जाति विशेष में उत्पन्न होने से नहीं। जैन धर्म में अनेक म्लेच्छ, चोर, डाकू, मछुए, वेश्या और चांडालपुत्र दीक्षित हुए हैं, इस प्रकार के अनेक कथानक जैन ग्रंथों में पाए जाते हैं।

जैन धर्म के सभी तीर्थंकर क्षत्रिय कुल में हुए थे। इससे मालूम होता है कि पूर्वकाल में जैन धर्म क्षत्रियों का धर्म था, लेकिन आजकल अधिकांश वैश्य लोग ही इसके अनुयायी हैं, ऐसा माना जाता है।

#### ❖ सात तत्त्व - जैन ग्रंथों में सात तत्त्वों का वर्णन मिलता है। यह हैं-

1. जीव- जैन दर्शन में आत्मा के लिए जीव शब्द का प्रयोग किया गया है। आत्मा द्रव्य जो चैतन्यस्वरूप है। जो जानता है, देखता है, स्पंदन करता है वह जीव है।
2. अजीव- जड़ या की अचेतन द्रव्य को अजीव कहा जाता है।
3. आस्रव - पुद्गल कर्मों का आना आस्रव है।
4. बन्ध- आत्मा से कर्मों का एकमेक होकर बंध जाना बन्ध है।
5. संवर- कर्मों का आना रूक जाना संवर है।
6. निर्जरा- कर्मों का एकदेश क्षय होना।
7. मोक्ष - कर्मों का सर्वदेश क्षय होना मोक्ष है।

#### ❖ व्रत - जैन धर्म में श्रावक और मुनि दोनों के लिए पाँच व्रत बताए गए हैं। तीर्थंकर आदि महापुरुष जिनका पालन करते हैं, वह महाव्रत कहलाते हैं।

1. अहिंसा - किसी भी जीव को मन, वचन, काय से पीड़ा नहीं पहुँचाना। किसी जीव के प्राणों का घात नहीं करना।
2. सत्य - हित, मित, प्रिय वचन बोलना।
3. अस्तेय - बिना दी हुई वस्तु को ग्रहण नहीं करना।
4. ब्रह्मचर्य - मन, वचन, काय से मैथुन कर्म का त्याग करना।
5. अपरिग्रह- पदार्थों के प्रति ममत्वरूप परिणामन का बुद्धिपूर्वक त्याग।

मुनि इन व्रतों का सूक्ष्म रूप से पालन करते हैं, वही श्रावक स्थूल रूप से करते हैं।

#### ❖ नौ पदार्थ - जैन ग्रंथों के अनुसार जीव और अजीव, यह दो मुख्य पदार्थ हैं। आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा, मोक्ष, पुण्य, पाप अजीव द्रव्य के भेद हैं।

#### ❖ छह द्रव्य - छः शाश्वत द्रव्य हैं। जैन धर्म के अनुसार लोक ६ द्रव्यों (substance) से बना है। यह ६ द्रव्य शाश्वत हैं अर्थात् इनको बनाया या मिटाया नहीं जा सकता। यह हैं - जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल।

❖ **त्रिरत्न** - अर्थात् रत्नत्रय।

- **सम्यक् दर्शन** - सच्चे देव-शास्त्र-गुरु पर सच्चा श्रद्धान रखना। तीन मूढताओं का त्याग, आठ मर्दों का त्याग, आठ अंगों का पालन आदि सम्यक् दर्शन है।
- **सम्यक् ज्ञान** - संशय-विपर्यय-अनध्वसाय रहित ज्ञान सम्यक् ज्ञान है।
- **सम्यक् चारित्र** - अज्ञानपूर्वक आचारण की निवृत्ति ही सम्यक् चारित्र है।

यह रत्नत्रय आत्मा को छोड़कर अन्य किसी द्रव्य में नहीं रहता।

- ❖ **सम्यक्त्व के आठ अंग हैं** - निःशंकित, निःकांक्षित, निर्विचिकित्सा, अमूढदृष्टि, उपगूहन, स्थितिकरण, प्रभावना, वात्सल्य।
- ❖ **चार कषाय** - क्रोध, मान, माया, लोभ यह चार कषाय हैं जिनके कारण कर्मों का आस्रव होता है। इन चार कषाय को संयमित रखने के लिए माध्यस्थता, करुणा, प्रमोद, मैत्री भाव धारण करना चाहिये।
- ❖ **चार गति** - चार गतियाँ जिनमें संसारी जीव का जन्म-मरण होता रहता है- देव गति, मनुष्य गति, तिर्यच गति, नर्क गति। मोक्ष को पंचम गति भी कहा जाता है।
- ❖ **चार निक्षेप** - नाम निक्षेप, स्थापना निक्षेप, द्रव्य निक्षेप, भाव निक्षेप।
  - **विशेष कथन** - अहिंसा और जीव दया पर बहुत जोर दिया जाता है। सभी जैन शाकाहारी होते हैं। अहिंसा का पालन करना सभी मुनियों और श्रावकों का परम धर्म होता है। जैन धर्म का मुख्य वाक्य है -

**अहिंसा परमो धर्मः**

- ❖ **मन्त्र** - **णमोकार मंत्र** यह जैन धर्म का परम पवित्र और अनादि मूलमंत्र है जो प्राकृत भाषा में है-

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आइरियाणं। णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्वसाहूणं॥

अर्थात् अरिहंतों को नमस्कार, सिद्धों को नमस्कार, आचार्यों को नमस्कार, उपाध्यायों को नमस्कार, सर्व साधुओं को नमस्कार। ये पंच परमेष्ठी हैं।

- ❖ **काल चक्र** - जैन कालचक्र दो भाग में विभाजित है : उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी। जिस प्रकार काल हिंदुओं में मन्वंतर कल्प आदि में विभक्त है उसी प्रकार जैन में काल दो प्रकार का है- उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी। अवसर्पिणी काल में समयावधि, हर वस्तु का मान, आयु, बल इत्यादि घटता है जबकि उत्सर्पिणी में समयावधि, हर वस्तु का मान और आयु, बल इत्यादि बढ़ता है इन दोनों का कालमान दस क्रोड़ाक्रोड़ी सागरोपम का होता है अर्थात् एक समयचक्र बीस क्रोड़ाक्रोड़ी सागरोपम का होता है। प्रत्येक उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी में 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 बलदेव, 9 नारायण और 9 प्रतिनारायण का जन्म होता है। इन्हें त्रैसठ

शलाकापुरुष कहा जाता है। ऊपर जो २४ तीर्थकर गिनाए गए हैं वे वर्तमान अवसर्पिणी के हैं। प्रत्येक उत्सर्पिणी या अवसर्पिणी में नए-नए जीव तीर्थकर हुआ करते हैं। इन्हीं तीर्थकरों के उपदेशों को लेकर गणधर लोग द्वादश अंगों की रचना करते हैं। ये ही द्वादशांग जैन धर्म के मूल ग्रंथ माने जाते हैं।

यहाँ हम देखते हैं कि जैन दर्शन के विविध सिद्धान्त हैं जो कि जीव मात्र के लिए कल्याण के लिए हैं। ये सभी सिद्धान्त किसी न किसी रूप में मानव को नैतिक से पारमार्थिक की ओर ले जाने वाले हैं। यह भी सत्य है कि जैन धर्म के सिद्धान्तों पर चलना तलवार की धार पर चलने के बराबर पर हैं परंतु इन सिद्धान्तों का पालन व्यक्ति को निखार देता है और उन्नत बना देता है। इसी उपक्रम में जैन आचार्यों ने बार-बार बैठक जैन सिद्धान्तों और जैन धर्म के वर्तमान पक्ष पर अनेक कार्यशालाएं, सम्मेलन किए। जिनका सार्वभौमिक प्रभाव रहा है। आगे हम इन्हीं सम्मेलनों की चर्चा करते हैं।

## प्रमुख जैन सम्मेलन एवं शास्त्रार्थ

जैन धर्म अनवरत रूप से चलता रहा है। प्रत्येक मानव के हृदय में जैनत्व के बीज विद्यमान है। भले ही कोई मानव इस बात को स्वीकार करें या न करें, वह जब भी अहिंसक होगा तब-तब उसके हृदय में जैनत्व के संस्कारों का बीजांकुरण होगा। भगवान महावीर स्वामी की दिव्यदेशना प्रत्येक जीव मात्र के खिरी। सभी के कल्याण की भावना निहित रही है। भगवान महावीर स्वामी के गणधर श्री इन्द्रभूति गौतम हुए हैं। भगवान महावीर स्वामी के शासन काल का प्रथम शास्त्रार्थ सौधर्म इन्द्र का श्री इन्द्रभूति गौतम के साथ हुआ। जब इन्द्रभूति ब्राह्मण अपने अहंकार के चरम पर था उस समय सौधर्म इन्द्र ने उसके अधिकचरे ज्ञान का भान कराने के लिए मात्र एक ही श्लोक पूछा -

**त्रैकाल्यं द्रव्यषट्कं नवपदसहितं जीवषट्कायलेश्याः**

**पंचान्ये चास्तिकाया व्रत-समिति-गति-ज्ञान-चारित्रभेदाः॥**

इसके उत्तर में इन्द्रभूति ब्राह्मण जब अवाक् रह गए तब वे कहते हैं तुम्हारा गुरु कौन है? मेरा सीधा शास्त्रार्थ उसी के साथ करूंगा। अर्थात् जैन दर्शन की समीचीन व्यवस्था के समक्ष मानियों के मान नहीं ठिके। इसी प्रकार से अन्य जैन सम्मेलन और शास्त्रार्थ का यहां विवेचन कर रहे हैं -

### 1. श्वेतांबरों के साथ वाद-

(मूल आचार/प्रशस्ति/11/जिनदास पार्श्वनाथ फुडकले) भगवत्कुंदकुंदाचार्य का गिरनार पर्वत पर श्वेतांबराचार्यों के साथ बड़ा वाद हुआ था, उस समय पाषाण निर्मित सरस्वती की मूर्ति से आपने यह कहला दिया था कि दिगंबर धर्म प्राचीन है।—यथा=

**“पद्मनंदिगुरुर्जातो बलात्कारगणाग्रणीः।**

**पाषाणघटिता येन वादिता श्रीसरस्वती॥—गुर्वावली॥**

**कुंदकुंदगणी येनोर्जयंतगिरिमस्तके।**

**सोऽवताद्वादिता ब्राह्मी पाषाणघटिता कलौ॥”**

**(आचार्य शुभचंद्र कृत पांडवपुराण)**

ऐसे अनेक प्रमाणों से उनकी उद्धट विद्वत्ता सिद्ध है।

नोट—यद्यपि सूत्र पाहुड़ से इस बात की पुष्टि होती है और दर्शनसार में भी दिगंबर श्वेतांबर भेद विक्रम संवत् 136 में बताया गया है परंतु पंडित कैलाशचंद जी के अनुसार यह विवाद पद्मनंदि नाम के किसी भट्टारक के साथ हुआ था। कुंदकुंद के साथ नहीं।

**(जैन साहित्य/2/110,112)**

संपूर्ण श्रुत के विनाश के भय से अवशिष्ट श्रुत को ग्रंथ रूप में सुरक्षित करने वाले आचार्य भूतबली और पुष्पदंत के बाद हुए पंचाचार से विभूषित निर्ग्रंथ आचार्य इन्होंने पंचम काल में गिरिनार पर्वत के शिखर पर स्थित पाषाण निर्मित सरस्वती देवी को बोलने के लिए बाध्य कर दिया था ।

**पांडवपुराण 1. 14, वीरवर्द्धमानचरित्र 1.53-57**

2. भगवान् वीर के निर्वाण के पश्चात् गौतम गणधर से लेकर आचार्य अर्हद्वली तक उनका मूलसंघ अविच्छिन्न रूप से चलता रहा। आचार्य अर्हद्वली ने पंचवर्षीय युगप्रतिक्रमण के अवसर परमहिमानगर जिला सतारा में एक महान यति सम्मेलन किया, जिसमें सौ योजन तक के साधु सम्मिलित हुए। उस समय उन साधुओं में अपने अपने शिष्यों के प्रति कुछ पक्षपात की बू देखकर उन्होंने मूलसंघ की सत्ता समाप्त करके उसे पृथक् पृथक् नामों वाले अनेक अवान्तर संघों में विभाजित कर दिया जिसमें से कुछ के नाम ये हैं - 1. नन्दि, 2. वृषभ, 3. सिंह, 4. देव, 5. काष्ठा, 6. वीर, 7. अपराजित, 8. पंचस्तूप, 9. सेन, 10. भद्र, 11. गुणधर, 12. गुप्त, 13. सिंह, 14. चन्द्र इत्यादि( *धवला 1/ प्रस्तावना 14/H.L.Jain*)। इनके अतिरिक्त भी अनेकों अवान्तर संघ भी भिन्न भिन्न समयों पर परिस्थितिवश उत्पन्न होते रहे। धीरे धीरे इनमें से कुछ संघों में शिथिलाचार आता चला गया, जिनके कारण वे जैनाभासी कहलाने लगे (इनमें छः प्रसिद्ध हैं - 1. श्वेताम्बर, 2. गोपुच्छ या काष्ठा, 3. द्रविड़, 4. यापनीय या गोप्य, 5. निष्पिच्छ या माथुर और 6. भिल्लक)। आप राजा जिनपालित के समकालीन तथा उनके मामा थे। इस पर से यह अनुमान किया जा सकता है कि राजा जिनपालित की राजधानी वनवास ही आपका जन्म स्थान है। आप वहाँ से चलकर पुंड्रवर्धन अर्हद्वलि आचार्य के स्थान पर आये और उनसे दीक्षा लेकर तुरंत उनके साथ ही महिमानगर चले गये जहाँ अर्हद्वलि ने बृहद् यति सम्मेलन एकत्रित किया था। उनका आदेश पाकर ये वहाँ से ही एक अन्य साधु भूतबलि (आचार्य) के साथ धरसेनाचार्य की सेवार्थ गिरिनार चले गये, जहाँ उन्होंने धरसेनाचार्य से षट्खंड का ज्ञान प्राप्त किया। इनकी साधना से प्रसन्न होकर भूत जाति के व्यंतर देवों ने इनकी अस्त-व्यस्त दंतपंक्ति को सुंदर कर दिया था। इसी से इनका नाम पुष्पदंत पड़ गया। विबुध श्रीधर के श्रुतावतार के अनुसार आप वसुंधरा नगरी के राजा नरवाहन थे। गुरु से ज्ञान प्राप्त करके अपने सहधर्मा भूतबलिजी के साथ आप गुरु से विदा लेकर आषाढ़ शु. 11 को पर्वत से नीचे आ गए और उसके निकट अंकलेश्वर में चातुर्मास कर लिया। इसकी समाप्ति के पश्चात् भूतबलि को वहाँ ही छोड़कर आप अपने स्थान 'वनवास' लौट आये, जहाँ अपने भानजे राजा जिनपालित को दीक्षा देकर आपने उन्हें सिद्धांत का अध्ययन कराया। उसके निमित्त से आपने 'वीसदि सूत्र' नामक एक ग्रंथ की रचना की जिसे अवलोकन के लिये आपने उन्हीं के द्वारा भूतबलि जी के पास भेज दिया।

**समय - वी. नि. 593-633 (ई. 66-106)।**

पूर्व देश में एक नगरी है। 'महिमा' नगरी का अपरनाम प्रतीत होता है। क्योंकि अर्हद्वलि आचार्य द्वारा यहाँ यति सम्मेलन बुलाया गया है। और धरसेनाचार्य ने महिमा नगरी में साधुओं को बुलाने के लिए पत्र लिखा था। महिमा नगरीवाला साधु संघ और अर्हद्वलि आचार्य का साधु सम्मेलन एकार्थवाची प्रतीत होते हैं।

( धवला 1/प्र.14,31)।

भगवान् महावीरके निर्वाणके पश्चात् उनका यह मूल संघ 162 वर्षके अन्तरालमें होने वाले गौतम गणधरसे लेकर अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहु स्वामी तक अविच्छिन्न रूपसे चलता रहा। इनके समयमें अवन्ती देशमें पड़नेवाले द्वादश वर्षीय दुर्भिक्षके कारण इस संघके कुछ आचार्योंने शिथिलाचारको अपनाकर आ. स्थूलभद्रकी आमन्य में इससे विलग एक स्वतन्त्र श्वेताम्बर संघकी स्थापना कर दी जिससे भगवानका एक अखण्ड दो शाखाओंमें विभाजित हो गया। आ. भद्रबाहु स्वामीकी परम्परामें दिगम्बर मूल संघ श्रुतज्ञानियोंके अस्तित्वकी अपेक्षा वी. नि. 683 तक बना रहा, परन्तु संघ व्यवस्थाकी अपेक्षासे इसकी सत्ता आ. अर्हद्वली (वी.नि. 565-593) के कालमें समाप्त हो गई।

ऐतिहासिक उल्लेखके अनुसार मलसंघका यह विघटन वी. नि. 575 में उस समय हुआ जबकि पंचवर्षीय युग प्रतिक्रमणके अवसरपर आ. अर्हद्वलिने यत्र-तत्र बिखरे हुए आचार्यों तथा यतियोंको संगठित करनेके लिये दक्षिण देशस्थ महिमा नगर (जिला सतारा) में एक महान यति सम्मेलन आयोजित किया जिसमें 100-100 योजनसे आकर यतिजन सम्मिलित हुए। उस अवसर पर यह एक अखण्ड संघ अनेक अवान्तर संघोंमें विभक्त होकर समाप्त हो गया।

अकलंक चारित्र में -

**विक्रमार्कशकाब्दीयशतसप्तप्रमाजुषि।**

**कालेऽकलंकयतिनो बौद्धैर्वादो महानभूत् ॥**

विक्रम संवत् 700 (ई. 643) में बौद्धों के साथ श्री अकलंक भट्ट का महान् शास्त्रार्थ हुआ।

( सिद्धिविनिश्चय प्रस्तावना 5/पं.महेंद्रकुमार) - लघुहव्व नृपति के ज्येष्ठ पुत्र प्रसिद्ध आचार्य। आपने राजा हिम-शीतल की सभा में एक बौद्ध साधु को परास्त किया था, जिसकी ओर से तारा देवी शास्त्रार्थ किया करती थी। अकलंक देव आपका नाम था और भट्ट आपका पद था। आपके शिष्य का नाम महीदेव भट्टारक था। जैन न्याय के युग संस्थापक आचार्य। इन्होंने शास्त्रार्थ करके बौद्धों द्वारा घट में स्थापित माया देवी को परास्त किया था। आचार्य जिनसेन ने इनका नामोल्लेख आचार्य देवन्दी के पश्चात् तथा आचार्य शुभचंद्र ने आचार्य पूज्यपाद के पश्चात् किया है।

**महापुराण 1.53, पांडवपुराण 1.17**

**आचार्य समन्तभद्र का शास्त्रार्थ -** प्रतिभाशाली आचार्यों, समर्थ विद्वानों एवं पूज्य महात्माओं में आपका स्थान बहुत ऊँचा है। आप समन्तांतभद्र थे - बाहर भीतर सब ओर से भद्र रूप थे आप बहुत

बड़े योगी, त्यागी, तपस्वी एवं तत्त्वज्ञानी थे। आप जैन धर्म एवं सिद्धांतों के मर्मज्ञ होने के साथ ही साथ तर्क, व्याकरण, छन्द, अलंकार और काव्यकोषादि ग्रन्थों में पूरी तरह निष्णात थे। आपको 'स्वामी' पद से विशेष तौर पर विभूषित किया गया है। आप असन्दिग्ध रूप से विक्रम की दूसरी-तीसरी शताब्दी के महान् विद्वान् थे।

पितृकुल की तरह समन्तभद्रस्वामी के गुरुकुल का भी कोई स्पष्ट लेख नहीं मिलता है, और न ही आपके दीक्षा गुरु के नाम का ही पता चल पाया है। आप मूलसंघ के प्रधान आचार्य थे। श्रवणबेलगोल के कुछ शिलालेखों से इतना पता चलता है कि आप श्री भद्रबाहु श्रुतकेवली, उनके शिष्य चन्द्रगुप्तमुनि के वंशज पद्मनन्दि अपर नाम कोन्दकुन्द मुनिराज उनके वंशज उमास्वाति की वंशपरम्परा में हुए थे।

(शिलालेख नं. ४०)

बड़े ही उत्साह के साथ मुनिधर्म का पालन करते हुए वे जब 'मणुवकहल्ली' ग्राम में धर्म ध्यान सहित मुनि जीवन व्यतीत कर रहे थे, उस समय असाता वेदनीय कर्म के प्रबल उदय से आपको 'भस्मक' नाम का रोग हो गया था। मुनिचर्या में इस रोग का शमन होना असंभव जानकर आप अपने गुरु के पास पहुँचे और उनसे रोग का हाल कहा तथा सल्लेखना का समय नहीं आया है और आप द्वारा वीरशासन कार्य के उद्धार की आशा है। अतः जहाँ पर जिस वेष में रहकर रोगशमन के योग्य तृप्ति भोजन प्राप्त हो वहाँ जाकर उसी वेष को धारण कर लो। रोग उपशान्त होने पर फिर से जैनदीक्षा धारण करके सब कार्यों को सम्भाल लेना। गुरु की आज्ञा लेकर आपने दिगम्बर वेष का त्याग किया। आप वहाँ से चलकर काँची पहुँचे और वहाँ के राजा के पास जाकर शिवभोग की विशाल अन्न राशि को शिवपिण्ड को खिला सकने की बात कही। पाषाण निर्मित शिवजी की पिण्डी साक्षात् भोग ग्रहण करे इससे बढ़कर राजा को और क्या चाहिए था। वहाँ के मन्दिर के व्यवस्थापक ने आपको मन्दिर जी में रहने की स्वीकृति दे दी। मन्दिर के दिवाड़ बन्द करके वे स्वयं विशाल अन्नराशि को खाने लगे और लोगों को बता देते थे कि शिवजी ने भोग को ग्रहण कर लिया है। शिव भोग से उनकी व्याधि धीरे-धीरे ठीक होने लगी और भोजन बचने लगा। अन्त में गुप्तचरों से पता लगा कि ये शिवभक्त नहीं हैं। इससे राजा बहुत क्रोधित हुआ और उसने इन्हें यथार्थता बताने को कहा। उस समय समन्तभद्र ने निम्न श्लोक में अपना परिचय दिया-

३ काञ्च्यां नगनाटकोऽहं मलमलिनतनुर्लाम्बुशो पाण्डुपिण्डः  
पुण्डोण्ड्रे शाक्यभिक्षुः दशपुरनगरे मिष्टभोजी परिव्राट्।  
वाराणस्यामभूर्वशशकरधवलः पाण्डुरांगस्तपस्वी  
राजन् यस्याऽस्ति शक्तिः स वदतु- पुरतो जैननिर्ग्रन्थवादी॥

काँची में मलिन वेषधारी दिगम्बर रहा, लाम्बुस नगर में भस्म रमाकर शरीर को श्वेत किया, पुण्डोण्ड्र में जाकर बौद्ध भिक्षु बना, दशपुर नगर में मिष्ट भोजन करने वाला सन्यासी बना, वाराणसी

में श्वेत वस्त्रधारी तपस्वी बना। राजन् आपके सामने दिगम्बर जैनवादी खड़ा है, जिसकी शक्ति हो मुझसे शास्त्रार्थ कर ले।

राजा ने शिवमूर्ति को नमस्कार करने का आग्रह किया। समन्तभद्र कवि थे। उन्होंने चौबीस तीर्थंकरों का स्तवन शुरु किया। जब वे आठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभु का स्तवन कर रहे थे, तब चन्द्रप्रभु भगवान की मूर्ति प्रकट हो गई। स्तवन पूर्ण हुआ। यह स्तवन स्वयंभूस्तोत्र के नाम से प्रसिद्ध है। यह कथा ब्रह्म नेमिदत्त कथाकोष के आधार पर है।

देश में जिस समय बौद्धादिकों का प्रबल आतंक छाया हुआ था और लोग उनके नैरात्म्यवाद, शून्यवाद, क्षणिकवादादि सिद्धान्तों से संतुष्ट थे, उस समय दक्षिण भारत में आपने उदय होकर जो अनेकान्त एवं स्याद्वाद का डंका बजाया वह बहुत ही महत्त्व का है एवं चिरस्मरणीय है। आपको जिनशासन का प्रणेता तक लिखा गया है। आपके परिचय के सम्बन्ध में निम्न पद्य है—

**आचार्योऽहं कविरहमहं वादिराट् पण्डितोऽहं  
दैवज्ञोऽहं भिषगहमहं मान्त्रिकस्तान्त्रिकोऽहम्।  
राजन्नस्यां जलधिवलया मेखलायामिलाया-  
माज्ञासिद्धः किमिति बहुना सिद्धसारस्वतोऽहम्॥**

मैं आचार्य हूँ, कवि हूँ, शास्त्रार्थियों में श्रेष्ठ हूँ, पण्डित हूँ, ज्योतिषि हूँ, वैद्य हूँ, मान्त्रिक हूँ, तान्त्रिक हूँ, हे राजन्! इस सम्पूर्ण पृथ्वी में मैं आज्ञासिद्ध हूँ। अधिक क्या कहूँ, सिद्ध सारस्वत हूँ।

शुभचन्द्राचार्य ने आपको 'भारत भूषण' लिखा है, आप बहुत ही उत्तमोत्तम गुणों के स्वामी थे। फिर भी कवित्व, गमकत्व, वादित्व और वाग्मित्व नामक चार गुण आप में असाधारण कोटि की योग्यता वाले थे जैसा कि आज से ग्यारह सौ वर्ष पहिले के विद्वान् जिनसेनाचार्य ने निम्न वाक्य से आदिपुराण में स्मरण किया है—

**कवीनां गमकांना च वादिनां वाग्मिनामपि।  
यशः समन्तभद्रीयं मूर्ध्नि चूड़ामणीयते॥**

यशोधर चरित के कर्ता महाकवि वादिराज सूरि ने आपको उत्कृष्ट काव्य माणिक्यों का रोहण (पर्वत) सूचित किया है। अलंकार चिन्तामणि में अजितसेनाचार्य ने आपको 'कविकुंजर' 'मुनिवन्द्य' और 'निजानन्द' लिखा है। वरांगचरित्र में श्री वर्धमान सूरि ने आपको महाकवीश्वर और सुतर्कशास्त्रामृत का सागर बताया है। ब्रह्मअजित ने हनुम्वरित्र में आपको भव्यरूप कुमुदों को प्रफुल्लित करने वाला चन्द्रमा लिखा है, तथा साथ में यह भी प्रकट किया है कि वे कुवादियों की वादरूपी खाज (खुजली) को मिटाने के लिए अद्वितीय महौषधि थे। इसके अलावा भी श्रवणबेलगोल के शिलालेखों में आपको 'वादीभवज्रांकुशसूक्तिजाल स्फुटरत्नदीप' वादिसिंह, अनेकान्त जयपताका आदि अनेक विशेषणों से स्मरण किया गया है।

आपका वाद क्षेत्र संकुचित नहीं था। आपने उसी देश में ही अपने वाद की विजय दुंदुभि नहीं बजाई, जिसमें वे उत्पन्न हुए थे बल्कि सारे भारतवर्ष को अपने वादका लीला स्थल बनाया था।

करहाटक नगर में पहुँचने पर वहाँ के राजा के द्वारा पूछे जाने पर आपने अपना पिछला परिचय इस प्रकार दिया है—

**पूर्व पटिलपुत्रमध्यनगरे भेरी मयाताडिता  
पश्चान्मालवसिन्धुठक्कविषयेकांचिपुरे वैदिशे।  
प्राइतोऽहं करहाटकं बहुभटं विद्योत्कटं वैदिशे।  
प्राप्तोऽहं करहाटकं बहुभटं विद्योत्कटं संकटं  
वादार्थी विचराम्यहं नरपते शार्दूल्विक्रीडितम्॥**

हे राजन्, सबसे पहिले मैंने पाटलिपुत्र नगर में शास्त्रार्थ के लिए भेरी बजवाई थी, फिर मालव, सिन्धु, ठक्क, कांची आदि स्थानों पर जाकर भेरी ताड़ित की। अब बड़े-बड़े दिग्गज विद्वानों से परिपूर्ण इस कर्हाटक नगर में आया हूँ। मैं तो शास्त्रार्थ की इच्छा रखता हुआ सिंह के समान घूमता फिरता हूँ। 'हिस्ट्री ऑफ कन्नडीज लिट्रेचर' के लेखक मिस्टर एडवर्ड पी. राईस ने समन्तभद्र को तेजपूर्ण प्रभावशाली वादी लिखा है और बताया है कि वे सारे भारतवर्ष में जैनधर्म का प्रचार करनेवाले महान् प्रचारक थे। उन्होंने वाद भेरी बजने का दस्तूर का पूरा लाभ उठाया और वे बड़ी शक्ति के साथ जैनधर्म के स्याद्वाद सिद्धान्त को पुष्ट करने में समर्थ हुए हैं।

❖ **अकलंक निकलंक देव द्वारा जैन धर्म की प्रभावना -** भारत वर्ष में एक मान्यखेट नाम का नगर था। उसके राजा थे शुभतुंग और उनके मंत्री का नाम पुरुषोत्तम था। पुरुषोत्तम की गृहिणी पद्मावती थी। उसके दो पुत्र हुए। उनके नाम थे अकलंक और निकलंक। वे दोनों भाई बड़े बुद्धिमान-गुणी थे।

एक दिन अष्टाह्निका पर्व की अष्टमी के दिन पुरुषोत्तम और उसकी गृहिणी बड़ी विभूति के साथ चित्रगुप्त मुनिराज की वन्दना करने गए। साथ में दोनों भाई भी गये। मुनिराज की वन्दना कर इनके माता-पिता ने आठ दिन के लिये ब्रह्मचर्य व्रत लिया और साथ ही विनोदवश अपने दोनों पुत्रों को भी उन्होंने ब्रह्मचर्य व्रत दे दिया।

कुछ दिनों के बाद पुरुषोत्तम ने अपने पुत्रों के ब्याह का आयोजन किया। यह देख दोनों भाइयों ने मिलकर पिता से कहा— पिता जी, इतना भारी आयोजन! इतना परिश्रम आप किस लिये कर रहे हैं? अपने पुत्रों की बात सुनकर पुरुषोत्तम ने कहा— यह सब आयोजन तुम्हारे ब्याह के लिये है। पिता का उत्तर सुनकर दोनों भाइयों ने फिर कहा— पिता जी अब हमारा ब्याह कैसा? आपने तो हमें ब्रह्मचर्य व्रत दे दिया था न? पिता ने कहा नहीं, वह तो केवल विनोद से दिया गया था। उन बुद्धिमान् भाइयों ने कहा— पिता जी, धर्म और व्रत में विनोद कैसा? यह हमारी समझ में नहीं आया। अच्छा आपने विनोद ही से दिया सही, तो अब उसके पालन करने में भी हमें लज्जा कैसी? पुरुषोत्तम ने फिर कहा— अस्तु! जैसा तुम कहते हो वही सही, पर तब तो केवल आठ ही दिन के लिये ब्रह्मचर्य व्रत दिया था न? दोनों भाइयों ने कहा— पिता जी, हमें आठ दिन के लिये ब्रह्मचर्य व्रत दिया गया था, इसका न तो आपने हमसे स्पष्ट शब्दों में कहा था और न ही आचार्य महाराज ने।

तब हम कैसे समझें कि वह व्रत आठ ही दिन के लिये था। इसलिये हम तो अब उसका आजन्म पालन करेंगे, ऐसी हमारी दृढ़ प्रतिज्ञा है। हम अब विवाह नहीं करेंगे। यह कहकर दोनों भाइयों ने घर का सब कारोबार छोड़कर और अपना चित्त शास्त्राभ्यास की ओर लगाया।

थोड़े ही दिनों में ये अच्छे विद्वान् बन गये। इस समय बौद्धधर्म का बहुत जोर था। इसलिये इन्हें उसके तत्व जानने की इच्छा हुई। उस समय मान्यखेट में ऐसा कोई बौद्ध विद्वान् नहीं था, जिससे ये बौद्धधर्म का अभ्यास करते। इसलिये ये एक अज्ञ विद्यार्थी का वेश बनाकर महाबोधि नामक स्थान बौद्धधर्माचार्य के पास गये। आचार्य ने इनकी अच्छी तरह परीक्षा ली कि कहीं ये छली तो नहीं हैं, और जब उन्हें इनकी ओर से विश्वास हो गया तब वे और शिष्यों के साथ-साथ इन्हें भी पढ़ाने लगे। ये भी अन्तरंग में तो पक्के जिनधर्मी और बाहिर एक महामूर्ख बनकर स्वर व्यंजन सीखने लगे। निरन्तर बौद्धधर्म सुनते रहने से अकलंक देव की बुद्धि बड़ी विलक्षण हो गयी उन्हें एक ही बार के सुनने से कठिन से कठिन बात भी याद हो जाने लगी और निकलंक को दो बार सुनने से। अर्थात् अकलंक एक पाठी और निकलंक दो पाठी हो गये। इस प्रकार वहाँ रहते दोनों भाइयों को बहुत समय बीत गया।

एक दिन बौद्धगुरु अपने शिष्यों को पढ़ा रहे थे। उस समय प्रकरण था जैनधर्म के सप्तभंगी सिद्धान्त का। वहाँ कोई ऐसा अशुद्ध पाठ आ गया जो बौद्धगुरु की समझ में न आया, तब वे अपने व्याख्यान को वहीं समाप्त कर कुछ समय के लिये बाहर चले आये। अकलंक बुद्धिमान् थे, वे बौद्धगुरु के भाव समझ गये, इसलिये उन्होंने बड़ी बुद्धिमानी के साथ उस पाठ को शुद्ध कर दिया और उसकी खबर किसी को न होने दी। इतने में पीछे बौद्धगुरु आये। उन्होंने अपना व्याख्यान पुनः आरम्भ किया। जो पाठ अशुद्ध था, वह शुद्ध देखते ही उनकी समझ में आ गया। यह देख उन्हें सन्देह हुआ कि अवश्य इस जगह कोई जिनधर्मरूप समुद्र को बढ़ाने वाला चन्द्रमा है और वह बौद्ध वेष धारणकर बौद्धशास्त्र का अभ्यास कर रहा है उसका जल्दी ही पता लगाकर उसे मृत्यु दंड देना चाहिये।

इस विचार के साथ ही बौद्धगुरु ने सब विद्यार्थियों को शपथ, प्रतिज्ञा आदि देकर पूछा, पर जैनधर्मी का पता उन्हें नहीं लगा। इसके बाद उन्होंने जिन प्रतिमा मंगवाकर उसे लाँघ जाने के लिये सबको कहा। सब विद्यार्थी तो लाँघ गये, अब अकलंक की बारी आई, उन्होंने अपने कपड़े में से एक सूत का सूक्ष्म धागा निकालकर उसे प्रतिमा पर डाल दिया और उसे परिग्रही समझकर वे झट से लाँघ गये। यह कार्य इतनी जल्दी किया गया कि किसी की समझ में न आया। बौद्ध गुरु इस युक्ति में भी जब कृतकार्य नहीं हुए तब उन्होंने एक और नई युक्ति की। उन्होंने बहुत से काँसों के बर्तन इकट्ठे करवाये और उन्हें एक बड़ी बोरी में भरकर वह बहुत गुप्त रीति से विद्यार्थियों के सोने की जगह के पास रखवा दी और विद्यार्थियों की देख रेख के लिये अपना एक-एक गुप्तचर रख दिया। आधी रात का समय था सब विद्यार्थी नींद में थे। किसी को कुछ मालूम न था कि हमारे लिये क्या-क्या षड्यन्त्र रचे जा रहे हैं। अचानक भयंकर कोलाहल हुआ, सब विद्यार्थी उस भयंकर आवाज से कांप

उठे। वे अपना जीवन बहुत थोड़े समय के लिये समझकर अपने परमात्मा का स्मरण करने लगे। अकलंक और निकलंक भी पंच नमस्कार मंत्र का ध्यान करने लग गये। पास ही बौद्धगुरु का गुप्तचर खड़ा हुआ था। वह उन्हें बुद्ध भगवान् का स्मरण करने की जगह जिन भगवान् स्मरण करते देखकर उन दोनों को बौद्धगुरु के पास ले गया और गुरु से उसने प्रार्थना की। प्रभो ! आज्ञा कीजिये कि इन दोनों धूर्तों का क्या किया जाये? ये ही जैनी हैं। सुनकर वह बौद्धगुरु बोला— इस समय रात थोड़ी बीती है, इसलिये इन्हें ले जाकर कारागृह में बन्द कर दो, जब प्रातः काल हो जाये तब इन्हें मार डालना। गुप्तचर ने दोनों भाइयों को ले जाकर कारागृह में बंद कर दिया।

जब रात बीत चुकी और बौद्धगुरु को आज्ञानुसार उन दोनों भाइयों के मारने का समय आया तब उन्हें पकड़ लाने के लिये पहरेदार गये, पर वे कारागृह में जाकर देखते हैं तो वहाँ उनका पता नहीं। वे जेल से भाग गए थे। उन्हें उनके कहीं आस-पास छुपे होने का सन्देह हुआ। उन्होंने आस-पास के वन, जंगल, खंडहर, बावड़ी, कुएँ, पहाड़ गुफायें आदि सब एक-एक करके ढूँढ़ डाले, पर उनका कहीं पता न चला। फिर भी वह उनका पीछा करते रहे। निकलंक ने दूर तक देखा तो उसे आकाश में धूल उठती हुई दिखाई दी। उसने बड़े भाई से कहा— भैया ! हम लोग जितना कुछ करते हैं, वह सब निष्फल जाता है। खेद है परम पवित्र जिनशासन की हम लोग कुछ भी सेवा न कर सके। भैया ! देखो वे लोग हमें मारने के लिये पीछा किये चले आ रहे हैं। अब रक्षा होना असंभव है। हां मुझे एक उपाय सूझ पड़ा है उसे आप करेंगे तो जैनधर्म का बड़ा उपकार होगा। आप बुद्धिमान हैं, एक पाठी हैं, आपके द्वारा जैनधर्म का खूब प्रकाश होगा। देखिये वह सरोवर है, उसमें बहुत से कमल हैं, आप जल्दी जाइये और तालाब के कमलों में अपने आप को छुपा लीजिये। जाइये, जल्दी कीजिये शत्रु पास आ रहे हैं। आप मेरी चिन्ता न कीजिये। मैं भी जहाँ होगा, जीवन की रक्षा करूंगा। और यदि मुझे अपना जीवन दे देना भी पड़े तो मुझे उसकी कुछ परवाह नहीं, और आप जीवित रहकर पवित्र जिन-शासन की भरपूर सेवा करना। आप जाइये, मैं भी अब यहाँ से भागता हूँ।

अकलंक की आँखों से आँसुओं की धार बह चली। उनका गला भ्रातृ-प्रेम से भर आया। वे भाई से एक अक्षर भी न कह पाये कि निकलंक वहाँ से भाग गया। लाचार होकर अकलंक को अपने जीवन की नहीं, पवित्र जिन शासन की रक्षा के लिये कमलों में छुपना पड़ा।

निकलंक भागा जा रहा था, रास्ते में उसे एक धोबी मिला, धोबी ने आकाश में धूल की घटा छाई हुई देखकर निकलंक से पूछा, यह क्या हो रहा है? और तुम क्यों भागे जा रहे हो? निकलंक ने कहा- पीछे शत्रुओं की सेना आ रही है, इसीलिये मैं भागा जा रहा हूँ। ऐसा सुनते ही धोबी भी कपड़े बगैर सब वैसे ही छोड़कर निकलंक के साथ भाग खड़ा हुआ। वे दोनों भागते रहे। सिपाहियों ने उन्हें धर पकड़ा और तलवार से निकलंक और धोबी (अकलंक समझ कर) दोनों का सिर काट दिया।

**“जिनके हृदय में जीव मात्र को सुख पहुँचाने वाले जिनधर्म का लेश भी नहीं है, उन्हें दूसरों पर दया आ भी कैसे सकती है ?”**

शत्रु अपना कामकर वापिस लौटे और इधर अकलंक अपने को निर्विघ्न समझ सरोवर से निकले और निडर होकर आगे बढ़े। वहाँ से चलते-चलते वे कुछ दिनों बाद कलिंग देशान्तर्गत रत्नसंचयपुर नामक शहर में पहुँचे। उस समय रत्नसंचयपुर के राजा हिमशीतल थे। उनकी रानी का नाम मदनसुन्दरी था, वह जिन भगवान् की बड़ी भक्त थी।

राजा हिमशीतल की रानी ने अष्टाह्निक पर्व में रथोत्सव का आयोजन करना चाहा था। वहाँ संघश्री नामक बौद्धों का प्रधान रहता था। उसे महारानी का कार्य सहन नहीं हुआ। उसने महाराज से कहकर रथयात्रोत्सव अटका दिया और साथ ही वहाँ जिनधर्म का प्रचार न देखकर शास्त्रार्थ के लिये घोषणा भी करवा दी। महाराज ने अपनी महारानी से कहा—प्रिये, जब तक कोई जैन विद्वान् बौद्धगुरु के साथ शास्त्रार्थ करके जिनधर्म का प्रभाव न फैलावेगा तब तक तुम्हारा उत्सव होना कठिन है। महारानी कहती है अब तो दिगम्बर गुरु की ही शरण है। हे स्वामी! मैं जिनमंदिर में जाती हूँ। वहाँ मुनियों को नमस्कार कर बोली प्रभो, महाराज का कहना है कि जब तक कोई जैनधर्मी महापुरुष बौद्धगुरु संघश्री को शास्त्रार्थ में पराजित नहीं कर देगा हमारा जैनरथ नहीं निकल सकता है और न ही हम महामहोत्सव मना सकते हैं। हे गुरुदेव! अब आप ही बताइए कि ऐसा कौन सा विद्वान है जो उन्हें शास्त्रार्थ में पराजित कर सके। मुनिवर कहते हैं— हे कल्याणि! मेरी समझ में यहाँ इस समय बौद्धगुरु से शास्त्रार्थ करने के लिए तो कोई विद्वान नहीं है। हाँ, मान्यखेट नगर में ऐसे विद्वान अवश्य हैं। उन्हें बुलवाने का आप प्रयास करें तो सफलता प्राप्त हो सकती है। प्रभो! भला इससे क्या सिद्धि हो सकती है? जान पड़ता है कि आप लोग इस विपत्ति का तत्काल प्रतीकार नहीं कर सकते हैं। हे जिनेन्द्रदेव! क्या अब जैनधर्म का पतन कराना ही आपको इष्ट है और जब मेरे पवित्र जैनधर्म की यह दुर्दशा होगी तो मैं जीकर क्या करूँगी? हे त्रिलोकीनाथ! जब तक संघश्री का अभिमान चूर-चूर नहीं हो जाता और मेरा रथोत्सव ठाठ-बाट के साथ नहीं निकल जाता तब तक मेरा चतुराहार का त्याग है। मैं जैनधर्म की अवमानना नहीं देख सकती। ऐसी दृढ़ प्रतिज्ञा कर रानी कायोत्सर्ग मुद्रा में बैठकर णमोकार मंत्र का स्मरण करने लगीं।

**“भव्यजीवों को जिनभक्ति का फल अवश्य मिलता है।”**

कुछ समय बाद प्रसेनजित् नामक राजकीय पुरुष आकर निवेदन करके बोले महारानी की जय हो! महारानी, प्रसन्नता की बात है कि पूर्व दिशा की ओर बगीचे में अशोकवृक्ष के नीचे अपने बहुत से शिष्यों के साथ आचार्य श्री अकलंकदेव विराजमान हुए हैं। इतना सुनकर प्रसन्न मन से रानी अपनी सखियों को साथ लेकर अर्घ आदि के साथ वहाँ पहुँचती हैं और भक्तिपूर्वक उन्हें प्रणाम करती हैं, पुनः उनकी पूजन कर उनके चरणों के निकट बैठ जाती हैं। तब अकलंकदेव आशीर्वाद देकर पूछते हैं देवी! आप सकुशल तो हैं और राज्य में सब सकुशल तो है। रानी अविरल अश्रुधारा बहाते हुए मौन सी हो जाती है तब अकलंकदेव पूछते हैं— हे कल्याणी! राजा हिमशीतल की प्रजा को आज इतना सुख मिल रहा है फिर उनकी पट्टरानी होकर आपकी आँखों से ऐसी अविरल अश्रुधारा क्यों! बोलो! क्या बात है? धैर्य धारण करो और बात बताओ। महारानी कहती है— प्रभो! राज्य में सब सकुशल है

परन्तु इस समय जिनधर्म का घोर अपमान हो रहा है। इसका मुझे बहुत कष्ट है। हे गुरुवर ! बौद्ध के गुरु संघश्री ने मेरा रथोत्सव रुकवा दिया है और घोषणा कर दी है कि यदि कोई जैन विद्वान् उन्हें शास्त्रार्थ में पराजित कर देगा तभी जैनरथ निकलेगा अन्यथा नहीं। परम पूज्य जिनधर्म का ऐसा अपमान देख मैंने चतुराहार त्यागकर जिनधर्म की शरण ली है। हे भगवन् ! अब जैनधर्म की रक्षा आपके हाथों में है। अकलंकदेव कहते हैं- अब चिन्ता मत करो। वह समय निकट ही है जब तुम बौद्ध गुरु की पराजय देखोगी। तुम संघश्री के शास्त्रार्थ की चुनौती स्वीकार करो। महारानी कहती है- प्रभो ! अब आप शहर के मंदिर में पधारें। (अकलंकदेव अपने शिष्यों के साथ शहर के मंदिर में ठहर जाते हैं। संघश्री के पास शास्त्रार्थ की चुनौती का पत्र पहुंचता है। उसकी लेखन शैली देखकर ही वह क्षुभित हो जाते हैं और आखिरकार शास्त्रार्थ के लिए तैयार हो ही जाते हैं।)

राजा हिमशीतल की सभा खचाखच भरी है। एक ओर श्री अकलंकदेव ससंघ विराजमान हैं दूसरी ओर बौद्ध धर्माचार्य संघश्री ससंघ विराजमान हैं। दोनों के मध्य शास्त्रार्थ प्रारंभ होता है और शास्त्रार्थ होते-होते छह महीना बीत जाते हैं। इसके पश्चात् अकलंकदेव शास्त्रार्थ में बौद्ध गुरु को पराजित कर देते हैं। अकलंकदेव के इस विजय और जिन-धर्म की प्रभावना से मदनसुन्दरी और सर्वसाधारण को बड़ा आनन्द हुआ।

अकलंकदेव के प्रभाव से जिनशासन का उपद्रव टला देखकर महारानी मदनसुन्दरी ने पहले से भी कई गुणे उत्साह से रथ निकलवाया। रथ बड़ी सुन्दरता के साथ सजाया गया था। उसकी शोभा देखते ही बन पड़ती थी।

इस प्रकार अकलंक देव ने जैन धर्म की रक्षा की और जैन धर्म का प्रचार प्रसार किया। जिस प्रकार अकलंकदेव ने सम्यग्ज्ञान की प्रभावना की, उसका महत्व सर्व साधारण लोगों के हृदय पर अंकित कर दिया उसी प्रकार भव्य पुरुषों को भी जिनधर्म की प्रभावना करनी चाहिए और जैनधर्म के प्रति उनका जो कर्तव्य है उसे पूरा करना चाहिए।

❖ **आचार्य सिद्धसेन-** इस नाम के तीन आचार्य प्राप्त होते हैं- सिद्धसेन दिवाकर, सिद्धसेन गणी और सिद्धसेन।

1. सिद्धसेन दिवाकर दिगंबर तथा श्वेतांबर दोनों आम्नायों में प्रसिद्ध हैं। कृतियें- सन्मति सूत्र, कल्याण मंदिर स्तोत्र और कुछ द्वात्रिंशिकायें। समय- लगभग वि.625।
2. सिद्धसेन गणी यद्यपि श्वेतांबर हैं परन्तु किसी कारणवश इन्हें क्योंकि दिगंबर संघ का संसर्ग प्राप्त हो गया था इसलिए कुछ दिगंबर संस्कार भी इनमें पाए जाते हैं। कृतियें- तत्त्वार्थाधिगम भाष्य वृत्ति, आचारांग सूत्र वृत्ति, न्यायावतार, द्वात्रिंशिकायें। समय- वि.श.8-9।
3. पुन्नाट संघ की गुर्वावली के अनुसार अभयसेन प्रथम के शिष्य और अभयसेन द्वितीय के गुरु।

ये संभवतः उज्जयिनी के वासी थे। जैन साहित्य में आचार्य सिद्धसेन दिवाकर का काल पाँचवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध और छठी शताब्दी ई. का पूर्वार्द्ध माना जाता है। इन्होंने न्यायावतार,

सम्मति तर्कसूत्र, तत्वानुसारिणी, तत्त्वार्थटीका, कल्याणमंदिर, स्रोत, द्वात्रिंशिकास्तोत्र आदि ग्रंथों की रचना की।

जैनियों के एक आख्यान के अनुसार, इन्होंने अपनी प्रार्थना के प्रभाव से एक बार उज्जयिनी के महाकाल के मंदिर में शिवजी के लिंग को छिन्न-भिन्न कर अपने कल्याणमंदिर स्तोत्र का पाठ करके उसी स्थान पर जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ की मूर्ति उत्पन्न कर दी थी।

**सिद्धसेन दिवाकरसूरी की एक कहानी- (श्वेताम्बर आम्यनाथ के अनुसार)**

उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के दरबार के अत्यंत विद्वान विद्वान सिद्धसेन को अनेक बहुमुखी विद्वानों से हर जगह शास्त्रार्थ और शास्त्रार्थ में अपराजित होने का अभिमान और अभिमान था। सिद्धसेन कहा करते थे कि जो भी व्यक्ति उन्हें ऐसे शास्त्रार्थ में हरा देगा, वे उसके आजीवन शिष्य बन जायेंगे। इसी बीच उन्हें एक प्रतिष्ठित तर्कशास्त्री वृद्धवादीसूरिजी के बारे में सुनने को मिला। उन्होंने तर्कशास्त्री को बहस के लिए चुनौती दी। वृद्धवादीसूरिजी के विरुद्ध इस शास्त्रार्थ में सिद्धसेन की हार हुई और शर्त के अनुसार उन्होंने वृद्धवादीजी से दीक्षा स्वीकार कर ली और उनका नाम मुनि कुमुदचंद्र रखा गया।

समय के साथ, उन्हें आचार्य (एक भिक्षुक समूह का मुखिया) के रूप में नामित किया गया और उनके मूल नाम के आधार पर उनका नाम बदलकर सिद्धसेंसुरी कर दिया गया। उसके पास मंत्रों के माध्यम से सोना पैदा करने और सैनिकों की एक सेना खड़ी करने की चमत्कारी शक्ति थी; इसलिए उन्होंने करमार गांव के राजा देवपाल को सहायता प्रदान की और इस तरह राजा विजयवर्मा की आक्रामकता को विफल कर दिया। इससे उन्हें लोगों और राजा दोनों से बहुत प्रशंसा मिली और उन्हें दिवाकर कहा गया - जो अंधेरे में प्रकाश लाता है। राजा ने उन्हें कभी भी पैदल जाने की अनुमति नहीं दी और वे हमेशा इस बात पर जोर देते थे कि उन्हें हाथी की सवारी करनी चाहिए या पालकी का उपयोग करना चाहिए।

उनके आध्यात्मिक गुरु आचार्य वृद्धवादीसूरिजी को इस बारे में पता चला और उन्होंने सोचा कि यदि अन्य भिक्षु सिद्धसेन दिवाकर के उदाहरण का अनुसरण करेंगे, तो इससे संयम और त्याग का महत्व कम हो जाएगा। इसके अलावा यदि भिक्षु अधिग्रहणवादी हो जाएंगे, तो इससे कई बुराइयों को जन्म मिलेगा। इसलिए अपने शिष्य को सत्य का एहसास कराने के उद्देश्य से, वृद्धवादीसूरिजी अपनी वृद्धावस्था के बावजूद करमार गांव आए। उन्होंने देखा कि सिद्धसेंसुरी पालकी पर चढ़ रहे थे और लोगों की भीड़ उनकी उपलब्धियों की सराहना करते हुए और उनका पक्ष लेने के लिए भगदड़ मचाते हुए उनके पीछे चल रही थी।

वृद्ध वृद्धवादीसूरिजी ने भी इस पालकी को सहारा दिया लेकिन अधिक उम्र होने के कारण उन्होंने अपना संतुलन खो दिया। जिसके बाद दिवाकरसूरी ने संस्कृत में एक वाक्य कहा। जो पालकी उठा रहे थे, ने वाक्य में मौखिक भ्रांति की ओर इशारा किया। यह सुनकर कि पालकी उठाने वालों में कोई ऐसा था जो उनके जैसे विद्वान की भाषा में दोष निकाल सकता था, दिवाकरसूरी पालकी से नीचे आये और पाया कि यह स्वयं गुरुदेव थे! उसे भयंकर पश्चाताप हुआ और उसने गुरु से क्षमा माँगी।

एक बार दिवाकरसूरी ने देखा कि कुछ विद्वान प्राकृत भाषा में लिखे जैन धर्म के सूत्रों (विहित ग्रंथों) का उपहास कर रहे हैं, इसलिए उन्होंने उनका संस्कृत में अनुवाद करने का मन बनाया। उन्होंने इसके लिए अपने गुरु से अनुमति मांगी लेकिन गुरु ने उन्हें सलाह दी कि वह तीर्थंकरों (फोर्ड के निर्माता) की भाषा, अर्थात् प्राकृत भाषा में दोष न निकालें क्योंकि ऐसा करने से यह तीर्थंकरों का अनादर है। सिद्धसेनसूरी को अपनी गलती का एहसास हुआ और पश्चाताप करने के लिए उन्होंने एकांत स्थान पर 12 वर्षों तक तपस्या की।

12 वर्ष बीत जाने के बाद एक अजीब घटना घटी। शिव मंदिर में सो रहे एक योगी को राजकर्मचारी कोड़े मार रहे थे लेकिन ऐसा हुआ कि कोड़े के निशान महल की रानियों के शरीर पर दिखाई दिए। इस चमत्कार से बहुत आश्चर्यचकित होकर, राजा विक्रमादित्य शिव मंदिर में आए और उनके आगमन पर योगी खड़े हुए और कल्याण मंदिर स्तोत्र की रचना की, जिसका प्रभाव इतना शक्तिशाली था कि अवन्ती पार्श्वनाथ की एक मूर्ति स्वयं नीचे से प्रकट हुई शिवलिंग। राजा विक्रमादित्य ने सिद्धसेन दिवाकर को पहचान लिया। बत्रिस-बत्रिसि के अलावा उनकी स्थायी प्रसिद्धि उनकी अन्य पुस्तकों जैसे न्यायावतार, सन्मतितर्क आदि पर निर्भर करती है। उनके न्यायावतार ने न्यायशास्त्र (तर्क का विज्ञान) की नींव रखी। उनकी पुस्तकों में पहली बार नयवाद (आंशिक सत्य का सिद्धांत) का विस्तृत विश्लेषण सामने आया।

**आगम-संकलन हेतु वाचनाएँ- (श्वेताम्बर आम्यनाय के अनुसार)**

- ❖ श्रमण भगवान् महावीर के परिनिर्वाण के पश्चात् आगम-संकलन हेतु पांच वाचनाएँ हुई हैं।
- ❖ **प्रथम वाचना-** वीरनिर्वाण के १६० वर्ष पश्चात् पाटलिपुत्र में द्वादशवर्षीय भीषण दुष्काल पड़ने के कारण श्रमणसंघ छिन्न-भिन्न हो गया। अनेक बहुश्रुतधर श्रमण क्रूर काल के गाल में समा गये। अनेक अन्य विघ्न बाधाओं ने भी यथावस्थित सूत्र परावर्तन में बाधाएं उपस्थित की। आगम ज्ञान की कड़ियाँ-लड़ियाँ विश्रृंखलित हो गईं। दुर्भिक्ष समाप्त होने पर विशिष्ट आचार्य, जो उस समय विद्यमान थे, पाटलिपुत्र में एकत्रित हुए। ग्यारह अंगों का व्यवस्थित संकलन किया गया। बारहवें दृष्टिवाद के एकमात्र ज्ञाता भद्रबाहु स्वामी उस समय नेपाल में महाप्राणध्यान की साधना कर रहे थे। संघ की प्रार्थना से उन्होंने बारहवें अंग की वाचना देने की स्वीकृति दी। मुनि स्थूलभद्र ने दस पूर्व तक अर्थसहित वाचना ग्रहण की। ग्यारहवें पूर्व की वाचना चल रही थी तभी स्थूलभद्र मुनि ने सिंह का रूप बनाकर बहिनों को चमत्कार दिखलाया। जिसके कारण भद्रबाहु ने आगे वाचना देना बंद कर दिया। तत्पश्चात् संघ एवं स्थूलभद्र के अत्यधिक अनुनय-विनय करने पर भद्रबाहु ने मूलरूप से अन्तिम चार पूर्वों की वाचना दी, अर्थ की दृष्टि से नहीं। शाब्दिक दृष्टि से स्थूलभद्र चौदह पूर्वी हुए किन्तु अर्थ की दृष्टि से दसपूर्वी ही रहे।
- ❖ **द्वितीय वाचना-** आगम-संकलन का द्वितीय प्रयास ईस्वी पूर्व द्वितीय शताब्दी के मध्य में हुआ। सम्राट खारवेल जैनधर्म के परम उपासक थे। उनके सुप्रसिद्ध 'हाथीगुफा' अभिलेख से यह सिद्ध हो चुका है कि उन्होंने उड़ीसा के कुमारी पर्वत पर जैनमुनियों का एक संघ बुलाया

और मौर्यकाल में जो अंग विस्मृत हो गये थे, उनका पुनः उद्धार कराया था। हिमवंत थेरावली नामक संस्कृत प्राकृत मिश्रित पट्टावली में भी स्पष्ट उल्लेख है कि महाराजा खारवेल ने प्रवचन का उद्धार करवाया था।

❖ **तृतीय वाचना-** आगमों को संकलित करने का प्रयास वीरनिर्वाण ८२७ से ८४० के मध्य हुआ। उस समय द्वादशवर्षीय भयंकर दुष्काल से श्रमणों को भिक्षा मिलना कठिन हो गया था। श्रमणसंघ की स्थिति गंभीर हो गई थी। विशुद्ध आहार की अन्वेषणा-गवेषणा के लिए युवक मुनि दूर-दूर देशों की ओर चल पड़े। अनेक वृद्ध एवं बहुश्रुत मुनि आहार के अभाव में आयु पूर्ण कर गये। क्षुधा परीषह से संतप्त मुनि अध्ययन, अध्यापन, धारण और प्रत्यावर्तन कैसे करते ? सब कार्य अवरुद्ध हो गये। शनैः शनैः श्रुत का हास होने लगा। अतिशायी श्रुत नष्ट हुआ। अंग और उपांग साहित्य का भी अर्थ की दृष्टि से बहुत बड़ा भाग नष्ट हो गया। दुर्भिक्ष की समाप्ति पर श्रमणसंघ मथुरा में स्कन्दिलाचार्य के नेतृत्व में एकत्रित हुआ। जिन श्रमणों को जितना जितना अंश स्मरण था उसका अनुसंधान कर कालिक श्रुत और पूर्वगत श्रुत के कुछ अंश का संकलन हुआ। यह वाचना मथुरा में सम्पन्न होने के कारण माथुरी वाचना के रूप में विश्रुत हुई। उस संकलित श्रुत के अर्थ की अनुशिष्टि आचार्य स्कन्दिल ने दी थी अतः उस अनुयोग को स्कन्दिली वाचना भी कहा जाने लगा।

नंदीसूत्र की चूर्णि और वृत्ति के अनुसार माना जाता है कि दुर्भिक्ष के कारण किंचिन्मात्र भी श्रुतज्ञान तो नष्ट नहीं हुआ किन्तु केवल आचार्य स्कन्दिल को छोड़कर शेष अनुयोगधर मुनि स्वर्गवासी हो चुके थे। एतदर्थ आचार्य स्कन्दिल ने पुनः अनुयोग का प्रवर्तन किया जिससे प्रस्तुत वाचना को माथुरी वाचना कहा गया और सम्पूर्ण अनुयोग स्कन्दिल संबंधी माना गया।

**चतुर्थ वाचना-** जिस समय उत्तर पूर्व और मध्यभारत में विचरण करने वाले श्रमणों का सम्मेलन मथुरा में हुआ था उसी समय दक्षिण और पश्चिम में विचरण करने वाले श्रमणों की एक वाचना (वीर निर्वाण सं. ८२७-८४०) वल्लभी (सौराष्ट्र) में आचार्य नागार्जुन की अध्यक्षता में हुई। किन्तु वहाँ जो श्रमण एकत्रित हुए थे उन्हें बहुत कुछ श्रुत विस्मृत हो चुका था। जो कुछ उनके स्मरण में था, उसे ही संकलित किया गया। यह वाचना वल्लभी वाचना या नागार्जुनीय वाचना के नाम से अभिहित है।

**पंचम वाचना-** वीरनिर्वाण की दसवीं शताब्दी ( ९८० या ९९ \* ई. सन् ४५४-४६६ ) में देवर्द्धिगणी श्रमाश्रमण की अध्यक्षता में पुनः श्रमणसंघ वल्लभी में एकत्रित हुआ। देवर्द्धिगणी ११ अंग और एक पूर्व से भी अधिक सूत्र के ज्ञाता थे। स्मृति की दुर्बलता, परावर्तन की न्यूनता, धृति का हास और परम्परा की व्यवच्छिन्निता आदि अनेक कारणों से श्रुत साहित्य का अधिकांश भाग नष्ट हो गया था। विस्मृत श्रुत को संकलित व संग्रहीत करने का प्रयास किया गया। देवर्द्धिगणी ने अपनी प्रखर प्रतिभा से उसको संकलित कर पुस्तकारुढ किया। पहले जो माथुरी और वल्लभी वाचनाएँ हुई थी, उन दोनों वाचनाओं का समन्वय कर उनमें एकरूपता लाने का प्रयास किया गया। जिन स्थलों पर मतभेद की अधिकता रही वहाँ माथुरी वाचना को

मूल में स्थान देकर वल्लभी वाचना के पाठों को पाठान्तर में स्थान दिया। यही कारण है कि आगमों के व्याख्याग्रन्थों में यत्र तत्र 'नागार्जुनीयास्तु पठन्ति' इस प्रकार निर्देश मिलता है।

आगमों को पुस्तकारुढ करते समय देवर्द्धिगणी ने कुछ मुख्य बातें ध्यान में रखी। आगमों में जहाँ-जहाँ समान पाठ आये हैं उनकी वहाँ पुनरावृत्ति न करते हुए उनके लिए विशेष ग्रन्थ या स्थल का निर्देश किया गया जैसे- 'जहा उववाइए, जहा पणवणाए'। एक ही आगम में एक बात अनेक बार आने पर जाव शब्द का प्रयोग करके उसका अन्तिम शब्द सूचित कर दिया है जैसे 'णागकुमारा जाव विहरंति तेणं कालेणं जाव परिसा णिग्गया'। इसके अतिरिक्त भगवान् महावीर के पश्चात् की कुछ मुख्य-मुख्य घटनाओं को भी आगमों में स्थान दिया। यह वाचना वल्लभी में होने के कारण 'वल्लभी वाचना' कही गई। इसके पश्चात् आगमों की फिर कोई सर्वमान्य वाचना नहीं हुई। वीरनिर्वाण की दसवीं शताब्दी के पश्चात् पूर्वज्ञान की परम्परा विच्छिन्न हो गई।

उक्त रीति से आगम-साहित्य का बहुतसा भाग लुप्त होने पर भी आगमों का कुछ मौलिक भाग आज भी सुरक्षित है।

## श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर

संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के आशीर्वाद एवं निर्यापक मुनिपुंगव श्री सुधासागरजी महाराज की परम प्रेरणा से श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर की स्थापना 1996 में सांगानेर जयपुर में जैन विद्या के प्रकाश के लिए एवं जैन विद्वानों के निर्माण के लिए हुई। मुनिश्री के वचन हैं -

भारतवर्ष में जितने भी तीर्थक्षेत्र मेरे आशीर्वाद के निमित्त से बने उनको एक तरफ रख दीजिए; उन सबसे बड़ा महातीर्थ है- श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर, जयपुर। सारे तीर्थ बने हैं, बनते आये हैं और बनते रहेंगे लेकिन यह संस्थान श्रमण संस्कृति का आगाज करने वाली चैतन्य संस्था है, चैतन्य तीर्थ है, महातीर्थ है।

(जिज्ञासा-समाधान, 17 अगस्त 2022, लाइव प्रसारण जिनवाणी चैनल)

यहाँ हम डॉ. शैलेश जैन बांसवाड़ा द्वारा श्रमण संस्कृति संस्थान के रजत गौरव पर लिखे गए लेख को यथावत् लिख रहे हैं, जिससे हमें श्रमण संस्कृति संस्थान के वैभव की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त हो सके।

### ● श्रमण संस्कृति संस्थान : रजत गौरव सुधा

नव/दस माह कोख में रखकर माँ ने मुझको पाला था ।

किन्तु जन्म देकर फिर मुझको भवसागर में डाला था ॥

फिर अन्तस्थ किया गुरुवर ने धर्म कोख में है पाला,

कैसे उनके गुण गाऊँ मैं, जिनने सब कुछ दे डाला ॥

श्री दि.जैन श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर-जयपुर, धर्म-संस्कृति-समाज के संरक्षण एवं संवर्धन का एक ऐसा ऐतिहासिक कालजयी अध्याय है, जिसके स्वर्णांकन किये बिना श्रमण-संस्कृति का इतिहास पूर्ण नहीं माना जा सकेगा। जिन आचार्य कुन्दकुन्द भगवान् ने 'णगगो वि मोक्खमग्गो, सेसा उम्मग्गया सव्वे' जैसी सिंहगर्जना करके साफ-साफ संदेश दिया हो कि दिगम्बरत्व की चर्चा और अर्चा किए बिना न तो आत्मा का कल्याण हो सकता है और न ही जिनशासन की प्रभावना; उन आचार्य कुन्दकुन्द भगवान् के जीवन्त रूप परम पूज्य निर्यापक श्रमण मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज की सत्प्रेरणा व शुभाशीष तले अनेक तीर्थ विकसित होकर अतिशय प्रसिद्धि को प्राप्त हुए हैं किन्तु श्रमण संस्कृति संस्थान रूपी ज्ञानतीर्थ को पूज्य श्री स्वयं उन सभी तीर्थों से बढ़कर मानते हैं और इस बात को वे प्रसंग आने पर उन्मुक्त कंठ से सहर्ष कहते भी हैं।

आचार्यों के सूत्रों को पढ़ने और याद करने के लिए ज्ञानावरणी कर्म का क्षयोपशम चाहिए लेकिन उन सूत्रों को चरितार्थ करने के लिए, उन सूत्रों के रहस्यों को उजागर करके धर्म और संस्कृति की रक्षा करने के लिए कठोर साधना, मृदु हृदय और निःस्वार्थ भावना अपेक्षित होती है। श्रावकाचार

पढ़ने वाला बालक भी रट लेता है 'न धर्मो धार्मिकैर्बिना' लेकिन आचार्य समंतभद्र के इस सूत्रगत रहस्य को समझना और तदनुरूप धर्मात्मा तैयार करना हर किसी के बस की बात नहीं है। आचार्य उमास्वामी जैसे दिग्गज आचार्य महाराज ने प्रथम सूत्र में ही 'सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः' लिखकर आने वाली श्रमण व साधुओं की पीढ़ियों को संदेश दे दिया था कि मार्ग बरकरार रहना चाहिए क्योंकि मंजिल तो देर-सबेर भी मिल सकती है। वात्सल्य अंग में प्रसिद्ध परम पूज्य मुनिवर श्री विष्णुकुमार महाराज के जीवन से यह भली-भांति सिद्ध होता है।

दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति का मूल आधार ही दिगम्बरत्व है। इसके अभाव में धर्म की कल्पना नहीं की जा सकती है, इसका सबूत यह है कि पंचम काल के अंत में जब तक कि मुनिराज रहेंगे, मोक्षमार्ग रहेगा तभी तक धर्म की स्थिति रहेगी, उसके बाद नहीं, इसीलिए 'न धर्मो धार्मिकैर्बिना'।

महापुरुष शायद इसीलिए महापुरुष कहे जाते हैं क्योंकि वे मार्ग में आने वाले कंटकों को साफ करने का महान कार्य भी किया करते हैं। अनंत जीव अपना कल्याण करके निर्वाण प्राप्त कर चुके हैं लेकिन उन सबके नाम कहाँ होते हैं? किन्तु महापुरुषों के नाम स्वर्णांकित रहते हैं। चौबीसवें तीर्थंकर के मोक्षगमन के पश्चात् कितने दिगम्बर साधु हुए पर समाज उन्हीं साधुओं को उपकारी के रूप में स्मरण करता है, जिन्होंने मार्ग की रक्षा की, जिन्होंने मार्ग में आगत विकृतियों के उन्मूलन में अपना योगदान दिया, कहते भी हैं- 'मंगलं कुन्दकुन्दार्यो'।

इस बात का संकेत तो युग के प्रारंभ में ही हो चुका था कि इस अवसर्पिणीकाल में मार्ग को विकृत करने वाले हमारे ही बीच के होंगे। जैसे कि प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के प्रपौत्र मारीचि ने किया। इसी प्रकार समय-समय पर तरह-तरह के लोगों द्वारा तरह-तरह की विकृतियाँ उत्पन्न हुई, इन्हीं विकृतियों के दुष्परिणाम स्वरूप ही आचार्य कुन्दकुन्द भगवन् ने डंके की चोट पर कहा 'णग्गो वि मोक्खमग्गो, सेसा उम्मग्गया सव्वे'। इस सूत्र को पढ़ना और उसकी व्याख्या करना बहुत आसान है; पर ये लिखना बड़ी हिम्मत का काम है; क्योंकि इससे बिना नग्नता के मुक्ति मानने वालों के कोप भाजन बनना पड़ सकता है, उनके दुर्वचनों का पात्र बनना पड़ सकता है। जैनदर्शन में सत्यार्थ के लिए विधि और निषेध दोनों ही कथन आचरणीय हैं। 'णग्गो वि मोक्खमग्गो, सेसा उम्मग्गया सव्वे' में आचार्य कुन्दकुन्द ने इस विधि और निषेध को एक साथ रखकर आगे आने वाले साधुओं के लिए प्रेरणा दी है कि मार्ग की रक्षा के लिए विधि के साथ निषेध कथन भी आवश्यक है।

श्री दि.जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर के सत्प्रेरक परमोपकारी पूज्य गुरुवर ने इन आचार्यों की वाणी को न मात्र पढ़ा है बल्कि उनको सामायिक ध्यान और चिंतन के माध्यम से जिया भी है। उन्होंने आचार्यों के सूत्रों में छिपे रहस्यों को आधार बनाकर धर्म और संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन के साथ ही उन स्वपरोपकारी महान साधुओं की परंपरा में स्वयं को स्थापित भी कर लिया है।

ऐसा नहीं था कि जयपुर जैसी धर्मपरायण नगरी में साधुओं का आवागमन न होता हो पर श्रमण संस्कृति की रक्षा का यह कार्य तो पूज्य विष्णुकुमार मुनिराज की तरह मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज के द्वारा ही होना था और हकीकत ये है भी कि श्रमण संस्कृति के संरक्षण के इस महान कार्य की सफलता का मूल आधार आप जैसे दूरदर्शी साधक की सत्प्रेरणा और मार्गदर्शन में ही निहित

था। घर-घर में एकांतवाद का प्रवेश हो रहा था। उसी धारा के विद्वान् थे, जो पाठशाला, शिविर, दशलक्षण पर्व पर प्रवचनों आदि से समाज को अपने एकांतिक सिद्धांतों से (कु) संस्कारित कर रहे थे। आश्चर्य इस बात का है कि आचार्य कुन्दकुन्द भगवान को सर्वस्व मानने वाले एक विशेष वर्ग की अनेक पीढ़ियों में भी 'पडिवज्जदु सामण्णं इच्छदि जदि दुक्खपरिमोक्खं' इस आदेश वाक्य का आचरण नहीं देखा गया है। उत्तम संयम धर्म के दिन भी संयम और संयमियों की उपेक्षा किस धर्मात्मा को सोचने को मजबूर नहीं करेगी? रत्नत्रय को बंध का कारण और अव्रती के भोगों को निर्जरा का कारण सुनकर जनता भी बिना व्रत के ही सरल मार्ग में अपना हित मान रही थी। एक ओर वे थे जिनके लिये सभी पिच्छी-कमण्डलु धारी अपूज्यता की श्रेणी में थे तो दूसरी ओर वे थे जिनके लिये सभी पिच्छी-कमण्डलु धारी पूज्यता की श्रेणी में थे।

यदि कोई ये सोचे कि मात्र किसी एकांत विचारधारा के विरुद्ध सांगानेर संस्थान खोलने की प्रेरणा देना ही मुनिश्री का एक मात्र उद्देश्य था तो उसे पूज्य श्री से प्रत्यक्ष रूप में अपने इस भ्रम का निराकरण कर लेना चाहिए। पूज्य मुनिश्री से मैंने एक बार जब यह प्रश्न किया तब उन्होंने बताया कि- “वस्तुतः एकांतवाद या गृहीत मिथ्यात्व आदि तो एक बाह्य निमित्त था और 'संस्थान' की स्थापना आदि ये बाहरी कार्य हैं, ये भी अत्यंत आवश्यक हैं, साथ ही मेरे अंतरंग में जिनशासन की प्रभावना के लिए मूल श्रमण संस्कृति संपोषक विद्वानों को तैयार करना लक्ष्य था और है तथा मेरी भावना है कि संस्थान में पढ़ने वाले प्रत्येक छात्र का ज्ञान केवलज्ञान का कारण बने, मोक्ष का कारण बने।”

आज हम जिस श्रमण संस्कृति संस्थान को बहु उद्देश्यीय रूप में देख रहे हैं, वह पूज्य गुरुदेव की अलौकिक दूरदर्शी सोच का ही सुपरिणाम है अन्यथा उस समय अन्य सभी लोगों ने तो मात्र एक छात्रावास/आवासीय विद्यालय की ही कल्पना की थी। नामकरण के समय पूज्य गुरुदेव ने यदि इसका नाम श्री दि.जैन श्रमण संस्कृति संस्थान रखने का मार्गदर्शन न दिया होता तो शायद यह भी अन्य स्थानों पर संचालित एक छात्रावास अथवा विद्यालय के जैसा ही रह जाता। गुरुदेव तो वास्तव में सूक्ष्मदर्शी और दूरदर्शी हैं। आज इस संस्थान के अंतर्गत संत श्री सुधासागर बालिका महाविद्यालय एवं छात्रावास, भारतवर्षीय पाठशाला बोर्ड, द्वादशवर्षीय स्वाध्याय पाठ्यक्रम, ग्रन्थ प्रकाशन, केन्द्रीय विद्यालय समिति, खनियाधानां, बरुआसागर, अहार जी एवं साढूमल की संस्थाओं का संचालन आदि अनेक कार्य होने से यह बहुउद्देश्यीय रूप में कार्य कर रहा है।

समाज में स्थिति सदा से विचित्र रही है क्योंकि बातों पर जी.एस.टी. नहीं लगता है। हमारे संस्थान के लिए भी प्रारंभ में बहुविध बातें हुई, यहाँ तक बातें हुई कि इन पंडितों का क्या होगा? इनका भविष्य क्या होगा? मुझे याद है कि इन्हीं सब नकारात्मक बातों के बीच टोक चातुर्मास-2010 में पूज्य श्री ने डंके की चोट पर कहा था कि- “बहुत जल्दी सरकार को इन छात्रों/विद्वानों की आवश्यकता पड़ेगी। ये पढ़ाई इनको वरदान सिद्ध होगी और जो आज इस धर्म के साथ संस्कृत की पढ़ाई के बारे में बिना सोच-विचार करे बकबास कर रहे हैं, वे इस संस्थान के छात्रों की सफलता देखते रह जायेंगे।” हममें से जो महाराज की वचनसिद्धि से परिचित थे, उनके लिए भविष्य की घोषणा थी और जो अपरिचित थे, उनके लिए महाराज के 'सिद्धवाक्' विशेषण से परिचित होने का

अपूर्व अवसर। एक साल ही पूरा हुआ होगा कि मध्यप्रदेश सरकार में सांगानेर के लगभग 100 स्नातक विद्वानों का चयन हो गया। चारों ओर हमारे संस्थान के निःश्रेयस और अभ्युदयपरक उद्देश्य की सार्थकता का साक्षात्कार होने लगा। इसी बीच मेरे जैसे व्यक्ति को तब भारी अचंभा हुआ, जब मैंने पूज्य श्री को सबसे पहले यह शुभ समाचार सुनाया। मुझे विश्वास ये था कि गुरुदेव इस समाचार को सुनकर अत्यधिक प्रसन्न होंगे लेकिन इस समाचार को सुनकर महाराज सामान्य स्थिति में रहे। जब मैंने उनसे पूछा कि आपको यह समाचार सुनकर प्रसन्नता नहीं हुई? तब उन्होंने एक उदाहरण दिया कि- 'जो सुन्दर मूर्ति जनता को बनने के बाद दिखती है, वह शिल्पी को पाषाण में ही दिख जाती है।' उसी समय मुझे गुरुदेव के वे वचन याद आ गये, जो उन्होंने टोंक के अधिवेशन में कहे थे। अब तक जो लोग हमारे संस्थान की पढ़ाई पर प्रश्न उठा रहे थे, वे अपने व अपनों के बच्चों के सांगानेर संस्थान में प्रवेश के लिए उपाय पूछने लगे।

पूज्य श्री का सिद्धांत है कि सौ समस्याओं को सामने रखने वाले से श्रेष्ठ एक समस्या का समाधान बताने वाला होता है। सभी वर्गों के कितने लोग हैं, जो वर्षों से मन्दिरों में अभिषेक करने वालों की कमी, स्वाध्याय करने वालों की घटती संख्या, तीर्थों की दुर्दशा, पाठशालाओं के संचालन जैसे अनेक गंभीर विषयों का रोना ही रोते रहते हैं लेकिन पूज्य श्री की ये मौलिक विशेषता है कि वे द्रव्य-क्षेत्र-कालादि के विचार पूर्वक रोना रोने की अपेक्षा स्वशक्ति प्रमाण कार्य करने में विश्वास रखते हैं और उनके विश्वास का सुफल ही ये ज्ञानोदय तीर्थक्षेत्र नारेली आदि तीर्थ हैं और श्रमण संस्कृति संस्थान-सांगानेर जैसा संस्थान है।

जैनविद्या के इतिहास का सिंहावलोकन करने पर जो दुखद पहलू हमारे सामने आते हैं, वे सामान्य लोगों को तो छोड़िए बड़े-बड़े साधुओं की आँखों को भी भिगाये बिना नहीं रह सकते हैं। कौन कल्पना कर सकता है कि आज जो ज्ञान श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान में सर्व सुविधाओं और अनुकूलताओं के साथ दिया जा रहा है, उसी ज्ञान को पाने के लिए अकलंक-निकलंक इन दो बालकों को मौत के कुएँ जैसे विधर्मियों के गुरुकुल में पढ़ने जाना पड़ा होगा? धन्य हैं, वे बालक और धन्य हैं उनके माता-पिता। इसी जिनवाणी की रक्षा के लिए एक भाई अपने सगे भाई का खून होते हुए अपनी आँखों से देखता है। ये कथा सब जानते हैं।

बीसवीं शताब्दी में फिर एक जैनदर्शन के ज्ञानपिपासु श्री गणेशप्रसाद जी वर्णी के साथ हृदय विदारक घटना घटती है कि वे जब एक जैन ग्रन्थ पढ़ने के लिए विद्वानों की नगरी काशी में जाते हैं और वहाँ जब जैनतर विद्वान् ये कहकर पढ़ाने से मना कर देते हैं कि ये तो नास्तिकों का ग्रन्थ है, तब वर्णी जी के मन में जो टीस लगी होगी, उसको हम और आप अनुभव कर सकते हैं। धन्य हैं वे वर्णी जी जिन्होंने जन्मतः जैन न होने के बावजूद भी जैनविद्या की उपासना करने व कराने के लिए कमर कस ली, धन्य हैं वे झम्मनलाल जैन कामां वाले और धन्य हैं उनका वो एक रुपया, जिसकी बदौलत 64 पोस्टकार्डों ने इतिहास रच दिया, और काशी नगरी में जैनविद्या के अध्ययन हेतु श्री स्याद्वाद महाविद्यालय की स्थापना हो गई। बात यहीं पूर्ण नहीं होती है। कोई पूर्व भव का जैनविद्यानुरागी पृथ्वी पर जन्म ले चुका है, जिसका पुण्य ये सब करा रहा था, जिनका नाम था पं. भूरामल जी जैन छाबड़ा (दीक्षोपरांत महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज)। कुछ ऐसे निमित्त मिले कि इन्होंने भी ठान

लिया कि दीक्षा लेने से पूर्व दुनिया के सामने जैनविद्या का माहात्म्य प्रकाशित करना है, वे पहुँच जाते हैं उसी स्याद्वाद महाविद्यालय काशी में, उनके पास कितना ज्ञान होगा; उसका अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि उनके गुरु ने दीक्षा देकर उनका गुणाधारित नाम मुनि श्री ज्ञानसागर जी रख दिया। उन पं. भूरामल जी (महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज) को संस्कृत और धर्म पढ़ने के लिए गंगा के घाट पर गमछे बेचने पड़े, इस दुर्घटना को जानकर पूज्य गुरुदेव मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज इतने आहत थे कि उन्होंने समाज को अपने धर्मोपदेश में भूत का आइना दिखाते हुए वर्तमान और भविष्य में जैनविद्या पढ़ने वाले विद्यार्थियों को सभी अनुकूलताओं के साथ व्यवस्था करने का जैसे ही आह्वान किया कि भक्तों ने जैन इतिहास का अत्यल्प समय में सबसे सुंदर संस्थान बनाकर तैयार कर दिया। मुझे लगता है कि पूज्य महाकवि आ. श्री ज्ञानसागर जी महाराज की आत्मा जहाँ से भी इस संस्थान को देखती होगी, वहाँ से प्रसन्न होकर भूत की अपेक्षा पोते लेकिन वर्तमान में गुरु होने के नाते पूज्य गुरुदेव मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी के पावन पाद-पद्मों में नमोऽस्तु करके स्वयं को कृतार्थ समझती होगी।

पूज्य गुरुदेव के प्रवचन के एक-एक शब्द ने श्रमण संस्कृति अनुरागियों के हृदय को ऐसा द्रवित किया कि आज इस घोर भौतिकता की चकाचौंध और विषय-भोगों की लंपटता, व्यसनों एवं मस्ती की उम्र में यहाँ आकर साढ़े तीन सौ छात्र-छात्रायें प्रतिदिन छहढ़ाला से लेकर समयसार तक के ग्रन्थों को पढ़ते हैं। जिस उम्र के बच्चे जैनधर्म की ए.बी.सी.डी. नहीं जानते हैं, उस उम्र में संस्थान के छात्र-छात्रायें समाज को बड़े-बड़े ग्रन्थों का ज्ञान देते हैं।

कभी-कभी पूज्य गुरुदेव अपने प्रवचनों में कहते हैं कि- “ये जिनवाणी ऐसे ही नहीं बची है, इसके लिए निकलंक ने बलिदान दिया था, इसके लिए एक भाई ने अपने भाई की हत्या अपनी आँखों से देखी थी, इसके लिए एक माता-पिता ने अपने होनहार प्राणप्रिय बेटों को ऐसे दुश्मनों के घर में भेज दिया था, जहाँ से बचकर आने की उम्मीद भी नहीं की जा सकती थी। मैं अपने भाई निकलंक का खून देखते समय अकलंक की आँखों से गिरे आँसुओं को तो वापस नहीं करा सकता पर उन आँसुओं को मोतियों में बदलकर उनके आँसुओं के बदले उनकी आत्मा को आनंद अवश्य दिला सकता हूँ, मैं भूतकाल को तो नहीं बदल सकता हूँ किन्तु वर्तमान को सुधारने का पुरुषार्थ अवश्य कर सकता हूँ ताकि भविष्य में फिर कभी जैनविद्या साधकों को ऐसे दुर्दिन न देखने पड़ें, इसलिए श्रमण संस्कृति संस्थान की स्थापना की गई है। समाज को भी गर्व है और मुझे भी गर्व है कि श्रमण संस्कृति संस्थान ने यह कर दिखाया है।”

श्रमण संस्कृति और निर्यापक मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज:-

कहने की आवश्यकता नहीं है कि आज गुरुदेव परम पूज्य निर्यापक श्रमण मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ने जिन ऊँचाईयों को, जिस अप्रतिम प्रतिष्ठा और प्रामाणिकता को प्राप्त किया है, वह सब उन्हें खैरात में नहीं मिला है। उनके जीवन पर पर ये दो पंक्तियाँ पूरी तरह लागू होती हैं-

**जितने कष्ट कंटकों में है, जिसका जीवन सुमन खिला ।  
गौरव-गंध उसे उतना ही, यत्र-तत्र सर्वत्र मिला ॥**

परम नीतिज्ञ और आगमज्ञ वादीभसिंहकृत क्षत्रचूडामणि में आगत सूक्ति- “बोधिलाभात्परा पुंसां भूतिः का वा जगत्त्रये” (क्षत्रचूडामणि-31) अर्थात् मनुष्यों के लिए तीनों लोकों में रत्नत्रय की प्राप्ति से बढ़कर और क्या संपत्ति हो सकती है? के अनुसार पूज्य गुरुदेव ने पारमार्थिक दृष्टि से सर्वोत्तम कार्य को न मात्र साध लिया है, वरन् उसमें पूर्ण सफलता भी प्राप्त कर ली है।

‘वे गुरु चरण जहाँ धरें, जग में तीरथ जेह’ कविवर भूधरदासजी ने ये पंक्तियाँ गुरुभक्ति में ही लिखीं होंगी। वर्षों से ये पंक्तियाँ हम सब पढ़ते भी गुरुभक्ति में ही हैं लेकिन एक संत की साधना ने इनको हस्तामलकवत् सार्थक कर दिया। यदि आप तीर्थ का अर्थ संसार से पार उतरने वाला तट या किनारा ही लगा रहे हैं तो रुक जाइये। इन संत के चरणों के सातिशय स्पर्श, पावन-प्रेरणा और अनुपम आशीर्वाद से सृजित चेतन-अचेतन तीर्थ का अर्थ बहुत व्यापक है। यही प्रबल हेतु है कि आज ‘तीर्थोद्धारक’ कहते ही निर्यापक श्रमण मुनिपुंगव श्री 108 सुधासागर जी महाराज का दिव्य रूप हर किसी के सामने उपस्थित हो जाता है। सो ठीक ही है; क्योंकि-

**सद्भिरध्युषिता धात्री, सम्पूज्येति किमद्भुतम्।**

**कालायसंहि कल्याणं, कल्पते रसयोगतः॥**

**(क्षत्रचूडामणि, लम्ब-6, श्लोक-5)**

अर्थात् महापुरुषों के निवास से भूमि यदि पूजनीय तीर्थक्षेत्र बन जाती है तो इसमें कुछ आश्चर्य नहीं है, क्योंकि काला लोहा भी रसायन के सम्बन्ध से सोना बन जाता है।

तीर्थोद्धारक निर्यापक श्रमण मुनिपुंगव 108 श्री सुधासागर जी महाराज के आशीर्वाद व प्रेरणा से निर्मित एवं जीर्णोद्धारित अतिशय तीर्थक्षेत्र

- श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन जिनोदय अतिशय तीर्थक्षेत्र, सिरोंज, जिला-विदिशा, म.प्र. वर्ष-1998
- श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन, देवोदय अतिशय तीर्थक्षेत्र, देवगढ़, ललितपुर, म.प्र. वर्ष-1991
- श्री दि. जैन अतिशय तीर्थक्षेत्र, सीरोन जी, म.प्र. वर्ष-1991
- श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय तीर्थक्षेत्र मंदिर संघी जी, सांगानेर-जयपुर राज. वर्ष-1994
- श्री दि. जैन ज्ञानोदय अतिशय तीर्थक्षेत्र नारेली, अजमेर राज. वर्ष-1995
- श्री दि. जैन कल्याणोदय अतिशय तीर्थक्षेत्र नसीराबाद, अजमेर राज. वर्ष-1995 (महाकवि आ.श्री ज्ञानसागर महाराज समाधिस्थल)
- श्री दि. जैन खण्डेला अतिशय तीर्थक्षेत्र सीकर राज. वर्ष-1997
- श्री सुमतिनाथ दि. जैन भव्योदय अतिशय तीर्थक्षेत्र रैवासा, जिला-सीकर राज. वर्ष-1998
- श्री शान्तिनाथ दि. जैन सुदर्शनोदय अतिशय तीर्थक्षेत्र आवां, जिला-टोंक राज. वर्ष-2000
- श्री आदिनाथ दि. जैन पुण्योदय अतिशय तीर्थक्षेत्र दादाबाडी कोटा राज. वर्ष-2001
- श्री पार्श्वनाथ दि. जैन तपोदय अतिशय तीर्थक्षेत्र बिजोलिया, जिला-भीलवाडा, राज. वर्ष-2002
- श्री आदिनाथा दि. जैन चंद्रोदय अतिशय तीर्थक्षेत्र चाँदखेडी-खानपुर, जिला-झालावाड, राज. वर्ष-2002
- श्री शान्तिनाथ दि. जैन अतिशय तीर्थक्षेत्र बघेरा-केकडी राज. वर्ष-2003

- श्री पार्श्वनाथदि. जैन अतिशय तीर्थक्षेत्र कैथूली, जिला-रामगंजमंडीराज. वर्ष-2003
- श्री दि. जैन विद्यासागरतपोवन अतिशय तीर्थक्षेत्र तारंगा गुजराज, वर्ष-2003
- श्री 1008 वासुपूज्यदि. जैन मन्दिर वेसु (सूरत) गुजराज, वर्ष--2004
- श्री दि. जैन मन्दिर ध्यान डूंगरी, भीण्डर जिला-उदयपुर, वर्ष-2005
- श्री आदिनाथ ध्यान डूंगरी, अतिशय क्षेत्र भीण्डर जिला-उदयपुर, वर्ष-2005
- श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जैन मंगलोदय अतिशय तीर्थ क्षेत्र सालेडा, वर्ष-2005
- श्री शीतलनाथ स्वामी दि. जैन मंदिर संजोद अतिशय तीर्थ क्षेत्र वर्ष-2005
- श्री मुनिसुव्रतनाथदि. जैन सर्वार्थसिद्धि अतिशय तीर्थ क्षेत्र रणथंभौर, सवाईमाधोपुर, वर्ष-2009
- श्री दि. जैन चमत्कार जी, अतिशय तीर्थ क्षेत्र सवाईमाधोपुर, वर्ष-2009
- श्री 1008 सर्वतोभद्र अतिशय तीर्थ क्षेत्र, महारौनी, वर्ष-2010
- श्री दि. जैन सिद्धक्षेत्र पावागिर जी, तालबेहट-झाँसी, उ.प्र. वर्ष-2011
- श्री आदिनाथदि. जैन शासनोदय अतिशय तीर्थ क्षेत्र हनुमानताल जबलपुर, वर्ष-2011
- श्री दि. जैन अभिनंदनोदय अतिशय तीर्थ क्षेत्र ललितपुर, वर्ष-2012
- श्री दि. जैन चेतनोदय अतिशय तीर्थ क्षेत्र कटनी, म.प्र. वर्ष-2012
- श्री शान्तिनाथदि. जैन अतिशय तीर्थ क्षेत्र चाँदपुर-जहाजपुर (ललितपुर) वर्ष-2012
- श्री आदिनाथदि. जैन तीर्थोदय अतिशय तीर्थ क्षेत्र गोलाकोटन्-खनियाधाना, म.प्र. वर्ष-2013
- श्री शान्तिनाथदि. जैन धर्मोदय अतिशय तीर्थ क्षेत्र पचराई, खनियाधाना, म.प्र. वर्ष-2013
- श्री आदिनाथदि. जैन दर्शनोदय अतिशय तीर्थ क्षेत्र थूबोन जी अशोकनगर, म.प्र. वर्ष-2013
- श्री शान्तिनाथदि. जैन पुण्योदय अतिशय तीर्थ क्षेत्र बजरंगगढ़, जिला-गुना, वर्ष-2013
- श्री संभवनाथ जिनालय अतिशय तीर्थ क्षेत्र सुधासागर धाम, राघौगढ़, जिला-गुना, म.प्र. वर्ष-2014
- श्री आदिनाथदि. जैन वीरोदय अतिशय तीर्थ क्षेत्र बांसवाडा, राज. वर्ष-2016
- श्री 1008 आदिनाथदि. जैन गुणोदय अतिशय तीर्थ क्षेत्र गुलगांव, केकड़ी, राज. वर्ष-2016
- श्री 1008 सुखोदय अतिशय तीर्थ क्षेत्र नौगामां, बांसवाडा, वर्ष-2016
- श्री दि. जैन सुखोदय अतिशय तीर्थ क्षेत्र सूथडा, जिला-टोंक, राज. वर्ष-2017
- श्री सहस्रफणी पार्श्वनाथदि. जैन अतिशय तीर्थ क्षेत्र इंदरगढ़, जिला-बूंदी, राज. वर्ष-2017
- श्री आदिनाथदि. जैन शीलोदय अतिशय तीर्थ क्षेत्र शीलोर, जिला-बूंदी, राज. वर्ष-2018
- श्री 1008 पार्श्वनाथदि. जैन मंदिर, भटार रोड, सूरत वर्ष-2018
- श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथदि. जैन देशनोदय अतिशय तीर्थ क्षेत्र चैनपुरा, वर्ष-2020
- श्री दि. जैन पयोदय अतिशय तीर्थ क्षेत्र भेडाघाट जबलपुर म.प्र. वर्ष-2022
- श्री शान्तिनाथदि. जैन चमत्कारोदय अतिशय तीर्थ क्षेत्र बहोरीबंद कटनी, म.प्र. वर्ष-2022
- श्री दि. जैन संस्कारोदय अतिशय तीर्थ क्षेत्र लम्हेटा-शहपुरा, जबलपुर वर्ष-2022

- श्री दि. जैन अभिनन्दनोदय अतिशय तीर्थ क्षेत्र ललितपुर उत्तर प्रदेश वर्ष -2022
- श्री दि. जैन शांतोदय अतिशय क्षेत्र जहाजपुर ललितपुर वर्ष - 2022

जैनदर्शन में केवलज्ञान को सूर्य कहा गया है, श्रुत को दीपक की उपमा दी जाती है। जैसे सूर्य संसार को प्रकाशित करते हुए स्वयं प्रकाशमान रहता है, एक दीपक से असंख्य दीपक जल जाने के बाद भी उसकी ज्योति बनी रहती है, वैसे ही पूज्य श्री के भी स्वयं में दिगम्बरत्व रूप तीर्थत्व की पूर्ण सुरक्षा और प्रतिष्ठा के साथ आपके निमित्त से अनेक तीर्थों की रचना होने के बाद भी तीर्थ से तीर्थ उसी प्रकार साकार हो रहा है, जिस प्रकार दीप से दीप।

युग परिवर्तित होते हैं, यह सृष्टि की प्राकृतिक व्यवस्था है। परिवर्तन के दौर में भविष्य के लिए जो धर्म, संस्कृति, समाज और राष्ट्र के लिए कुछ नया कर जाते हैं, वे कालजयी हो जाते हैं, वे महापुरुषों की श्रेणी में गणनीय और वंदनीय हो जाते हैं।

परम पूज्य मुनिपुंगव श्री तीर्थंकर महावीर के तीर्थ के अनुरूप अपने श्रामण्य की पूर्ण सुरक्षा के साथ संरक्षण और संवर्धन में अग्रसर भी हैं और आदर्श भी हैं। आदर्श इसलिए हैं क्योंकि उनके द्वारा धर्म क्षेत्र में शान्तिधारा, भक्तामर-दीपार्चनादि सभी सम्यक्त्ववर्धिनी क्रियाओं को मुनि-आर्यिका-श्रावक-श्राविका रूप चतुर्विध संघों द्वारा श्रद्धा पूर्वक अपनाया जा रहा है। यहाँ मेरी दृष्टि प्राचीन आचार्यों पूज्यवर कुंदकुंद, पूज्यवर समंतभद्र स्वामी आदि पर जाती है तो पाता हूँ कि जिनशासन विरोधी अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में ही तो उन्होंने धर्म का संरक्षण और संवर्धन किया था, जैसा आज गुरुदेव ने किया है और कर रहे हैं।

जिस समय साधु अपने ज्ञान-ध्यान आदि में ही लीन रहते थे, उस समय आचार्य कुन्दकुन्द भगवान, आचार्य समंतभद्र स्वामी, आचार्य धरसेनादि की लेखन प्रवृत्ति को देखकर गृहस्थों को ही नहीं, कुछ साधुओं के मन में भी आया होगा कि साधुओं का काम कलम चलाना तो नहीं है, गुरु परंपरा में भी किसी साधु ने कलम नहीं चलाई लेकिन ये परम सत्य है कि उन आचार्यों की लेखनी की बदौलत ही हम अपने धर्म, संस्कृति और सिद्धान्तों को लख पा रहे हैं।

परिवर्तन भी परिवर्तनशील है; पूज्य गुरुदेव इस बात को अच्छी तरह जानते हैं। आज जो परिस्थितियाँ हैं, तदनु रूप धर्म की परिधि में रहकर गृहस्थों को कैसे धर्ममार्ग में उत्साहपूर्वक लगाया जा सके, एतदर्थ पूज्य गुरुदेव ने धर्म की अनेक क्रियाओं को विधिपूर्वक करने की जो प्रेरणा समाज को दी और उन धार्मिक क्रियाओं के लाभ देखकर वे क्रियार्थे संपूर्ण समाज में अत्यल्प समय में ही अपना ली गई हैं।

#### • संत श्री सुधासागर बालिका महाविद्यालय एवं छात्रावास:-

वास्तव में श्रमण संस्कृति संस्थान से पच्चीस वर्षों में समाज को जो उपलब्धि हुई है, वह इस युग के वातावरण में अकल्पनीय है। मन्दिरों में चलने वाली एक छोटी सी पाठशाला से लेकर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में जैनदर्शन पढ़ाने वाले विद्वान् तक इस संस्थान से प्रसूत हो चुके हैं। हिन्दी-संस्कृत पढ़ाने वाले शिक्षक/व्याख्याताओं से लेकर विदेशी भाषा पढ़ाने वाले प्रोफेसर, विद्वान, विधानाचार्य, कवि, संगीतकार, पत्रकार, संपादक, प्रबंधक, बैंक ऑफिसर्स, समाजसेवी,

योगशिक्षक, वास्तुशास्त्री, ज्योतिषाचार्य, साहित्याचार्य, व्याकरणाचार्य आदि अनेक क्षेत्रों के उत्कृष्ट व्यक्तित्व इस संस्थान ने समाज को दिए हैं। पूज्य गुरुदेव के इस गुण से प्रायः सभी परिचित हैं कि वे किसी भी कार्य को तत्परता से करने में विश्वास रखते हैं पर ये भी हकीकत है कि उनके दोनों ओर ही धैर्य और गंभीर (पू.ऐ. धैर्यसागर जी एवं पू.क्षु. गंभीरसागर जी) हैं, वे स्वयं भी धैर्य व गंभीर की प्रतिमूर्ति हैं। तभी तो मदनगंज-किशनगढ़ (राज.) चातुर्मास-2017 में श्रमण संस्कृति संस्थान के अंतर्गत जिस संत श्री सुधासागर बालिका महाविद्यालय एवं छात्रावास का शुभारंभ हुआ, उस तरह से बेटियों को संस्कारशील शिक्षा के लिए कुछ वर्षों से उनके मन-विचार में था, पर एक उचित अवसर की उन्होंने प्रतीक्षा की, जो किशनगढ़ चातुर्मास के समय आया।

जब इस महाविद्यालय की इन 15-16 साल की बेटियों को न्याय का अध्ययन ही नहीं, वरन् उस पर गहन चर्चा करते देखते हैं तो अपनी ही आँखों पर विश्वास नहीं होता है। परीक्षामुख, न्यायदीपिका, तत्त्वार्थसूत्र, सर्वार्थसिद्धि टीका, इष्टोपदेश, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, समयसार आदि ग्रन्थों में जब इनकी गति देखते हैं तो एक बार तो लगता है कि कहीं कोई स्वप्न तो नहीं देख रहे हैं। जिन ग्रन्थों का स्वाध्याय करने के लिए बड़े-बड़े साधु और आर्यिकायें भी अवसर और इन ग्रन्थों के ज्ञाता की खोज करते पाये जाते हैं, उन ग्रन्थों को ये बेटियाँ पढ़ ही नहीं रहीं हैं बल्कि समझ भी रहीं हैं और समझाने में भी कुशल बन रहीं हैं।

द्वादशवर्षीय श्रमण संस्कृति स्वाध्याय पाठ्यक्रम ने विशेष रूप से महिलाओं को स्वाध्याय से जोड़ दिया है। अनेक बार ऐसा देखने में आता है कि कुछ विषयों को हम स्नातक विद्वान् स्पष्ट रूप से समझाने में हिचकते हैं लेकिन अब यहाँ से अध्ययन करने वाली बेटियाँ शास्त्रों का सूक्ष्मता से स्वाध्याय करके महिलाओं को अत्यंत स्पष्ट एवं सरल रूप से ऐसे विषयों को भी समझा सकेंगी। संस्थान के रजत गौरव वर्ष-2022 के ग्रीष्मकालीन शिक्षण शिविरों में सागर, महारौनी, भोपाल, इंदौर आदि अनेक स्थानों पर इन बेटियों ने छहढाला, तत्त्वार्थसूत्र, इष्टोपदेश आदि की कक्षाएँ लीं। समाज ने उन बेटियों के ज्ञान और उनके पढ़ाने की शैली से प्रभावित होकर उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। इस वर्ष जयपुर के विभिन्न जिनालयों में, जबलपुर और मुंबई जैसे स्थानों पर कुछ बेटियाँ दशलक्षण पर्व पर प्रवचन करने गईं, उन स्थानों की समाज इनके ज्ञान और प्रवचन कला से अत्यंत प्रसन्न और गौरवान्वित है। अभी तो प्रथम बैच की बेटियों के भी पाँच वर्ष पूर्ण नहीं हुए हैं कि इनकी स्वाध्याय शैली, कक्षा अध्यापन की कुशलता, शिविर संयोजन का सार्थक साहस, बड़े-बड़े मंचों पर ओजस्वी वाणी में धाराप्रवाह प्रवचन करने जैसे दृश्यों को देखकर लगता है कि पूज्य गुरुदेव श्री सुधासागर जी महाराज के इस अभूतपूर्व कार्य को देखकर आचार्य कुन्दकुन्द, आचार्य समंतभद्र, आचार्य अकलंकदेव, आचार्य माणिक्यनंदी जैसे महाराजों की आत्मा को अपूर्व संतुष्टि होती होगी।

अभी एक पंचवर्षीय कार्यकाल भी पूर्ण नहीं हुआ है कि पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से इसी छात्रावास की नौगावां (राज.) निवासी दृष्टि जैन पिता श्री भरत जैन और जबलपुर (म.प्र.) निवासी आन्या जैन पिता श्री विकास जैन ने जबलपुर पंचकल्याणक में आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत के साथ ब्राह्मी-सुन्दरी बनकर 'णाणस्य फलमुवेक्खा' को चरितार्थ कर दिखाया है। आन्या जैन ने तो सत्र 2021-22 की राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की वरिष्ठोपाध्याय परीक्षा में सम्पूर्ण राजस्थान में

सर्वोच्च 95.60 प्रतिशत अंकों के साथ प्रथम स्थान प्राप्त करके कीर्तिमान भी स्थापित कर दिया है। एतदर्थ 12 अगस्त 2022 को जयपुर में आयोजित राज्यस्तरीय-संस्कृत-दिवस-समारोह-2022 को इस बेटी को राजस्थान सरकार के माननीय शिक्षा मंत्री श्री डॉ.बी.डी.कल्ला द्वारा सम्मानित भी किया गया है। 2020-21 का सत्र भी यदि कोरोना काल की भेंट न चढ़ा होता और बेटी दृष्टि जैन को भी क्रमोन्नत न होकर परीक्षा देने का मौका मिला होता तो यह कार्य एक वर्ष पूर्व भी हो चुका होता।

हमने नहीं देखा कि तीर्थंकर ऋषभदेव ने ब्राह्मी और सुन्दरी को कैसे पढ़ाया होगा लेकिन पूज्य गुरुदेव ने जब संस्थान की बेटियों को प्रथम बार श्री चंद्रोदय तीर्थ क्षेत्र चाँदखेडी में समयसार पढ़ाया तो यह दृश्य देखकर आत्मा से आवाज आयी कि ऐसे ही भगवान् ऋषभदेव ने भी पढ़ाया होगा। ब्राह्मी और सुन्दरी तो चतुर्थ काल में साक्षात् तीर्थंकर के घर में जन्मी थीं, वे तो पुण्यशाली थीं हीं लेकिन इस कलिकाल में घोर भौतिकता की चकाचौंध और विषय-वासनाओं के आकर्षक जगत् में ये बेटियाँ उन ब्राह्मी-सुन्दरी से कम पुण्यशीला नहीं हैं, जिन्हें साक्षात् गुरुदेव के मुखारविन्द से समयसार जैसा ग्रन्थ पढ़ने का अपूर्व पुण्य-संयोग मिला है।

दो कुलों को संवारने वाली बेटियाँ जब लौकिक शिक्षा के साथ ही धर्म और दर्शन की इतनी उत्कृष्ट संस्कार समन्वित शिक्षा प्राप्त करेंगी तो निश्चित रूप से इसके सुखद परिणाम समाज में आने वाली अनेक पीढ़ियों तक प्राप्त होते रहेंगे।

#### ● दशलक्षण पर्व और श्रमण संस्कृति संस्थान:-

दिगम्बर जैन समाज में सर्वत्र दशलक्षण पर्व साधना, उपासना और प्रभावना पूर्वक मनाये जाते हैं। आज भले ही प्रतिदिन अधिकांश मन्दिरों में स्वाध्याय न होता हो पर दशलक्षण पर्व पर छोटे से छोटे मन्दिर में भी दश धर्मों पर प्रवचन सुनने को समाज लालायित रहता है। हमारे सांगानेर संस्थान के प्रवचनकार विद्वानों की समाज में कितनी संख्या में आवश्यकता है, इसका अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि लगभग पाँच सौ विद्वानों को भेजने के बाद भी आमंत्रित अनेक स्थानों के लिए विद्वान् उपलब्ध नहीं हो पाते हैं। इस कार्य का सफल संचालन हमारे संस्थान के ही स्नातक पं. संजीव जी शास्त्री द्वारा किया जाता है।

संस्थान के प्रारंभिक दिनों की गाथा भी बड़ी मजेदार है। 18-19 साल के बालकों को विद्वान् के रूप में देखकर उत्तम क्षमा की पूर्व बेला पर ही अनेक स्थानों की कमेटियों को उत्तम क्रोध आ जाता था। एक बार जब हमारा एक साथी एक स्थान पर दशलक्षण पर्व पर प्रवचन हेतु समाज में पहुँचा, उसे देखते ही बैनाड़ा जी के पास समाज के मुखिया का फोन आया कि- ‘आपसे हमने विद्वान् मांगा था, ये क्या आपने बालक भेज दिया ? इतनी बड़ी समाज में ये बालक क्या करेगा ? यहाँ तो हजारों लोग प्रवचन सुनने के लिए बैठते हैं।’ उस समय बैनाड़ा जी ने अपनी मृदु वाणी में कहा कि- आप एक दिन इनका प्रवचन सुन लीजिए उसके बाद यदि आपको पसंद न आये तो आप कल मेरे पास वापस भेज देना। दूसरे दिन प्रवचन के बाद उन्हीं महानुभाव का फोन आया, जिसमें वे अपनी बात पर पश्चाताप करते हुए बोले कि- ‘आप हमें माफ कर देना, हमने कल उम्र देखी थी, ज्ञान और प्रवचन कला नहीं, लेकिन आज हमारी पूरी समाज आपके विद्वान् की विद्वत्ता से अति प्रसन्न है, संतुष्ट है और अगले वर्ष के लिए भी इन्हीं को भेजने का अभी से आपको आमंत्रण दे रहा हूँ।’

मैं इस बीच एक बात कह देना उपयुक्त समझता हूँ कि हमारे संस्थान के छात्रों के विद्वान् बनने में एक बड़ी और अति महत्वपूर्ण भूमिका पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में लगने वाले श्रावक संस्कार शिविर की होती है। जो छात्र प्रथम वर्ष में संस्थान में प्रवेश लेते हैं, उन्हें उस वर्ष इस शिविर में अनिवार्य रूप से भेजा जाता है। उसका सत्परिणाम ये निकलता है कि वे छात्र दश दिनों में विद्वान् बनने की योग्यता हासिल कर लेते हैं।

धर्मनगरी बीना (म.प्र.) में हमारे अग्रज स्नातक विद्वान् पं. आलोक जैन मोदी, ललितपुर के दशलक्षण पर्व पर हुए प्रवचनों से वहाँ की समाज इतनी प्रभावित हुई कि वहाँ की समाज ने पं. श्री आलोक जी मोदी के माता-पिता को आमंत्रित करके आदर्श सम्मान किया। कितने ही स्नातक विद्वानों को तो अनेक स्थानों पर समाज प्रभावित होकर अपने गाँव/नगर में पाठशाला/विद्यालय/महाविद्यालय में शिक्षण हेतु नियुक्त कर लेते हैं।

दशलक्षण पर्व पर मुख्य रूप से हम लोग दश धर्मों पर प्रवचन तो करते ही हैं; साथ ही अनेक स्थानों पर समाज की रुचि के अनुरूप तत्त्वार्थसूत्र, रत्नकरण्ड श्रावकचार, समयसार जैसे विशेष ग्रन्थों का स्वाध्याय भी कराते हैं। समाज के स्वाध्यायशील श्रावक-श्राविकाओं के प्रश्नों के आगमानुसार उत्तर देने का भी पूर्ण प्रयास करते हैं।

दशलक्षण पर्व के दिनों में आगत सुगंध दशमी व्रत, रत्नत्रय व्रत, पंचमेरु व्रत आदि व्रतों का स्वरूप, महिमा और इन व्रतों को करने की विधि के साथ ही सम्यक् उद्यापन भी हम लोग कराते हैं, जिससे समाज के अनेक कार्य एक ही विद्वान् के माध्यम संपन्न हो जाते हैं।

दशलक्षण पर्व पर देश की सबसे बड़ी प्रवचन सभाओं के आमंत्रण हमारे संस्थान में आते हैं। सागर (म.प्र.) के प्रसिद्ध कटरा बाजार में, जहाँ हजारों प्रबुद्ध श्रोता मनोयोग पूर्वक प्रवचन सुनते हैं, वहाँ प्रतिवर्ष हमारे संस्थान के विद्वान् के ही प्रवचन होते हैं। इसी प्रकार ललितपुर, जबलपुर, भोपाल, जयपुर, गुवाहाटी, डीमापुर, सूरत, गुना, अशोकनगर, शिवपुरी, बांसवाड़ा, उदयपुर, कटनी आदि जैसी अनेक विशाल प्रवचन सभाओं में संस्थान के विद्वानों को वर्षों से सुना जा रहा है।

#### ● समयसार के स्वाध्याय-शिविर की उपयोगिता और प्रभाव-

हमारे अग्रज स्नातक विद्वान् डॉ. आनन्द कुमार जैन (असिस्टेंट प्रोफेसर-काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी) बताते हैं कि- “जब मैंने समयसार का स्वाध्याय नहीं किया था और एक महानुभाव ने ‘आयुक्खयेण मरणं जीवाणं जिणवरेहिं पण्णत्तं। आउं ण हरेसि तुमं कह ते मरणं कयं तेसिं। आउं न हरंति तुहं कह ते मरणं कयं तेहिं’ गाथा सुनाकर कहा कि बताइए पंडित जी जब कोई किसी की आयु का हरण नहीं कर सकता है और कोई किसी की आयु को बढ़ा नहीं सकता है तो फिर अकालमरण कैसे हो सकता है? गाथा समयसार की थी, बात आचार्य कुन्दकुन्द भगवान के वचनों के प्रति श्रद्धान् की थी, मैंने उनसे कहा कि चूँकि अभी मैंने समयसार का स्वाध्याय नहीं किया है (उस समय तक पूज्यश्री द्वारा समयसार का स्वाध्याय नहीं कराया जाता था) मैंने कहा कि इस प्रश्न का उत्तर समयसार के संदर्भ में तो नहीं दे सकता हूँ पर तत्त्वार्थसूत्र आदि ग्रन्थों में अकालमरण की अवधारणा तो स्पष्ट रूप से वर्णित है। इस प्रश्न को मैंने पूज्य गुरुदेव के समक्ष रख दिया। पूज्य श्री ने प्रश्न बड़े ध्यान से सुना लेकिन थोड़ी देर के लिए वे मौन होकर कुछ विचार करने लगे। चंद समय के

लिए मन में आया कि ऐसा तो नहीं कि महाराज जी को प्रश्न का उत्तर नहीं आ रहा हो लेकिन तुरंत आत्मा से आवाज आई- रे बेईमान मन! ये वे ही महाराज हैं, जिनके तर्कों को सुनकर एकांतवादी थर्राते हैं, ये वे ही महाराज हैं, जिनके आगम सम्मत युक्तियुक्त प्रवचनों ने श्रमण संस्कृति की ध्वजा को अनंत आकाश की ऊँचाईयाँ दी हैं। एक मिनट बाद गुरुदेव बोले- “ऐसे प्रश्न तो सभी के पास आते होंगे? तुमने तो मुझसे पूछ लिया, बाकी के स्नातकों के प्रश्नों का क्या होगा? मैंने भी कह दिया कि सभी आपके चरणों में ही समाधान लेने के लिए आयेंगे। गुरुदेव ने कहा- “मैं तो किसी को निमंत्रण-आमंत्रण देता नहीं हूँ लेकिन मेरे पास छात्र स्वाध्याय करने आते हैं तो मना करने वाला नहीं हूँ।” बात आगे बढ़ी, संस्थान की कमेटी तक पहुँची और सुपरिणाम स्वरूप सन् 2002 बिजौलियां वर्षायोग से अनवरत रूप से समयसार का शिक्षण-प्रशिक्षण (स्वाध्याय) प्रतिवर्ष वर्षायोग में स्वयं गुरुदेव के मुखारविन्द से मिल रहा है, ये हम सबका सातिशय पुण्य का ही योग है।

डॉ. आनंद जी ने जब ये प्रसंग सुनाया तब मैंने भी उनके वाक्यों में एक वाक्य जोड़ दिया कि- ये वो गुरुदेव हैं, जिन्होंने पं. बाबूलाल जी जैन इंजीनियर (कोटा) जैसे विद्वानों के प्रश्नों का न मात्र उत्तर दिया बल्कि अपने आगम सम्मत उत्तरों से ऐसा प्रभावित किया कि जिनके कभी मुनिराज के दर्शन करने की भी उम्मीद नहीं थी, उन्होंने गुरुदेव को सच्चा गुरु मानकर नवधा भक्ति पूर्वक उनको आहार दान भी दिया था।

कुछ लोगों द्वारा ये भ्रम फैलाया जाता है कि हम स्नातक लोग और हमारे साधु गृहस्थों को समयसार का स्वाध्याय करने का निषेध करते हैं। ये ‘आधी हकीकत और आधा फसाना’ जैसी बात है। पूज्य गुरुदेव तो अद्भुत हैं। जब समयसार के शिविर में हमारे अनुज स्नातक पं. आशीष जैन शास्त्री, मवाई ने पूज्य श्री से जिज्ञासा वश पूछा कि- महाराज श्री! कुछ लोग कहते हैं कि आज साधुगण गृहस्थों को समयसार के स्वाध्याय करने का निषेध करते हैं, तो गृहस्थों को समयसार का स्वाध्याय करना चाहिए या नहीं? पूज्य गुरुदेव मुस्काये और बोले- “मैं साधु हूँ, तुम गृहस्थ हो, मैं जब स्वयं पढ़ा रहा हूँ तो यह शिविर देखकर ही तुम्हारी जिज्ञासा का समाधान हो जाना चाहिए। रही बात समयसार के स्वाध्याय के निषेध की तो यदि किसी गृहस्थ के समयसार के स्वाध्याय से पूर्व के आवश्यक रत्नकरण्ड श्रावकाचार, तत्त्वार्थसूत्र आदि का ज्ञान नहीं है तो उसे सीधे समयसार का स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।”

वास्तव में गुरुदेव का उपकार अवर्णनीय है। समयसार का स्वाध्याय गुरुमुख से करने से जो लाभ हुए और हो रहे हैं, उनमें से कुछ इस प्रकार कहे जा सकते हैं-

1. अध्यात्मिक ग्रन्थ का स्वाध्याय दिगम्बर आध्यात्मिक संत के द्वारा होना।
2. ग्रन्थ की समस्त गाथाओं का क्रमिक स्वाध्याय होना, न कि मात्र प्रवचन के लिए गिनी-चुनी मनपसंद गाथाओं का अध्ययन।
3. समयसार से अध्यात्म के नाम पर समाज में फैल रहे एकांतवाद पोषक सिद्धांतों की वास्तविकता, उनके कुतर्कों का खण्डन और समयसार पढ़ने के बाद किसी एक नय के प्रति हीन दृष्टि अथवा उपेक्षा का अभाव।

4. समयसार के आधार पर समाज में प्रचलित एकांतिक/एक पक्षीय अकालमरण के अभाव की अवधारणा, जीव के अकर्तावाद, निमित्त की अकिञ्चित्कारिता, आत्मा के त्रैकालिक शुद्धता का भ्रम आदि अनेक विषयों का समयसार की ही गाथाओं से निराकरण, 'व्यवहारनय झूठा है' ऐसे एकांत कथन का समयसार की गाथाओं से ही परिहार करते हुए अनेकांत धर्म की प्रतिष्ठा आदि।

5. समयसार का स्वाध्याय करने के बाद व्रत, संयम एवं संयमियों के प्रति अनुराग रूप गुरु उपासना के दृढ़ संस्कार हम लोगों में आना।

#### ● **भारतवर्षीय श्रमण संस्कृति पाठशालाओं का संचालन:-**

परम पूज्य गुरुदेव कहते हैं- “एक सामान्य सा तथ्य है कि बच्चे कच्ची मिट्टी की तरह होते हैं, बचपन में शिक्षा और संस्कारों के माध्यम से उनके जीवन का निर्माण अपेक्षित रूप में किया जा सकता है। एक ओर विद्यालय के बस्ते और रटंत विद्या का बोझ बढ़ा तो दूसरी ओर टी.वी. के आकर्षण ने बच्चों को चपेट में लिया तो उस पर मोबाइल की दुनिया ने ‘करेला और नीम चढ़ा’ का काम कर दिया। अनेक ऐसे बाह्य कारण हैं, जिनसे माता-पिता ने पूरी ताकत के साथ लौकिक शिक्षा के लिए कर्ज लेकर अपने बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दिया। अनेक कारणों में से एक कारण तो ये भी है कि जो माता-पिता न कर सके, जो माता-पिता न बन सके, अब वह करने, वह बनने के लिए बच्चों को मैदान में उतार दिया। चाहे बच्चे का बचपन मर जाये पर माँ-बाप का सपना साकार होना चाहिए। आज बच्चे मशीन की तरह हो गये और जितने अंशों में नहीं हुए उतने अंशों में मशीन पर आश्रित हो गये। लौकिक शिक्षा बढ़ती गई और परिवार बिखरते गये। आर्थिक उन्नति बढ़ती गई और मानवीयता घटती गई। रुपये अपार हो गये और रिश्ते तार-तार हो गये। ये विकास है या विनाश?”

पूज्य गुरुदेव की ये असाधारण विशेषता है कि वे वर्तमान प्रतिकूल परिवेश से विचलित नहीं होते हैं बल्कि वे वर्तमान को सुधारकर सुखद भविष्य की मजबूत नींव रखते हैं। पूज्यश्री ने बंद होती पाठशालाओं को आकर्षक रूप में प्रारंभ करवाया, जिससे आज हजारों बच्चे प्रतिदिन पाठशालाओं में धार्मिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। प्रायः देखने में यह आता है कि समाज के श्रेष्ठी, पढ़ाने वाले विद्वान्/विदुषी बहनें, बच्चे और अभिभावकों के बीच आपस में मनमुटाव हो जाता है और अनेक पाठशालायें इसी कारण बंद भी हो जाती हैं।

पूज्य गुरुदेव ने पाठशाला से संबंधित इन चारों स्तम्भों (समाज के श्रेष्ठी, पढ़ाने वाले विद्वान्/विदुषी बहनें, बच्चे और अभिभावक) को वर्ष में एक बार एकत्रित होने की प्रेरणा दी, उसी सत्प्रेरणा के फलस्वरूप **भारतवर्षीय श्रमण संस्कृति पाठशालाओं** का एक वार्षिक कार्यक्रम (पाठशाला अधिवेशन) पूज्य श्री के ससंघ सान्निध्य में होने लगा, जिससे प्रतिवर्ष पाठशालाओं के संचालन के लिए सशक्त ऊर्जा मिल जाती है। अधिवेशन में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम एक-दूसरी पाठशालाओं को कुछ नया और अच्छा करने को प्रेरक निमित्त का कार्य करते हैं।

सांगानेर संस्थान के अंतर्गत संचालित पाठशाला बोर्ड को व्यवस्थित और विकसित करने में संस्थान के ही पूर्व स्नातक ब्र. श्री वीरेन्द्र जैन शास्त्री, हीरापुर (म.प्र.) का पाठशालाओं की संख्या बढ़ाने, ग्रन्थ प्रकाशन और पाठशाला बोर्ड को आधुनिक बनाने के क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान रहा है। उनकी सेवा रूप योगदान का उल्लेख तो स्वयं गुरुदेव भी किया करते हैं। उनके बाद पं.श्री प्रदीप

जी शास्त्री इस कार्य को कुशलता पूर्वक संपादित कर रहे हैं। वर्तमान में संस्थान के बोर्ड से लगभग छह सौ पाठशालायें संबद्ध हैं, जिनमें हजारों बच्चे धार्मिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। वास्तव में इन पाठशालाओं के माध्यम से ही हम अपने धर्म, दर्शन, साहित्य और संस्कृति का ज्ञान देकर बच्चों को संस्कारित कर सकते हैं।

ये हकीकत है कि यदि बच्चा पाठशाला में पढ़ता है तो उसके आचार-विचार में धर्म दिखाई देता है। बचपन से ही जब उसे शाकाहार का महत्व और मांसाहार की हानियों, अपने कुल का गौरव, अपने धर्म पर श्रद्धान्, माता-पिता और गुरुजन के सम्मान की भावना के संस्कार दिये जाते हैं तो उससे एक आदर्श समाज का निर्माण होता है लेकिन आज पाठशाला चलाने में अनेक समस्याएँ भी हैं इसलिए पूज्य गुरुदेव ने पाठशालाओं के सम्यक् संचालन हेतु कुछ अत्यंत उपयोगी सूत्र दिये हैं, जिनको अपना कर अनेक पाठशालायें उत्तम रीति से संचालित हो रही हैं-

1. बच्चों की सुरक्षा की दृष्टि से पाठशालाओं के लिए जब तक आप बच्चों को ऑटो रिक्शा या बस की व्यवस्था नहीं देंगे, तब तक उन्हें आप पाठशाला नहीं बुला पायेंगे। जब स्कूल बस चल सकती है, तो पाठशाला बस क्यों नहीं? इसलिए आप पाठशाला समिति की ओर से ऑटोरिक्शा तय कीजिए और बच्चे को घर के दरवाजे से लाइये और पाठशाला के बाद घर तक छोड़ने जाइये, पाठशाला चल जायेगी। अभी ब्यावर में ये प्रेक्टिकल किया था, वहाँ घर-घर ऑटोरिक्शा जाता है, लोग बच्चे भेज देते हैं। आज वहाँ १००-१५० बच्चे प्रतिदिन आते हैं, इसलिए आप भी ऐसी व्यवस्था बनाएँ।

2. पाठशाला को परीक्षा बोर्ड से जोड़िए, जहाँ से आपको पूरा पाठ्यक्रम मिले, प्रोत्साहन मिले, परीक्षा हो, डिग्री भी मिले। आज सांगानेर संस्थान के बोर्ड से सैकड़ों पाठशालायें जुड़ी हुई हैं। बोर्ड के अनुसार पूरे देश की पाठशालाओं की एक साथ परीक्षाएँ होती हैं। प्रतिवर्ष सभी पाठशालाओं का वार्षिक अधिवेशन होता है, उसमें बच्चों को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित भी किया जाता है।

3. आज पढ़ाई की विधायें बदल चुकी हैं, अब बच्चे स्कूल में प्रोजेक्टर के माध्यम से पढ़ते हैं और आसानी से सीख लेते हैं। अतः पाठशाला की पढ़ाई भी प्रोजेक्टर आदि आधुनिक माध्यम से होना चाहिए।

4. मैंने अनेक स्थानों पर पाठशालायें देखीं, फर्नीचर ही नहीं है। आज युगानुरूप पाठशाला में आपको आकर्षक फर्नीचर भी देना होगा, अन्यथा ये मॉडर्न माता-पिता अपने बच्चों को पाठशाला भेजने वाले नहीं हैं।

5. पाठशाला पढ़ाने के लिए किसी योग्य विद्वान् को रखिए, उसे पर्याप्त वेतन दीजिए। यदि पढ़ाने वाला आधुनिक विधियाँ नहीं जानता होगा तो पाठशाला से धीरे-धीरे बच्चे कम हो जायेंगे।

6. पाठशाला के बच्चों की सुन्दर सी ड्रेस बनवाइए, उन्हें पाठशाला का ही बैग दीजिए।

7. महीने-पंद्रह दिन में बच्चों का टेस्ट लेकर उन्हें पुरस्कार देकर प्रोत्साहित कीजिए। रविवार के दिन उन्हें एक साथ मन्दिर में बुलाकर अभिषेक-पूजन सिखाइए, पूजन के बाद बच्चों को स्वल्पाहार भी दीजिए।

8. आज के बच्चे कार्टून फिल्मों देखते हैं, तो आप भी अपने तीर्थंकरों, आचार्य-मुनियों, महापुरुषों, सतियों, आर्यिकाओं, संस्कृति आदि का ज्ञान कराने के लिए इस प्रकार की फिल्में बनाकर दिखाइए।

9. प्रतिवर्ष कोई भी एक परिवार पाठशाला के लिए दानपूर्वक एक वर्ष के संकल्प के साथ मंगल कलश स्थापित करे। जब भी आपके मन्दिर में कोई कार्यक्रम होता है, पञ्चकल्याणक होता है, विधान होता है, उस समय पाठशाला के बच्चों का कोई न कोई कार्यक्रम रखकर उन्हें प्रोत्साहित कीजिए।

10. दादा-दादी, रिश्तेदार जिस प्रकार बच्चों से उनके स्कूल का नाम, उनकी पढ़ाई के बारे में पूछते हैं, उसी प्रकार पाठशाला के बारे में पूछना शुरू कर दें। जिसप्रकार स्कूल की पढ़ाई करने के लिए बच्चों को कहते हैं कि इतने नंबर आने पर ये चीज दिला देंगे, उतने नंबर आने पर वो दिला देंगे, इसी प्रकार पाठशाला की पढ़ाई के बारे में भी कीजिए।

11. माता-पिता अच्छी तरह से ये समझ लें कि स्कूल का ज्ञान आपके बच्चे को कमाना तो सिखा देगा, लेकिन नशामुक्त जीवन जीने, माता-पिता की सेवा करने, धार्मिक आचरण करने का ज्ञान पाठशाला से आयेगा। इसे एक छोटी सी बात से आप समझ सकते हैं कि आपका बच्चा लौकिक ज्ञान से कमाई तो कर लेगा लेकिन वह संस्कारित नहीं है तो जुआ में गंवा सकता है, व्यसन में गंवा सकता है। (जिज्ञासा-समाधान, भाग-2, पृ-130 से उद्धृत)

पूज्य गुरुदेव के वर्षायोग-2022 में पाठशाला के अधिवेशन के मुख्य अतिथि श्रीमती आशारानी जी पाण्ड्या इतनी प्रभावित हुई कि उन्होंने परीक्षा बोर्ड द्वारा पाठशालाओं के माध्यम से यह ज्ञान और संस्कार का कार्य अनवरत चलता रहे, एतदर्थ एक करोड़ रुपये की राशि ध्रौव्य फण्ड हेतु घोषित की है। उनके इस सहयोग की जितनी प्रशंसा की जाये उतनी कम है।

इस परीक्षा बोर्ड द्वारा समसामयिक रूप से आकर्षक पुस्तकों का प्रकाशन, धार्मिक ड्राइंग शीट्स पर बच्चों द्वारा धार्मिक चित्रांकन, विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन, परीक्षाओं का आयोजन, प्रमाण-पत्र व पुरस्कार दिए जाते हैं इसलिए बच्चों को पाठशालाओं से जोड़े रखना आसान हो गया है।

#### ● द्वादशवर्षीय श्रमण संस्कृति स्वाध्याय पाठ्यक्रम:-

हम सबने वह समय देखा है, जब ग्रन्थ अलमारियों में भरे रहते थे। आज भी कितने मंदिर ऐसे हैं जिनके शास्त्र भण्डारों में शास्त्र जीर्ण-शीर्ण हो गये, उनमें दीमक लग गई है, उनकी स्थिति दयनीय हो गई है। शास्त्रों के संरक्षण की दिशा में यद्यपि कुछ संस्थाओं ने कार्य किये हैं लेकिन अभी भी अनेक स्थानों पर शास्त्र जीर्ण-शीर्ण होते जा रहे हैं। वह समय ज्यादा पुराना नहीं है, जब तत्त्वार्थसूत्र का शुद्ध पाठ सुनाने वाले भी नहीं मिलते थे।

मशीनरी युग में रसोई घर के अधिकांश कार्य भी घंटों की जगह मिनटों में होने लगे हैं। बचने वाले समय का सदुपयोग की जगह दुरुपयोग स्पष्ट दिखाई दे रहा है। टी.वी. सीरियल क्या शिक्षा दे रहे हैं? इससे कोई अनजान नहीं है। 'खाली दिमाग शैतान का घर' ये कहावत सौ फीसदी यथार्थ और

सबकी अनुभूत है। साधु भले ही समाज से ज्यादा जुड़ा हुआ न रहता हो पर समाज तो साधु से जुड़े बिना सन्मार्ग पर नहीं रह सकती है। यह पंक्तियाँ ठीक ही हैं-

**गुरु कुलाल शिष कुम्भ है, गढ़ि गढ़ि काढे खोट ।**

**अंतर हाथ सहार दै, बाहर मारै चोट ॥**

दहेज प्रथा, गर्भपात, रात्रिभोजन, व्यसन, नशा आदि कितनी कुरीतियाँ /बुराईयाँ हैं, जो पूज्य गुरुदेव के उपदेशों से समाज से दूर हुई हैं। पूज्य मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज कुछ हटकर ही सोचते हैं। उनके उपदेशों से इन बुराईयों के किये गये परित्याग को कार्यकारी और स्थिर बनाने के लिए स्वाध्याय ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है। ऐसी स्थिति में पूज्य श्री ने विशेष रूप से शिक्षित बहू-बेटियों (एवं अन्य सभी के लिए) के लिए द्वादशवर्षीय श्रमण संस्कृति स्वाध्याय पाठ्यक्रम योजना को अपनी सत्प्रेरणा व शुभाशीष प्रदान किया। 'जैन बालबोध भाग' से लेकर 'तिलोपपण्णत्ती' जैसे महान् ग्रन्थों का स्वाध्याय करने का गृहस्थों ने तो आज तक सोचा भी नहीं था। पूज्य श्री के मुखारबिन्द से किशनगढ़ चातुर्मास-2017 में जब संतशिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के दीक्षा के 50 वर्षों की पूर्णता के निमित्त संयम स्वर्ण जयंती के पुनीत प्रसंग पर इस प्रकल्प की घोषणा हुई तो विद्वानों तक में यह चर्चा का विषय बन गया कि इन महान् ग्रन्थों का 12 वर्षों तक कौन स्वाध्याय करेगा ? पर पूज्य श्री की अपनी मौलिक विशेषता है कि वे ऐसे असाधारण कार्यों की अर्थक्रिया का आंकलन स्वयं कर लेते हैं और फिर वे एक सच्चे गुरु की दया और करुणा की भावना पूरित होकर निःस्वार्थ रूप से समाज के बीच उपदेश में कहते हैं तो वे कार्य इतने सफल हो जाते हैं कि जो बड़े-बड़े लोगों की कल्पना में आते भी नहीं हैं। इस पाठ्यक्रम में हमारे संस्थान कमेटी के सदस्यगण, बड़े-बड़े उद्योगपति, इंजीनियर्स, डॉक्टर्स, प्रोफेसर्स, शिक्षक, बैंककर्मी आदि भी स्वाध्याय कर रहे हैं, यह सब देखकर किस स्वाध्याय प्रेमी को गर्व नहीं होगा ? मात्र चार-पाँच महीने में ही छह हजार से ज्यादा लोगों ने इस पाठ्यक्रम में रजिस्ट्रेशन करा के श्रमण संस्कृति के इतिहास में एक नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया। भौतिकता की चकाचौंध में स्वाध्याय की ऐसी ललक भी जागृत की जा सकती है, इसकी कल्पना ही नहीं, दृढ़ विश्वास भी इस धरती पर किसी के मस्तिष्क में था, तो वे हैं- **प.पू. मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज**। मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूँ कि इस पुण्य प्रकल्प के प्रारम्भ से ही गुरुदेव के शुभाशीष पूर्वक मुझे इसकी रूपरेखा से लेकर क्रियान्वयन तक का कार्य करने का सुअवसर मिला।

एक बड़े से विश्वविद्यालय में जहाँ करोड़ों रुपये महीने के अनेक कर्मचारी कार्य करते हैं, उस कैम्पस में भी छह हजार एडमीशन होने में अनेक वर्ष लग जाते हैं। दिमाग की नसें थक जाती हैं, जब इसके बारे में विचार करते हैं। ऑफिस की स्टेशनरी, पाठ्यक्रम की नियमावली, ग्रन्थों का प्रकाशन, 24 घण्टे फोन कॉल्स, प्रवेश फॉर्म, फीस के रुपयों का लेखा-जोखा और रसीद भेजना, ग्रन्थ स्वाध्यायियों के पते पर भेजना आदि अनेक कार्य करने के बाद भी मात्र चार-पाँच महीने में ही छह हजार से ज्यादा लोगों का इस पाठ्यक्रम में रजिस्ट्रेशन हो जाना किसी चमत्कार से कम नहीं था और मैं बड़ी दृढ़ता पूर्वक कह सकता हूँ कि यह चमत्कार जिनशासन के परम प्रभावक गुरुदेव की साधना और उनकी निःस्वार्थ भावना से ही संभव हुआ है। इस पाठ्यक्रम में संस्थान कमेटी, प्रशासन,

कर्मचारियों के मार्गदर्शन तथा यथायोग्य सहयोग पूर्वक तत्कालीन द्वादश वर्षीय स्वाध्याय प्रभारी पं. विमल कुमार जैन शास्त्री, रामटौरिया ने अहर्निश कार्य करके संस्थान के प्रति कृतज्ञता एवं अपने नैतिक कर्तव्य का निर्वहन पूर्ण कर्मठता के साथ किया है। इसी प्रकार इस समय इस पाठ्यक्रम के प्रभारी पद पर पं. अभिषेक जैन शास्त्री, सागर एवं सहप्रभारी श्री अजित जैन आचार्य, एरौरा भी समर्पण के साथ कार्य कर रहे हैं।

अभी इस पाठ्यक्रम का पंचम वर्ष चल रहा है। इसमें अभी तक श्रमण संस्कृति सिद्धांत प्रवेशिका भाग-1, 2 व 3, छहढाला, बृहत्कथाकोष, इष्टोपदेश, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, आदिपुराण, द्रव्यसंग्रह, पद्मनंदि पंचविंशतिका, तत्त्वार्थसूत्र, पुरुषार्थसिद्धि उपाय, उत्तर पुराण, सर्वार्थसिद्धि एवं आलाप-पद्धति जैसे ग्रन्थों का हजारों श्रावक-श्राविकायें स्वाध्याय कर चुके हैं और कर रहे हैं तथा आगे भी राजवार्तिक, तिलोयपण्णत्ती जैसे ग्रन्थों का स्वाध्याय करेंगे। इस पाठ्यक्रम की सफलता का एक महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि इसके अंतर्गत रखे गये सभी ग्रन्थों की कक्षायें जूम एप पर ऑनलाइन अथवा यूट्यूब पर रिकार्डिड वीडियो के माध्यम से स्वाध्यायियों को सुगमता से उपलब्ध हो जाती है।

कभी-कभी सोचता हूँ कि एक व्यक्ति को भी यदि कोई स्वाध्याय के मार्ग में लगा देता है तो वह भी अवर्णनीय सातिशय पुण्य का भागी होता है, ज्ञानवरणी कर्म के क्षयोपशम का कारण बनता है, यहाँ तो पूज्य श्री की प्रशस्त प्रेरणा से हजारों श्रावक-श्राविकायें प्रतिदिन स्वाध्याय कर रहे हैं, तब उनके ज्ञानवरणी कर्म का कितना क्षयोपशम होगा ? इसका मैं वर्णन नहीं कर सकता हूँ लेकिन इतना कह सकता हूँ कि अज्ञानांधकार में डूबे संसारी प्राणियों के लिए सम्यग्ज्ञान रूपी दीपक से उनका पथ आलोकित करने वाले ऐसे संत की आत्मा एक दिन निश्चित रूप से केवलज्ञान ज्योति से तीनों लोकों को प्रकाशित करेगी। ऐसे ही संतों के स्वपरोपकारी व्यक्तित्व से ये पंक्तियाँ निःसृत भी होती हैं और सार्थक भी-

**अज्ञानतिमिरान्धानां, ज्ञानाञ्जनशलाकया ।**

**चक्षुरून्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥**

#### ● ग्रीष्मकालीन शिविर : सम्यग्ज्ञान का प्रचार-प्रसार

शिक्षा, संस्कृति और संस्कार का माध्यम युग के साथ प्राचीन काल से परिवर्तित होता रहा है। यद्यपि कुछ स्थानों पर पाठशालायें संचालित थीं और कुछ स्थानों पर पूज्य गुरुदेव की प्रशस्त प्रेरणा से नवीन पाठशालायें प्रारंभ हुई फिर भी बहुसंख्यक स्थानों पर नियमित पाठशालाओं का संचालन नहीं हो पा रहा है। आज पढ़ाई का बोझ इतना है कि बच्चों के पास खेलने का भी पर्याप्त समय नहीं है। ऐसी स्थितियों को दृष्टिगत करते हुए ग्रीष्मकालीन अवकाश में शिविरों को लगाकर विशेष रूप से बच्चों को जैनधर्म की शिक्षा के साथ उन्हें संस्कारित करने में अपेक्षित सफलता मिली है। प्रत्येक वर्ष सैकड़ों स्थानों पर शिविर लगते हैं, जिनमें हजारों बच्चे भाग लेकर जैनधर्म के विषय में जानते हैं।

हमारे संस्थान के अधिष्ठाता शिक्षागुरु स्मृतिशेष पं. श्री रतनलाल जी बैनाड़ा द्वारा जो उत्तर ही नहीं दक्षिण भारत में भी हजारों शिविरार्थियों की संख्या वाले शिविर संपन्न हुए और उन शिविरों से समाज में व्याप्त अज्ञान, अंध विश्वास, एकांतवाद, और गृहीत मिथ्यात्व आदि का निरसन हुआ है,

वह कभी भुलाया नहीं जा सकता है। यही कारण है कि उनके सान्निध्य में शिविर लगाने के लिए प्रायः प्रत्येक स्थान की समाज वर्षों तक प्रयत्न ही नहीं करती थी, प्रतीक्षा भी करती थी। उनके पढ़ाने की शैली, विषय प्रतिपादन की कुशलता, जिज्ञासाओं के समाधान की प्रामाणिकता, उनकी वाणी की मधुरता उनकी जैसी उनमें ही थी; अन्य किसी में दिखाई नहीं देती है।

पारस चैनल पर उनके अत्यंत लोकप्रिय 'ज्ञानशाला' कार्यक्रम में उनके द्वारा पढ़ाये गये ग्रन्थों से हजारों लोगों ने घर बैठे न मात्र स्वाध्याय किया है बल्कि मिथ्यात्व के मार्ग से भी स्वयं को मुक्त किया है। उनके द्वारा शुरू हुए शिविरों की सार्थकता ऐसी हुई कि कोटा, भोपाल, इंदौर, उदयपुर, जबलपुर, तारंगा जी, जयपुर, सागर, ललितपुर, कोपरगांव, बांसवाड़ा आदि स्थानों पर अनवरत रूप से प्रतिवर्ष शिविर लगाये जा रहे हैं।

शिविरों के संदर्भ में यह देखकर मन गदगद हो जाता है कि संपूर्ण देश की दिगम्बर जैन समाज में लगने वाले शिविरों में श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर के स्नातक विद्वान् पढ़ाते दिखाई देते हैं। श्रमण संस्कृति संस्थान की समाज को कितनी बड़ी और महत्वपूर्ण उपलब्धि है कि उत्तर से दक्षिण तक सर्वत्र लगने वाले शिविरों में इस संस्थान के स्नातक विद्वान् पढ़ाते मिलना तो लगभग तय ही है।

इन शिविरों के अंतर्गत बच्चों को अभिषेक और पूजन का विधिवत् प्रायोगिक रूप में शिक्षण दिया जाता है, जिससे हजारों बच्चों ने अभिषेक-पूजन करना सीखा है। शास्त्रों का संरक्षण, नवधा-भक्ति, शाकाहारी वस्तुओं की पहचान, भक्ष्याभक्ष्य का विवेक, गुणी और बड़ों की विनय, विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से धर्म और संस्कृति का ज्ञान, मेरी भावना, बारह भावना, सुप्रभात स्तोत्र, भक्तामर स्तोत्र आदि का ज्ञान इन शिविरों में कराया जाता है, जो आजीवन कार्यकारी है। इन शिविरों में जो बच्चे देवदर्शन, रात्रिभोजन त्याग आदि के छोटे-छोटे नियम भी लेते हैं, वे जीवन की दशा और दिशा बदल देते हैं। इन सबको देखकर किसी का ये दोहा स्मृतिपटल पर आ जाता है-

**घुटनों के बल चलते-चलते, पैर खड़े हो जाते हैं ।**

**छोटे-छोटे नियम एक दिन, बहुत बड़े हो जाते हैं ॥**

वैसे तो ये शिविर ग्रीष्मकालीन शिविर के नाम से प्रसिद्ध हैं लेकिन हमारे संस्थान से तैयार हुए और हो रहे स्नातक विद्वानों के कारण क्षेत्रीय स्थितियों के अनुसार शीतकाल या वर्षाकाल में भी शिविरों का सफल आयोजन हो रहा है। मुंबई, तारंगाजी जैसे स्थानों पर शीत- कालीन अवकाश में भी आयोजित होते हैं। आसाम की क्षेत्रीय परिस्थितियों के कारण वहाँ जुलाई में शिविर लगाये जाते हैं।

#### ● **आर्थिक उन्नति का सोपान : श्रमण संस्कृति संस्थान**

यत्र-तत्र सर्वत्र समाज के आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों को संपन्न बनाने के लिए कितने प्रकार की बातें की जाती हैं? क्या-क्या नहीं लिखा जाता है? कुछ तथाकथित समाज सुधारक तो पंचकल्याणकों, जिनमन्दिरों के निर्माण को भी प्रश्नचिह्नित कर देते हैं और उनकी बुद्धि के दिवालियापन की हद तो तब हो जाती है, जब एक साधु के लिए अनेक चौके लगने को ही अपव्यय तक कह देते हैं।

सन् 1996 से आज तक अपनी समाज में अनेक संस्थाओं और तथाकथित समाज सुधारकों के समूहों ने मिलकर भी उतने परिवारों की ऐसी आर्थिक प्रगति नहीं की होगी, जो इस संस्थान के कारण साक्षात् रूप से सैकड़ों और परोक्ष रूप से हजारों परिवारों की आर्थिक उन्नति हुई है। ये हस्तामलकवत् प्रत्यक्ष है। दान के क्षेत्र में हमारे संस्थान के स्नातक विद्वान् लाखों रुपये का दान सहर्ष दे रहे हैं। हमारे अनेक साथी स्नातक व्यापार भी कर रहे हैं, पं. अनुपम जैन शास्त्री धार, डॉ. पुलक जैन, जबलपुर, पं. श्री आशीष जैन शास्त्री (आवां) जैसे अनेक स्नातक विद्वान् तो अब सरकारी नौकरी को भी छोड़कर व्यवसाय में आगे बढ़ रहे हैं।

संस्थान में अधिकांश छात्र आर्थिक रूप से कमजोर स्थिति वाले आते हैं लेकिन यहाँ से शास्त्री बनने के बाद सबकी आर्थिक स्थिति जिस द्रुत गति से बेहतर हुई है, वह सबके सामने है। हम कुछ स्नातक एक दिन पूज्य गुरुदेव से चर्चा कर रहे थे, उसी के दौरान मैंने कहा-गुरुदेव! आपकी कृपा से हम लोगों की आर्थिक उन्नति भी खूब हुई है और हो रही है। पूज्य गुरुदेव ने उस समय जो बात कही उसने आत्मा को झकझोर दिया। गुरुदेव बोले- शैलेश बाबू! पूज्यवर आचार्य समंतभद्र स्वामी ने स्पष्ट रूप से कहा है कि धर्म से मात्र निःश्रेयस ही नहीं अभ्युदय सुख भी प्राप्त होता है। तीर्थंकर के गर्भ से ही अलौकिक बाह्य वैभव होना इसी धर्म का प्रतिफल है। 'परमार्थ' पद में ही 'अर्थ' समाहित है, 'अर्थ' के अनेक अर्थ हैं लेकिन धन-वैभव रूपी अर्थ भी उसमें निहित है। परमार्थ का कार्य करने से यदि अर्थ की वृद्धि हुई है तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है? गृहस्थ के परमार्थ के साथ अर्थ बढ़ना कोई आश्चर्य की बात नहीं है लेकिन अर्थ बढ़ने पर परमार्थ न छूट जाये इस बात का सदैव ध्यान रखना। आप लोग तो शास्त्री बन गये हो, शास्त्र भी पढ़ लिये हैं-

**यत्र भावः शिवं धत्ते, द्यौ कियद्वरवर्तिनी ।**

**यो नयत्याशु गव्यूतिं, क्रोशार्द्धं किं स सीदति ॥**

**(इष्टोपदेश, आ.पूज्यपाद, छन्द-4)**

तब प्राचार्य जी ने कहा कि- “ये सब पूज्य महाराज जी की श्रमण संस्कृति संरक्षी दूरदर्शी सोच के कारण ही संभव हुआ है। हाँ, हम तो इतना कह सकते हैं कि आप सब विद्यार्थियों के कारण समाज में हम लोगों को भी खूब सम्मान मिल रहा है। आप लोगों के कारण देश-विदेश में हम लोगों को भी लोग जानने लगे हैं। मैं इस बात को सुनकर आश्चर्यचकित रह गया। संस्थान के लिए जीवन समर्पित करने के बाद भी ऐसी निःकांक्ष स्थिति!!!

पूज्य श्री के उपकारों के अथाह समुद्र की बूँदों में एक बूँद ये भी है कि उन्होंने हम सबको शक्ति प्रमाण दान करने का संस्कार दिया और इसका प्रतिफल ही है कि हम सबकी श्रीवृद्धि अनवरत रूप से हो रही है। हममें से कुछ स्नातकों का तो कमाई के 10 प्रतिशत तक दान करने का पक्का नियम है और वे इस नियम का वर्षों से पालन भी कर रहे हैं।

### ● **अनेकांत का प्रचार और एकांत का परिहार:-**

‘मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना’ सूक्ति अति प्रसिद्ध है लेकिन मुझे लगता है कि इसके साथ ‘मुण्डे मुण्डे रुचेर्भिन्ना’ भी प्रत्यक्ष रूप से हम देखते हैं। सामान्य व्यक्ति की रुचि व्यक्तिगत होती है लेकिन विशेष व्यक्ति की रुचि मार्ग या कुमार्ग भी बन जाती है अथवा यूँ कहें कि मार्ग को भी कुत्सित और

कलंकित कर देती है। यदि वह रुचि सम्यक् है तब तो कोई समस्या ही नहीं लेकिन किसी की रुचि मार्ग विरुद्ध है, आगम विरुद्ध है, जिनशासन के विरुद्ध है, अनेकांत धर्म के विरुद्ध है तो प्रभावक व्यक्ति के कारण सामान्य जनसमूह उन्मार्ग पर चलने लगता है। एक मारीचि के उन्मार्ग पर चलने से कितने जीवों का अहित हुआ है, इसको लिखने की जरूरत नहीं है।

समाज के कुछ लोग एकांतवाद को समझ नहीं पा रहे थे तो कुछ लोग समझने के बाद भी कुछ कर नहीं पा रहे थे क्योंकि अब दशलक्षण जैसा पर्व है, यदि आपके पास दश धर्मों पर प्रवचन सुनाने के लिए किसी विद्वान् की व्यवस्था नहीं है तो हमें तो जो मिल रहा है, उसी को बुलायेंगे, ये तर्क ऐसा था कि उन लोगों का चुप रह जाना ही उनकी मजबूरी बन गई थी। उत्तम संयम धर्म के दिन संयम और संयमधारियों की उपेक्षा अच्छे-अच्छे मुनिभक्त सुनते थे और सुनकर कडवा घूंट सा पीकर रह जाते थे।

मुनिराजों के चित्रों को ग्रन्थों से हटाने की कुत्सित परंपरा, मुनिविरोधी लहर श्रमण संस्कृति के इतिहास में एक काला अध्याय लिख रही थी। जब ऐसी ही एक हृदय विदारक घटना पूज्य गुरुदेव को विदित हुई तो उस घटना ने पूज्य गुरुदेव को अंदर तक झकझोर दिया। यद्यपि पूज्य श्री समाज में फैले एकांतवाद से भली-भांति परिचित थे, उनके मनमाने सिद्धांतों का जो खण्डन पूज्य श्री ने आगमिक प्रमाणों से और अकाट्य तर्कों से किया है, वह सबके समक्ष रहा है और उसका सुफल भी सबके सामने है।

श्रमण संस्कृति में ऐसी विकृत विचार धारा को देखकर पूज्यश्री ने श्रमण संस्कृति-संपोषक विद्वानों के निर्माण के लिए शंखनाद कर दिया। उस शंखनाद का एक-एक शब्द श्रमण संस्कृति समर्थकों को झकझोर रहा था। गुरुदेव के उन दिनों के प्रवचनों ने समाज की सुषुप्त अंतश्चेतना को न मात्र जागृत किया बल्कि श्रमण संस्कृति की रक्षा के लिए तन-मन-धन से तैयार भी कर दिया। हम सबका सातिशय पुण्य योग यह रहा कि तत्कालीन सांगानेर संघी जी मंदिर कमेटी के सदस्यों ने पूज्य श्री की भावना को समझते हुए संस्थान निर्माण के लिए भूमि सौंप दी। ये भी हम सबका परम सौभाग्य था कि संस्थान के निर्माण और संचालन के निमित्त जिसने जो भी किया, सबका एक ही उद्देश्य था श्रमण संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन तथा एकांतवाद की विषबेल और गृहीत मिथ्यात्व की मार से समाज को बचाना।

कभी विचार कीजिए- चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज ने आचार्य कुन्दकुन्द भगवान् के आदेश- ‘पडिवज्जटु सामणं इच्छदि जदि दुक्खपरिमोक्खं’ का उपदेश समाज में दिया तो पचासों लोग संयम के मार्ग पर चल पड़े। संतशिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने भी यही उपदेश दिया तो सैकड़ों लोगों ने आचार्य कुन्दकुन्द भगवान् के आदेशानुसार दिगम्बरत्व को धारण कर लिया। आचार्य श्री अमृतचन्द्रसूरि ने भी प्रवचनसार की तत्त्वदीपिका टीका में मुनिदीक्षा की प्रेरणा देते हुए लिखा- ‘‘जैसे दुःखों से मुक्त होने के लिए मेरी आत्मा ने अर्हन्तादिक को नमस्कार करके जिस यतिमार्ग को अर्थात् श्रमणमार्ग को मैंने स्वयं अंगीकार किया है, उसी प्रकार

दूसरों का आत्मा भी यदि दुःखों से मुक्त होने का इच्छुक है तो उसे अंगीकार करो। उस श्रमणमार्ग को अंगीकार करने का जो यथानुभूत मार्ग है, उसकी प्रेरणा के लिए हम खड़े हैं।”

अब सोचने वाली बात ये है कि पीढ़ी-दर पीढ़ी आचार्य कुन्दकुन्द भगवान् की गाथाओं पर चर्चा करने वाले समूह में से क्या कोई दुःख से नहीं छूटना चाहता है? यदि दुःखों से छूटना चाहता है तो दिगम्बरत्व धारण क्यों नहीं? क्योंकि ये बात स्वयं आचार्य कुन्दकुन्द भगवान् ने कही है कि- दिगम्बरत्व के बिना दुःखों से छुटकारा नहीं। जब हम गंभीरता पूर्वक कल्पना करते हैं तो लगता है यदि दिगम्बर मुद्रा विहीन इसी विचारधारा की धारा में पूरा समाज बह जाये तो दिगम्बरत्व का क्या होगा? दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति की पहचान क्या कभी वस्त्रों के साथ हो सकती है?

एक और बात पर शान्ति से विचार करना होगा- समयसार जैसे आध्यात्मिक ग्रन्थों के स्वाध्याय की सार्थकता क्या मात्र स्वाध्याय करने से या संयम का मार्ग अंगीकार करने से? समयसार के स्वाध्याय का फल क्या? क्या चौथे गुणस्थान से चौथे गुणस्थान में आजीवन बने रहना समयसार के स्वाध्याय का वास्तविक फल हो सकता है? पुनश्च अधिक क्या कहा जाये? सोचिए, अगर यही धारा पूरे दिगम्बर समाज में आ जाये तो दिगम्बरत्व का क्या होगा?

पाठशाला में जैनधर्म का प्राथमिक ज्ञान लेने वाले बच्चे को भी द्रव्य की परिभाषा में सिखाया गया- गुणों के समूह को द्रव्य कहते हैं। द्रव्य का ये लक्षण कौन से शास्त्र से आया? पूज्य उमास्वामी महाराज ने तो स्पष्ट रूप से लिखा है- ‘गुणपर्ययवद् द्रव्यम्’। आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने पंचास्तिकाय में भी गुण और पर्याय से समन्वित ही द्रव्य कहा है। कहने को बहुत छोटी सी बात है लेकिन ये लक्षण जैनदर्शन को सांख्यदर्शन में बदल देता है।

समयसार में आध्यात्मिकता के उत्कर्ष का वर्णन करते-करते आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी भी चौंक गए, वे डर गए कि इस परम अध्यात्म की भाषा को पढ़ते-पढ़ते ऐसा न हो कि लोग एकांत से जीव को अकर्ता मान लें, इसलिए उन्होंने पाठकों को सावधान करते हुए लिखा-

**जीवेण सयं बद्धं ण सयं परिणमदि कम्मभावेण ।**

**जइ पुग्गलदव्वमिणं अप्परिणामी तदा होदि ॥**

**कम्मइयवग्गणासुय अपरिणमंतीसु कम्मभावेण ।**

**सारस्स अभावो पसज्जदे संखसमओ वा ॥**

(आचार्य कुन्दकुन्दकृत समयसार, गाथा-116-117)

अर्थात् पुद्गल द्रव्य जीव में न तो स्वयं बँधा है और न कर्म भाव से स्वयं परिणमन करता है। यदि ऐसा माना जाये तब तो वह अपरिणामी हो जायेगा और कर्मण वर्गणाएँ जब कर्म रूप परिणमन नहीं करेंगी तो संसार का अभाव हो जायेगा अथवा सांख्य मत का प्रसंग आ जायेगा ॥

**ण सयं बद्धो ण सयं परिणमदि कोहमादीहिं ।**

**जइ एस तुज्झ जीवो अप्परिणामी तदा होदी ॥**

**अपरिणमंतमिह सयं जीवे कोहादिएहिं भावेहिं ।**

**संसारस्स अभावो पसज्जदे संखसमओ वा ॥**

(आचार्य कुन्दकुन्दकृत समयसार, गाथा-121-122)

अर्थात् तेरा ऐसा मत है कि यह जीव कर्मों में न स्वयं बंधा है और न क्रोधादि रूप स्वयं परिणमन करता है तो अपरिणामी हो जायेगा और जब जीव क्रोधादि भाव रूप स्वयं परिणमन नहीं करेगा तो संसार का अभाव हो जायेगा अथवा सांख्य मत का प्रसंग आ जायेगा।

आचार्य कुन्दकुन्द भगवान् की इन गाथाओं को पढ़ने के बाद कौन समझदार व्यक्ति होगा जो अध्यात्म के नाम पर चल रहे एकांतवाद को स्वीकार करेगा? शुभोपयोग को धर्म नहीं मानने वाले क्या आचार्य कुन्दकुन्द और आचार्य अमृतचन्द्र के इन सूत्रों को भूल जाते हैं अथवा छिपा देते हैं। वैसे भूलना और छिपाना दोनों ही धार्मिक दृष्टि से अपराध की श्रेणी में आते हैं-

**भावंतिविहपयारं, सहासुहंसुद्धमेव णायव्वं ।**

**असुहं च अट्टरुहं, सुहधम्मं जिणवरिदेहिं ॥**

**(आचार्य कुन्दकुन्दकृत भावपाहुड, गाथा-76)**

अर्थात् जीवों के भाव तीन प्रकार के कहे गए हैं- शुभ, अशुभ और शुद्ध। इनमें से आर्तध्यान और रौद्रध्यान अशुभ भाव हैं तथा शुभभाव धर्मध्यान रूप है।

आचार्य अमृतचन्द्रसूरि बड़े स्पष्ट शब्दों में शुभोपयोग को धर्म कहते हैं- 'ततः शुभोपयोगिनोऽपि धर्मसद्भावाद् भवेयुः श्रमणाः।' अर्थात् शुभोपयोग का धर्म के साथ एकार्थ समवाय है इस कारण शुभोपयोगी भी धर्म के सद्भाव से श्रमण होते हैं।

सुनने और कहने में कितना अच्छा लगता है कि सिद्ध भगवान् के उपादान की योग्यता ही ऐसी है कि वे लोकाकाश के बाहर गमन नहीं करते हैं लेकिन आचार्य कुन्दकुन्द भगवान् के वचन क्या हैं? आगम क्या है? देखिए-

**जीवाणं पुग्गलाणं गमणं जाणेहि जाव धम्मत्थी ।**

**धम्मत्थिकाय अभावे ततो परदो ण गच्छंति ॥**

**(आचार्य कुन्दकुन्दकृत नियमसार, गाथा-184)**

अर्थात् जीव और पुद्गलों के गमन का कारण धर्म द्रव्य है। धर्मास्तिकाय के अभाव में ही जीव लोकाकाश से आगे नहीं जाता है। निमित्त और उपादान को लेकर समाज किस प्रकार से भ्रमित हो रहा है, इसको समझने के लिए आचार्य कुन्दकुन्द भगवान् की ये एक गाथा ही उनके लिए काफी है, जिनकी होनहार भली है, जो भव्य हैं, आसन्न भव्य हैं।

कितने लोगों के दिलो-दिमाग में ये बैठ गया है/बैठा दिया गया है कि मुनिराज वन में ही रहते हैं। मुनियों के चित्र, मुनिराजों पर सभी वीडियो आदि इसी प्रकार से फिल्मांकन किये गये, जिनमें मुनिराज को सिर्फ और सिर्फ वनवासी के रूप में ही दिखाया गया। इसका दुष्परिणाम ये हुआ कि कुछ लोग तो इसलिए वर्तमान के साधुओं को साधु ही नहीं मानते क्योंकि अभी तो साधु संतशालाओं, नसियां, तीर्थक्षेत्र, ग्राम-शहर आदि स्थानों पर प्रवास करते हुए देखे जाते हैं। अब इस विषय में आचार्य कुन्दकुन्द क्या कहते हैं? इसको देखने का श्रम कौन करे? यही श्रम करने के लिए शायद हम स्नातकों को तैयार किया गया है। देखिए-

**सुण्णहरे तरुहिट्टे उज्जाणे तह मसाणवासे वा ।**

**गिरिगुह गिरिसिहरे वा भीमवणे अहव वसिदो वा ॥**

### (आचार्य कुन्दकुन्दकृत चारित्रपाहुड, गाथा-41)

अर्थात् वे मुनि, शून्यगृह में, वृक्ष के अधस्तल में, श्मशान में, पहाड़ की गुफा में, पहाड़ के शिखर पर, भयंकर वन में अथवा वसतिका में रहते हैं।

**जहजायखूवसरिसो अवलंबियभुय णिराउहा संता ।**

**परकियणिलयणिवासा पव्वज्जा एरिसा भणिया ॥**

### (आचार्य कुन्दकुन्दकृत चारित्रपाहुड, गाथा-50)

अर्थात् जिसमें सद्यःजात बालक के समान नग्न रूप धारण किया जाता है, भुजायें नीचे की ओर लटकाई जाती हैं और जिसमें दूसरे के द्वारा बनाई हुई वसतिका में निवास किया जाता है, ऐसी जिनदीक्षा कही गई है। बुद्धिमान् भव्य जीव समझ सकते हैं कि मुनिराज को मात्र वनवासी-वनवासी कहना ये आचार्य कुन्दकुन्द की देशना के साथ एक प्रकार का छल है।

- **मुनि के उद्दिष्ट त्याग की अवधारणा का यथार्थः-** दिगम्बर साधु (आचार्य, उपाध्याय, मुनि) उद्दिष्ट आहार के त्यागी होते हैं। वर्तमान में उद्दिष्ट त्याग के बारे में कुछ लोग भ्रमित हैं। साधु के लिए चौका लगाने का नाम उद्दिष्ट दोष नहीं है। किसी को उद्देश्य करके जो आहार बनाया जाता है; वह उद्दिष्ट आहार कहलाता है। ऐसा आहार सदोष माना जाता है और दिगम्बर साधु ऐसा आहार ग्रहण नहीं करते हैं। इसके सही ढंग से न समझने के कारण अनेक लोग आज के साधुओं को उद्दिष्टदोषी कहकर उन्हें अपूज्य बता देते हैं। ऐसे लोग श्रमण संस्कृति के विरोधी हैं तथा श्रमण संस्कृति के विध्वंशक हैं; क्योंकि आगम, इतिहास और तर्क बिल्कुल अलग हैं। यदि कोई व्यक्ति चौका लगाता है और उस चौके में बनाया गया भोजन साधु के न आने पर वह भोजन स्वयं न खाकर पशुओं को फेंक देता है अथवा किसी भी रूप में नष्ट कर देता है; ऐसा आहार उद्दिष्ट के अन्तर्गत आता है। कोई साधु स्वयं अपने निमित्त से आहार बनवाते हैं अथवा श्रावक द्वारा बनाये गये आहार की मन, वचन, काय से अनुमोदना करते हैं और साधु ऐसे आहार को ग्रहण करता है तो साधु को उद्दिष्ट का दोष लगता है। हमेशा से साधु के आहार हेतु चौके लगते आये हैं। चक्रवर्ती भी चौका लगाता है। चक्रवर्ती का गरिष्ठ आहार कोई साधु नहीं कर सकते हैं, ऐसी स्थिति में साधु का चौका ही लगता है फिर भी वह आहार सदोष नहीं होता है। **आचार्य कुन्दकुन्द भगवान्** जब पाँच सौ शिष्यों के साथ गिरनार यात्रा पर गए होंगे तो क्या रास्ते में चौके नहीं लगे होंगे? जब आदिनाथ भगवान् को आहार नहीं मिला और राजा श्रेयांस और सोम ने लक्ष्य करके ही चौका लगाया था तो क्या आदिनाथ भगवान् ने उद्दिष्ट आहार ग्रहण किया था? जब पूज्य **अकम्पनाचार्यादि** सात सौ मुनिराजों का उपसर्ग दूर हुआ और घर-घर में चौके लगे तो वे उन्हीं मुनिराजों के लिए ही लगाये गये थे। मुनि के निमित्त चौका लगाना दोषप्रद नहीं है अपितु मुनि को ही उद्देश्य करके आहार बनाना सदोष है।

यदि मुनिराज के लिए चौका लगाना ही सदोष हो जायेगा तो फिर औषधि दान का क्या होगा? किन्हीं मुनिराज की बीमारी की दशा में उन्हें औषधि कैसे दी जायेगी? औषधि आहार रूप भी होती है। मुनिराज की प्रकृति के अनुरूप भी आहार बनाना श्रावक का विवेक माना जाता है। किन्हीं मुनिराज ने दस दिन के उपवास किए हैं, किन्हीं ने मासोपवास किया है तो क्या उनके पारणे के अनुसार आहार

नहीं बनाया जायेगा ? या किसी भी चीज से पारणा कराया जा सकता है ? किन्हीं महाराज की पाचन शक्ति कमजोर हो तो क्या श्रावक इसे ध्यान में रखकर आहार नहीं बनायेगा ? जो चौका लगाते हैं; उन्हें इस बारे में ज्ञान और विवेक होता है। जिन महाराज ने सल्लेखना धारण कर ली है, मात्र छाछ ले रहे हैं, आहार के लिए श्रावक के घर आते हैं तो क्या उन्हें श्रावक छाछ बनायेगा तो मुनिराज को दोष लगेगा ? ऐसी कितनी स्थिति हैं, तर्क हैं, जो सिद्ध करते हैं कि मुनिराज के लिए चौका लगाना दोषपूर्ण नहीं है; मात्र मुनिराज के लिए ही आहार बनाना सदोष है। आचार्य कुन्दकुन्द भगवान् ने रयणसार में इस संदर्भ में स्पष्ट रूप से कहा है-

**सीदुणहवाउपिउलंसिलेसिमंतहपरीसमव्वाहिं ।**

**कायकिलेसुव्वासं जाणिज्जे दिण्णए दाणं ॥**

अर्थात् मुनि की शीत या ऊष्ण, वात, पित्त, कफ प्रधान प्रकृति तथा परिश्रम, व्याधि, कायक्लेश और उपवास जानकर दान देना चाहिए। हमें तो अपेक्षा होती है कि साधुजन हमारे घर पर आहार के निमित्त आयें। जब साधु आहार के निमित्त पधारेंगे तभी तो हमारे मन में दिगम्बर मुनि बनने की भावना प्रबल होगी।

आचार्य कुन्दकुन्द भगवान् की आत्मा भी जहाँ से देखती होगी, वह भी आश्चर्यचकित रह जाती होगी कि मैंने क्या लिखा था और क्या हो गया ? अकालमरण का निषेध करके समयसार की गाथायें मानो प्रश्नचिह्नित सी हो गई हैं। वे गाथायें पुकार-पुकार करके पूछती हैं, कोई बताये तो सही कि इनमें अकालमरण का निषेध कहाँ किया गया है ? लेकिन एक उक्ति है- 'कहीं की ईट, कहीं का रोड़ा, भानुमती ने कुनबा जोड़ा' ये उक्ति यहाँ पूरी तरह फिट बैठती है। अरे ! मरण तो आयु के क्षय से ही होता है लेकिन आयु का क्षय किन कारणों से हो सकता है ? इस पर तो विचार कीजिए।

वैसे हम सौभाग्यशाली हैं कि स्वयं आचार्य कुन्दकुन्द देव ने ही अकालमरण का विधान किया है। अब हमारा एक मित्र पं. आनंद जैन शास्त्री, बार-ललितपुर तो व्यंग्य शैली में कहता है कि मित्र ! कुछ भी कहो उन लोगों की दृढ़ता तो श्लाघनीय है, जो इतने स्पष्ट सिद्धांत को भी उपेक्षित ही नहीं बल्कि निर्मूल कर देते हैं। देखिए अकालमरण के बारे में आचार्य कुन्दकुन्द भगवान् की वाणी-

**विसवेयणरत्तक्खय भयसत्थग्गहणसंकिलेसाणं ।**

**आहारुस्सासाणं णिरोहणा खिज्जए आऊ ॥**

**हिमजलणसलिलगुरूयरपव्वयतरुहणपडणभंगेहिं ।**

**रसविज्जजोयधारणा अणयपसंगेहि विविहेहिं ॥**

**इय तिरियणमणुयजम्मे सइरं उवज्जिऊण बहुबारं ।**

**अवमिच्चुमहादुक्खं तिव्वं पत्तोसि तं मित्त ॥**

**(आचार्य कुन्दकुन्दकृत भावपाहुड, गाथा-25-27)**

अर्थात् विषवेदना, रक्तक्षय, भय, शस्त्रग्रहण, संक्लेश, आहारनिरोध, श्वासोच्छ्वास-निरोध, बर्फ, अग्नि, पानी, बड़े पर्वत से अथवा वृक्ष पर चढ़ते समय गिरना, शरीर का भंग, रसविद्या के प्रयोग से और अन्यान्य के विविध प्रसंगों से आयु का क्षय हो जाता है। हे मित्र ! इस प्रकार तिर्यच और

मनुष्यगति में उत्पन्न होकर चिरकाल से अनेक बार अकालमृत्यु का अत्यन्त तीव्र महादुःख तूने प्राप्त किया है।

आचार्य कुन्दकुन्द भगवान् की इतनी स्पष्ट देशना के बाद भी यदि कोई अकालमरण का निषेध कर लेता है और फिर भी आचार्य कुन्दकुन्द का प्रचारक माना जाता है तो इसे भी हुण्डावसर्पिणी का एक दोष ही मानकर संतोष कर लेना श्रेयस्कर है। वैसे एक बार वाचना के समय जब एक विद्वान् ने अकालमरण के निषेध में तर्क प्रस्तुत किया कि निश्चयनय की अपेक्षा अकालमरण नहीं होता है तो संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने कहा कि पं. जी! निश्चय नय की अपेक्षा तो मरण ही नहीं होता है, अकालमरण तो बहुत दूर की बात है। आ.श्री. के आगम सम्मत तर्क को सुनकर वहाँ उपस्थित सब लोगों की धारणा अकालमरण के प्रति सही हो गई।

जिन लोगों को एकांत रूप से ऐसा ही लगने लगा हो अथवा जिन्होंने सिद्ध-बुद्ध-शुद्ध की ही धूनी रमा रखी हो, उन्हें आचार्य कुन्दकुन्द भगवान् के इन शब्दों पर भी कभी विचार करने का श्रम कर लेना चाहिए-

**णिस्सेसदोसरहिओ केवलणाणाइपरमविभजुदो ।**

**सो परमप्पा उच्चइ तव्विवरीओ ण परमप्पा ॥**

(आचार्य कुन्दकुन्दकृत नियमसार, गाथा-4)

अर्थात् जो क्षुधादिक दोषों से रहित हैं तथा केवलज्ञान आदि परम वैभव से युक्त हैं, वह परमात्मा कहा जाता है; उससे जो विपरीत है वह परमात्मा नहीं है।

समयसार में ही कितनी गाथाओं की एक पंक्ति में निश्चयपरक तो दूसरी पंक्ति में व्यवहारपरक वर्णन किया गया है, इसको देख लेना चाहिए। यह देखने के बाद कौन ऐसा होगा जो निश्चय और व्यवहार में एक नय की अपेक्षा और दूसरे नय की उपेक्षा करने का दुःसाहस कर सकेगा? मात्र निश्चयनय को ही परमार्थभूत मानकर समयसार को आत्मसात् करने का भ्रम पालने वाले महानुभावों को आचार्य कुन्दकुन्द भगवान् के समयसार की उन गाथाओं को एक बार ईमानदारी से पढ़ने और स्वीकार करने का प्रयास करना चाहिए। देखिए-

**कम्मं बद्धमबद्धं जीवे एवं तु जाण णयपक्खं ।**

**पक्खातिक्कंतो पुण भण्णदि जो सो समयसारो ॥**

(आचार्य कुन्दकुन्दकृत समयसार, गाथा-142)

अर्थात् जीव में कर्म बँधे हुए हैं अथवा नहीं बँधे हुए हैं, ऐसा तो नय पक्ष जानो और जो इस पक्ष से अतिक्रान्त-दूरवर्ती कहा गया है, वह समयसार है। इतना ही नहीं, वे निष्कर्ष रूप में लिखते हैं कि नय तत्त्व को जानने मात्र के साधन हैं। इनमें भेद-भाव करना उचित नहीं है। नय पक्ष से अतिक्रान्त-दूरवर्ती कौन है? इसका उत्तर भी स्वयं आचार्य कुन्दकुन्द भगवान् ने अगली ही गाथा में दिया है-

**दोण्हवि णयाण भणियं जाणइ णवरं तु समयपडिबद्धो ।**

**ण दु णयपक्खं गिण्हदि किंचिवि णयपक्खपरिहीणो ॥**

(आचार्य कुन्दकुन्दकृत समयसार, गाथा-143)

अर्थात् जो पुरुष अपने शुद्ध आत्मा से प्रतिबद्ध हो दोनों ही नयों के कथन को केवल जानता है; किन्तु किसी भी नय पक्ष को ग्रहण नहीं करता है, वह नय पक्ष से परिहीन है।

चंद लोगों की कोरे अध्यात्म की रुचि ने समाज में एकांतवाद पोषक एक नये वर्ग को तैयार कर दिया। इस वर्ग की व्याख्यायें सुनकर आचार्य कुन्दकुन्द भगवान् जैसी आत्मायें भी देखकर दंग रह जाती होंगी कि उनके अनेकांतात्मक सूत्रों की ऐसी एकांगी व्याख्या कैसे हो सकती है? सिद्धांत कहता है कि 'चारित्तं णत्थि जदो अविरद अंतेसु ठाणेसु' अर्थात् चतुर्थ गुणस्थान तक चारित्र नहीं होता है। 'राग-द्वेष निवृत्त्यै चरणं प्रतिपद्यते साधुः', चतुर्थ गुणस्थान का नाम ही अविरत सम्यक्त्व है फिर भी चतुर्थ गुणस्थान में चारित्र, चारित्र ही नहीं वीतराग चारित्र, रत्नत्रय से बंध, वर्तमान मुनियों की नवधा भक्ति की परम उपेक्षा, जब जो जैसा जहाँ जिसके द्वारा होना है, वह वैसा ही होगा; ऐसी मान्यता को सिद्धांत ग्रन्थों में नियतिवाद मिथ्यात्व कहा गया है लेकिन इस वर्ग का तो ऐसी मान्यता ही मूल आधार है, व्यवहार को निश्चय का कारण न मानना, 'सुविदिदपयत्थसुत्तो संजमतवसंजुदो विगदरागो। समणो सम सुहदुक्खो भणिदो सुद्धोवओगो त्ति॥' आचार्य कुन्दकुन्द के इतने स्पष्ट वचनों के बाद भी चतुर्थ गुणस्थान में शुद्धोपयोग मानना और फिर भी आचार्य कुन्दकुन्द का परम अनुयाई बताना समझ से परे है। जो प्राकृत की गाथायें नहीं समझ सकते हैं, उनके लिए पं. दौलतराम जी ने उक्त गाथानुरूप हिन्दी पद्य में लिख दिया- 'द्विविध संग बिन सुध उपयोगी, मुनि उत्तम निज ध्यानी', उसके बाद भी चौथे गुणस्थान में शुद्धोपयोग की सिद्धि में लगे हुए हैं, कम से कम आचार्य कुन्दकुन्द की गाथाओं का मान तो रखना चाहिए। उन्होंने शुद्धोपयोगी के बारे में कितने साफ शब्दों में लिखा है- **सुद्धोपयोगी णिरासवो** अर्थात् शुद्धोपयोगी निरास्रवी होता है, अब चतुर्थ गुणस्थान में तो आस्रव रहित अवस्था होती ही नहीं है। सर्वत्र निमित्त की उपेक्षा, सर्वत्र और सर्वदा चतुर्थ गुणस्थान के गीत, '**णग्गो वि मोक्खमग्गो**' अर्थात् नग्नता ही मोक्षमार्ग है; का शंखनाद करने वाले आ. कुन्दकुन्द भगवान के भक्त वस्त्रधारियों के मोक्षमार्ग आखिर मान कैसे सकते हैं? लेकिन वर्षों से समाज में ये सब चल रहा है। अनेक लोग इस एकांत की मखमल लगी पत्थर की पालकी में सवार होकर एकांत की बाढ़ के प्रवाह में बह गए लेकिन उनमें से हम जैसे बहुत से लोगों का ऐसा सातिशय पुण्य उदय आया कि अनेक साधुवृंद, सिद्धांत और अध्यात्म के ज्ञाता विद्वज्जनों के माध्यम से अनेकांत की नाव का हमें सहारा मिला और आज हम अनेकांत धर्म से अनुप्राणित होकर मनुष्य पर्याय को सार्थक कर रहे हैं।

सांगानेर संस्थान ने एकांतवाद के अंधेरे में भटकते जा रहे लोगों को अनेकांत रूपी ऐसे ज्ञानदीप का प्रकाश दिया कि आज हजारों लोग एकांतवाद के अंधेरे की भटकन से निकलकर जिनशासन के मूलमार्ग (अनेकांतवाद) पर आ गये हैं और आ रहे हैं। आचार्य कुन्दकुन्द भगवान् के नाम पर कितना छल परोसा गया, इसको चारों अनुयोगों को एक समान प्रामाणिक मानने वाले ग्रन्थों के जानकार ही समझ सकते हैं। बीसवीं-इक्कीसवीं सदी के सभी साधु-आचार्यों ने इस एकांत मत को जिनशासन के प्रतिकूल और आगम विरुद्ध ही बताया है।

सांगानेर संस्थान में समयसार के स्वाध्याय से पूर्व समयसार में प्रवेश की कुंजी स्वरूप अनेक लघु ग्रन्थों का ज्ञान कराया जाता है। न्यायदीपिकाकार श्रीमदभिनवधर्मभूषण जैसे न्यायज्ञ आचार्य ने इस बात की घोषणा की कि 'तत्र बालानां नाधिकारः' अर्थात् न्याय के बड़े-बड़े ग्रन्थों को पढ़ने का

अधिकार बालबुद्धि जीवों को नहीं है। इसी प्रकार बाल जीवों (मतिकृत बाल) को समयसार भी नहीं पढ़ना चाहिए। समयसार जैसे ग्रन्थों को पढ़ने से पूर्व द्रव्यसंग्रह-इष्टोपदेश जैसे ग्रन्थों का ज्ञान अनिवार्य है, गुणस्थान, मार्गणा आदि का ज्ञान अनिवार्य है। परम पूज्य मुनिपुंगव श्री के निर्देशानुसार संस्थान में क्रमिक स्वाध्याय के कारण हम लोग आचार्य कुन्दकुन्द की 'पसज्जदे संखसमओ वा' आशंका की आग में झुलसने से बच गए।

हम सब स्नातकों की ऐसे अनेक लोगों से चर्चा हुई, जो उक्त एकांत मतों में अनुरक्त थे लेकिन जब उन्हें ग्रन्थों की गाथायें बताई गईं तो उन्होंने अपनी धारणाएँ बदलते हुए वास्तविक अनेकांत धर्म को धारण किया। श्रमण संस्कृति संस्थान के ज्ञानरूपी दीप से हम सबके दीपक जले और दीप से दीप जलने का तथा अज्ञानांधकार हटने का यह पुण्यकार्य अनवरत रूप से चल रहा है।

एक दिन हम कुछ स्नातक पूज्य श्री के कक्ष बैठे हुए थे, मैंने पूज्य गुरुदेव से पूछा कि गुरुदेव! हम स्नातकों को जिनशासन की प्रभावना के लिए ऐसी कोई नीति बताइए, जो सदैव संस्थान के श्रमण संस्कृति मूलक उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में हम सबके मनोमस्तिष्क में बनी रहे, तब पूज्य गुरुदेव ने एक दोहा बोला और कहा इसे याद रखो-

**एक दीपक तुम जलाओ, एक दीपक हम जलायें ।**

**कुछ अंधेरा तुम भगाओ, कुछ अंधेरा हम भगायें ।।**

#### ● **दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संवर्धक विद्वत्परंपरा का पुनरुद्धार:-**

वर्तमान शासन नायक भगवान् महावीर के शासन में श्रमण और श्रावक के आधारभूत भेद से धर्म को द्विविध कहा गया है लेकिन दोनों की संस्कृति एक ही है, वह है- **श्रमण संस्कृति**। इसके पीछे धार्मिक, वैज्ञानिक और तार्किक हेतु यह है कि गृहस्थों का ऐसा कोई चिह्न नहीं है, जिसके आधार पर श्रावक संस्कृति चल सके। दिगम्बरत्व रूप प्रथम लिंग, उत्कृष्ट श्रावक के रूप में द्वितीय लिंग और आर्यिकाओं का तृतीय लिंग आगम में कहा गया है क्योंकि इन सबके **मयूर पिच्छी** रूप चिह्न अनिवार्यतः होता है। हाँ, इनके अनुगामी गृहस्थों को श्रमण संस्कृति में इसलिए परिगणित किया जाता है क्योंकि वे इसी संस्कृति में अपना कल्याण मानते हैं, इसी को अपना आदर्श मानते हैं।

दिगम्बर जैन श्रमणों की दुर्धर चर्या से आज सब सुपरिचित हैं। उनके आवागमन संबंधी भी अपनी मर्यादायें निश्चित हैं, उनके समाज के बीच व्यवहार की भी सीमायें निश्चित हैं और उनके आवश्यक भी निश्चित समय पर अनिवार्य हैं। इन सबके चलते सर्वत्र रहने वाली समाज में धर्म और दर्शन के प्रचार का कार्य विद्वानों द्वारा होता आया है। इसीलिए विद्वानों को समाज और साधु के बीच का सेतु भी कहा जाता है। चूंकि प्रचलित शब्दावलि में विद्वान् सागर होते हैं, ऐसी स्थिति में वे भी श्रमण संस्कृति में ही परिगणित होते हैं, यदि उन विद्वानों की श्रद्धा

श्रमणों के प्रति है तो। ये बात जगजाहिर है कि कुछ वर्षों में उन विद्वानों की संख्या तेजी से बढ़ गई, जो वर्तमान के श्रमणों के प्रति नवधा भक्ति आदि रूप गुरु उपासना और दान-पूजा जैसे परम आवश्यक कर्तव्य विहीन थे, दूसरी ओर वे विद्वान् कम होते जा रहे थे, जिनकी वर्तमान श्रमणों के प्रति श्रद्धा थी। ऐसी स्थिति में दिगम्बरत्व रूप श्रमण संस्कृति अपनों द्वारा ही उपेक्षा की शिकार हो रही थी। दूसरों से श्रमण संस्कृति के संवर्धन की तो सोच भी कैसे सकते थे? किन्तु इतिहास साक्षी है कि मूल दिगम्बर

जैन श्रमण संस्कृति पर जब भगवान् महावीर के बाद काले बादल छाये, तब आचार्य भद्रबाहु स्वामी ने, आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने इस संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन किया, इसी प्रकार समय-समय पर आचार्य समंतभद्र, आचार्य अकलंकदेव, आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज आदि ने इस श्रमण संस्कृति की ज्योति को भेदक हवाओं से बचाकर रखा।

बीसवीं सदी के अन्त में विद्वानों का समाज पर अच्छा प्रभाव रहा है। विद्वान् जिस दिशा में समाज को मोड़ देते हैं, समाज उस दिशा में मुड़ता चला जाता है। सन् 1996 में गुलाबी नगरी में मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज का चातुर्मास के रूप में श्रमण संस्कृति के लिए तो एक नये सूर्य का ही उदय हुआ था, जिसकी अनेकांत ज्ञानरूप दिव्य ज्योति से ज्योति जलाकर उन विद्वानों का निर्माण हुआ, जो एकांत के अंधकार में भटक चुकी समाज को अनेकांत की दिव्य ज्योति से आलोकित कर उन्हें सन्मार्ग दिखाने में सफल हुए।

साधुओं को मूलतः अपने चारित्र का पालन करना होता है लेकिन विद्वान् को ज्ञान के प्रचार-प्रसार का ही मूल लक्ष्य होता है फिर उस ज्ञान का प्रचार ही समाज में पूज्य के प्रति श्रद्धा और अश्रद्धा उत्पन्न करने का कारण बनता है। इसलिए विद्वानों में श्रमण संस्कृति संपोषक विद्वानों की परंपरा का पुनरुद्धार करने के लिए गुरुदेव ने जो शंखनाद किया, उसका सुफल आज सबके सामने है। अब श्रमण संस्कृति संपोषक तत्त्वविद्या अध्येता विद्वानों की संख्या श्रमण संस्कृति अनुरक्तों को संतोष कराती है। तत्त्वज्ञान के अभाव का दुष्परिणाम बताते हुए कहा गया है-

**जावंतविज्जापुरिसा, सव्वे ते दुक्ख संभवा ।**

**लुप्पंति बहुसो मूढा, संसारम्भि अणंतए ॥**

(उत्तराध्ययन, 6/1)

अर्थात् जितने भी अज्ञानी-तत्त्वबोधहीन पुरुष हैं, वे सब दुःख के पात्र हैं। इस अनंत संसार में वे मूढ़ प्राणी बार-बार विनाश को प्राप्त होते रहते हैं।

इस श्रमण-संस्कृति-संवर्धक विद्वत्परंपरा का सुखद पहलू ये है कि सम्पूर्ण देश में कहीं भी विद्वत्संगोष्ठी/सम्मेलन/अधिवेशन होता है तो निश्चित तौर पर उसमें सांगानेर संस्थान के युवा विद्वान् होते ही होते हैं। ज्ञान की चर्चा के लिए विद्यानुरागी बड़े से बड़े आचार्यों, साधुओं और आर्यिकाओं के मंच हम स्नातक विद्वानों के लिए ससम्मान सदैव खुले हुए हैं। श्रवणबेलगोला महामस्तकाभिषेक-2018 के विद्वत्सम्मेलन में जब आगमिक सिद्धांतों पर गहन चर्चा हुई तो सांगानेर के हमारे साथी विद्वानों ने आगम के प्रमाणों को प्रस्तुत करते हुए आगम विरुद्ध मान्यताओं का पाँच सौ से अधिक विद्वानों की उपस्थिति में जो खण्डन किया, उसे आगमज्ञों ने खूब सराहा।

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् व शास्त्र परिषद् के अधिकांश युवा विद्वान् तो हमारे सांगानेर संस्थान के स्नातक ही हैं। दोनों ही परिषदों के वरिष्ठतम विद्वान् बड़े- बड़े मंचों पर भी यह कहते हुए आत्मसंतुष्टि का अनुभव करते हैं कि श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर से तैयार हो रहे आगमनिष्ठ विद्वानों के कारण भविष्य में विद्वानों की कमी नहीं रहेगी।

विद्वानों की भूमिका अनेक प्रकार से अनेक रूपों में होती है। उच्च शिक्षा के माध्यम से छात्रों, शोधार्थियों एवं विश्वविद्यालय स्तर पर विभिन्न विषयों के विद्वानों के बीच जैनदर्शन के सिद्धांतों का

प्रतिपादन करना भी हमारे धर्म और संस्कृति की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। जब से विश्वविद्यालयों में जैनदर्शन के मूर्धन्य विद्वान् पदस्थ हुए हैं और उन्होंने जैनदर्शन के आस्तिक स्वरूप को जैनेतर विद्वानों के बीच प्रस्तुत किया है, उसका सुफल ये हुआ कि वे जैनेतर विद्वान् भी अब बेहिचक बड़े-बड़े मंचों से जैनदर्शन के आस्तिक होने की बात दृढ़ता पूर्वक करते हैं। हमारे संस्थान से भी अनेक साथी विद्वान् विश्वविद्यालय और महाविद्यालय स्तर पर पदस्थ होकर उच्च शिक्षा में जैनदर्शन के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

संस्थान के प्रथम बैच के स्नातक डॉ. ज्योतिबाबू जैन; जो कि मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय में जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग में सम्प्रति विभागाध्यक्ष हैं, डॉ. आनंदकुमार जैन, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में जैनदर्शन के असिस्टेंट प्रोफेसर हैं, डॉ. राजेन्द्र चिंतामणी जैन नागपुर विश्वविद्यालय में श्री सन्मति जैन वर्धा विश्वविद्यालय में, डॉ. राकेशकुमार जैन राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, केन्द्रीय विश्वविद्यालय जयपुर परिसर में, डॉ. आलोककुमार जैन राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, केन्द्रीय विश्वविद्यालय भोपाल परिसर में, श्री दि. जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय में पं. श्री सतीश जी जैन, पं. श्री विनोद जी जैन, पं. श्री विनयकुमार जैन आदि संस्कृत एवं प्राकृत विषयों के व्याख्याता हैं। वास्तु के क्षेत्र में डॉ. मुकेश जैन 'विमल' दिल्ली में उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं। जैनविद्या के प्राचीन केन्द्र वीरसेवा मन्दिर दरियागंज-दिल्ली में भी श्री ऋषभ कुमार जैन शास्त्री, उपनिदेशक पद पर कार्यरत हैं। एवं सैकड़ों स्नातक देश के विभिन्न राज्यों में माध्यमिक, पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में केन्द्र व राज्य सरकार के अन्तर्गत नवीन युवा पीढ़ी को नैतिक शिक्षा दे रहे हैं।

समय-समय पर ज्ञान के प्रचार-प्रसार के माध्यम भी बदलते रहते हैं इसलिए यह भी आवश्यक है कि यदि आपको अपने धर्म और दर्शन का प्रचार-प्रसार करना है, उस ज्ञान को संरक्षित और संवर्धित करना है तो सामयिक माध्यमों के जानकार विद्वानों का निर्माण अत्यंत आवश्यक है। आज कम्प्यूटर/इंटरनेट का सहारा लिये बिना हम अपने शास्त्रों, साहित्य, संस्कृति, संस्कारों आदि को भविष्य के लिए संरक्षित नहीं कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में हमारे संस्थान में कम्प्यूटर की शिक्षा देकर छात्रों को शिक्षित-प्रशिक्षित किया जाता है, जिसका सुफल है कि ये युवा विद्वान् समाज में कम्प्यूटर आधारित विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं (के.बी.सी. आदि की तर्ज पर) आदि के माध्यम से समाज की नई पीढ़ी को सरलता पूर्वक धर्म का ज्ञान करा देते हैं।

### ● **स्नातक विद्वत्संगोष्ठी : शोधपरक दृष्टि**

निश्चित रूप से हमारे संस्थान में छात्रों को श्रमण संस्कृति संरक्षी आगमनिष्ठ विद्वान् बनाने का ध्येय रहता है परंतु सभी स्नातक इस क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए शोध परक कार्य कर सकें; ऐसा सबके लिए तो संभव नहीं है फिर भी विद्वत्ता के साथ शोध-क्षेत्र में और भी आगे बढ़ने वाले स्नातक विद्वानों को तत्संबंधी विभिन्न दृष्टिकोणों से परिपक्व बनाने के लिए पूज्य श्री की सन्निधि में आचार्य प्रणीत किसी एक ग्रन्थ पर दो दिवसीय स्नातक विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन किया जाता है। इसमें जो साथी विद्वान् बड़े विद्वानों की गोष्ठियों में सम्मिलित होने योग्य हो जाते हैं, वे देश के मूर्धन्य विद्वानों की संगोष्ठियों में सम्मिलित होकर अपने शोध पत्र प्रस्तुत करते हैं, तर्क भी करते हैं, समाधान भी करते हैं।

संगोष्ठी में सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है पूज्य गुरुदेव का मार्गदर्शन। स्नातक विद्वानों के शोध पत्रों पर उनकी जो समीक्षा होती है, वही संगोष्ठी का मूलाधार होती है। स्नातकों की ही नहीं बड़े विद्वानों की संगोष्ठी में भी एक बात समान है कि प्रत्येक विद्वान् चातक पक्षी की तरह अपने आलेख की गुरुमुख से समीक्षा की प्रतीक्षा करता है। मजेदार बात यह है कि गुरुदेव के मुख से जिसके लेख पर प्रश्न चिह्न लग जाता है वह विद्वान् भी स्वयं को कृतार्थ समझता है क्योंकि निर्दोषता की मंजिल वही प्राप्त कर सकता है, जो दोषोद्घाटन को निर्दोषता की सीढ़ी समझता है।

इस वार्षिक संगोष्ठी से स्नातकों को अनेक लाभ हुए हैं। जैसे- शोध-पत्र तैयार करना, शोधालेख प्रस्तुत करना, आलेख पर आगत प्रश्नों के प्रमाण पूर्वक तार्किक समाधान प्रस्तुत करना आदि। जो स्नातक पीएच.डी. करते हैं, उनको पीएच.डी. करने का प्रशिक्षण तो इसी संगोष्ठी में हो जाता है। ये मेरा अनुभूत विषय है।

एक बार स्नातक संगोष्ठी में सारस्वत रूप से विराजमान वरिष्ठतम विद्वान् प्रो.डॉ. रमेशचंद्र जी जैन (पूर्व अध्यक्ष- अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद्) ने कहा था कि- “मैं श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर के इन अल्प उम्र में आगम का सूक्ष्मता से अध्ययन करने वाले स्नातक विद्वानों के शोधालेख और उनके वक्तव्य की शैली को सुनकर के अत्यधिक आनंदित हूँ। विद्वानों के निर्माण का क्रम अवरुद्ध सा हो जाने से हम लोगों की जो आंतरिक वेदना थी कि यदि नये विद्वानों का इसी प्रकार अभाव होता गया तो आगे यह परंपरा कैसे चलेगी? लेकिन सांगानेर में तैयार हो रहे स्नातकों की विद्वत्ता देखकर, इनके विद्वत्तापूर्ण आलेखों को सुनकर, इनके ओजस्वी प्रवचनों को सुनकर, समाज में इनके द्वारा हो रही जिनशासन की प्रभावना को देखकर हम सभी विद्वानों को गर्व भी होता है और संतोष भी होता है कि अब ये विद्वत्परंपरा परंपरा आगे अनेक वर्षों तक अनवरत रूप से चलती रहेगी। इसका पूर्ण श्रेय वर्तमान के आचार्य समंतभद्र सम साधु परम पूज्य मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज को जाता है।”

- **विद्वानों का सृजक श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर** - प्रमाणिक ज्ञान के लिए प्रमाणिक व्यक्ति/संस्थान का होना नितान्त आवश्यक है। यदि कोई व्यक्ति/संस्थान अपनी प्रमाणिकता पर खरा नहीं उतर पा रहा है तो समझना, वहाँ के ज्ञान की भी प्रमाणिकता नहीं होगी और न ही वहाँ अध्ययन करने वालों की प्रमाणिकता होगी। ज्ञान-विज्ञान का समीचीन संचार प्रत्येक स्थान पर हो रहा है, परंतु प्रमाणिकता प्रदान के लिए संस्थानों का निर्माण होता है, जहाँ विधिवत् ज्ञान-विज्ञान का संचार किया जाता है। वर्तमान में ज्ञान-विज्ञान का संचार विविध आयामों में हो रहा है लौकिक और पारलौकिक, ये दो महत्त्वपूर्ण हैं। इन दोनों का समागम यदि ठीक से कर दिया जाए तो राष्ट्र में नैतिक गुणों का प्रस्फुटन एवं संचार, न्याय-नीति, सम्यक् आचरण और जीवन निर्वाह की समीचीन विधियों का परिपालन बहुत दूर तक चलता चलेगा। ऐसे में, विश्व के पटल पर जैन समाज ने एक ऐसे संस्थान को खड़ा किया, जिसने संस्थान की प्रमाणिकता के बल पर प्रमाणिक ज्ञान और प्रमाणिक विद्वानों को तैयार करके जन-जन को जिनवाणी की महती प्रभावना से जोड़ा है। आज देश के हर कोने-कोने

में जिनवाणी का अध्ययन और अध्यापन चल रहा है, जिसमें श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर के विद्वानों की उपस्थिति दृष्टिगत है।

श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर की स्थापना में उस दिव्य महापुरुष की ऊर्जा के वे पवित्र परमाणु संचारित हैं, जिनसे आज विश्व का प्रत्येक जीव प्रभावित है - संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज। आपका आशीर्वाद पाकर यह संस्थान गौरवान्वित है। वहीं इस संस्थान के लिए प्रेरणास्रोत बने निर्यापक मुनिपुंगव सुधासागरजी महाराज। इनका कहना ही क्या? अद्वितीय प्रतिभा के धनी है, कार्य कुशलता और निपुणता इनकी जीवनशैली के प्रमुख गुण है। आपने संस्थान के लिए प्रेरणास्रोत बनकर आज जो जगती का उपकार किया है, वह दिक्-दिगन्त तक फैला है और हम सब जीवनपर्यन्त आपके ऋणी रहेंगे। संस्थान के नींव से लेकर आधार तक आदरणीय गुरुजी डॉ. शीतलचन्द जैन जयपुर और पं. रतनलाल जैन बैनाड़ा का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर के 25 वर्ष पूर्ण होने पर श्रमण संस्कृति रजत गौरव महोत्सव बड़े ही उत्साह से मनाया जा रहा है, इस उत्सव को संस्थान से जुड़कर अनेक आचार्य महाराज, मुनिमहाराज, आर्थिकासंघ, त्यागी व्रती, विद्वत्समूह, श्रावक, श्रेष्ठी आदि सभी मना रहे हैं। सभी अपने-अपने स्तर से महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। ऐसे में हमारे कर्तव्य हैं कि हम भी इस उत्सव में जिनेन्द्र भगवान की वाणी को आत्मसात् करते हुए श्रेष्ठतम कार्य जिनवाणी की प्रभावना का करें, जिससे यह उत्सव आनंद का अनुभव भी प्रदान करता रहे।

**विद्वानों के सृजन की आवश्यकता** - चारों ओर श्रमणसंस्कृति विरोधियों की संख्या बढ़ती जा रही थी। उनके विद्वान् समाज में जाकर अपने ज्ञान के बल पर ऐसा प्रचार करते कि श्रमण संस्कृति के प्रति भ्रमित होकर उनके मिशन के भागीदार बने। इस बात की गहन चिंता ने पूज्य निर्यापक मुनिपुंगव सुधासागरजी महाराज को श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर की स्थापना करने की प्रेरणा दी और उन्होंने स्थापित भी करवाया। आज वर्तमान में, आगम की बात करने वाले, पंक्ति से अर्थ लगाने वाले, संस्कृत-प्राकृत-अपभ्रंश आदि भाषाओं के जानकार विद्वान् देश-देश में जिनवाणी की महती प्रभावना कर रहे हैं, जिसकी नितांत आवश्यकता थी। छोटे-छोटे ग्रामों, कस्बों और शहरों में विद्वान् कक्षाएँ ले रहे हैं, स्वाध्याय करा रहे हैं, पाठशाला पढ़ा रहे हैं, विधि-विधान करा रहे हैं, पंचकल्याण करा रहे हैं और बहुआयामी दृष्टिकोण को रखते हुए शोध कार्य कर रहे हैं जो कि जैनदर्शन के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण उपलब्धि उपस्थित हुई है। आज जहाँ देखो वहाँ श्रमण संस्कृति के पोषण करने वाले विद्वान् आपको प्राप्त हो जायेंगे, यह मात्र श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर की ही उपलब्धि है। हम विविध दृष्टिकोणों से इस सृजनशीलता को समझ सकते हैं -

**1. श्रमण संस्कृति के रक्षा के लिए -** आज श्रमण संस्कृति के विद्वान् दूर-दूर देश-विदेश जाकर धर्म प्रभावना कर रहे हैं, जो ऐकान्तिक पक्ष के प्रबल समर्थक हैं उन्हें इस बात से अवगत करा रहे हैं कि उनका पक्ष दूषित है और वे समाज में विद्रोह और अपराध कर रहे हैं।

**2. स्याद्धाद परम्परा का उद्धार -** जिनवाणी के रहस्योद्घाटन के लिए विद्वानों की नितांत आवश्यकता है। जिसे पूर्ति करने में श्रमण संस्कृति संस्थान का महत्वपूर्ण योगदान है। आज वहाँ से संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश आदि भाषाओं के ज्ञान के साथ-साथ दृढ़ता के साथ जिनवाणी के मर्म को परोसने वाले विद्वान् सर्वत्र उपलब्ध हो रहे हैं जिससे लोगों में श्रमण संस्कृति के प्रति बहुमान उत्पन्न हो रहा है।

**3. ग्रन्थों का गलत अर्थ हो रहा था -** प्रायः करके देखा गया है कि अनेक ग्रन्थों के सम्पादन में कुछ ऐकान्तिक या दुराग्रही विद्वानों ने अर्थ का अनर्थ कर दिया है। प्राकृत की गाथाओं और संस्कृत के श्लोकों का अर्थ का अनर्थ करके प्रस्तुत किया है जिससे लोगों को भ्रम होने के कारण वे समीचीन मार्ग से विचलित होने लगे हैं, ऐसे में श्रमण संस्कृति संस्थान ने विद्वानों का सृजन करके समीचीन अर्थ को प्रस्फुटित करने वाली परम्परा का निर्वहन किया है और कर रहा है।

**4. भौतिकता के चाकचौंध से निर्वृत्ति -** आज भौतिकता की चकाचौंध में सारा विश्व आकर्षित है। ऐसे में, हमारी जैनसमाज भी इससे अछूती नहीं है। उस पर भी इसका बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है। वे संस्कार, नैतिकता, वैचारिक उन्नति आदि बातों को भूलने लगे हैं और कु-आचरण में प्रवृत्ति करने लगे हैं। ऐसे में श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर ने अपने विद्वानों को छोटे-छोटे से गाँव हो या शहर, सर्वत्र भेजकर संस्कारों का बीजारोपण प्रारंभ किया है, पाठशालाएँ प्रारंभ की, स्वाध्याय परम्परा पुनर्जीवित की, ऑनलाइन कक्षाएँ, ऑफलाइन कक्षाएँ, द्वादशवर्षीय पाठ्यक्रम आदि चलाकर आज भौतिकता में फँसे हुए लोगों को वहाँ से निकालकर धार्मिक और श्रेष्ठ संस्कारों में स्थापित कर रही है।

**5. बालिका शिक्षा का उत्थान भी हुआ -** वर्तमान में, बेटियों की उत्तम शिक्षा के साथ-साथ उत्तम संस्कारों की महती आवश्यकता है। इस कार्य को श्रमण संस्कृति संस्थान ने बखूबी ढंग से निभाते हुए बालिका छात्रावास की स्थापना की। जहाँ बेटियों पढ़ेंगी, संस्कारित होगी और विदुषी बनकर वे हजारों-हजारों की संख्या में समाज का मार्गदर्शन देगी, संस्कार लायेगी और जिनवाणी की सेवा करेगी। ऐसे में, यह विद्वानों के सृजन के साथ-साथ विदुषियों के सृजन की भी शाला है। जहाँ से जिनवाणी के प्रति जो उत्तम बहुमान प्रस्फुटित हुआ है, वे अन्यत्र दुर्लभ है।

**6. चारों अनुयोगों के क्षेत्र में कार्य हो रहा है -** आज से 15-20 वर्ष कुछ गिनती के ही विद्वान् थे। वे विद्वान् संख्या में बहुत कम थे। कार्य भी कम हो पा रहे थे। आज श्रमण संस्कृति संस्थान के विद्वान्

चारों अनुयोगों का आश्रय लेकर इसमें कार्य कर रहे हैं। वहाँ के विद्वान् अपनी-अपनी रुचि से चारों अनुयोगों का पंक्ति से अध्ययन करके समाज को मार्गदर्शन दे रहे हैं, साधुवर्ग में भी संस्थान के विद्वानों की उनकी विद्वत्ता के कारण उत्कृष्ट छवि है। संस्थान में अनेक विद्वानों ने करणानुयोग से जटिलतम विषय पर बहुत ही शानदार पकड़ रखी है। द्रव्यानुयोग पर भी अनेक विद्वान् कार्य कर रहे हैं।

**7. लाखों की संख्या में लोगों को स्वाध्याय करा रहे हैं -** पूज्य मुनिपुंगव सुधासागरजी महाराज के चिंतन की धारा से प्रस्फुटित द्वादशवर्षीय पाठ्यक्रम ने ऐसी अलख जगायी है, जिससे हजारों की संख्या में श्रावक स्वाध्याय कर रहे हैं। इनको स्वाध्याय कराने के लिए सांगानेर के 300 से अधिक विद्वान् कार्य कर रहे हैं। अनेक विद्वान् स्थानीय स्तर पर, ऑनलाइन, ऑफलाइन, प्रश्नोत्तर के माध्यम से, व्हाट्सग्रुप के द्वारा, यूट्यूब के द्वारा आदि अनेक माध्यमों से अध्यापन करा रहे हैं। फिर भी विद्वानों की संख्या आज भी कम है।

**8. पाठशाला का संचालन -** श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर के मार्गदर्शन में लगभग 500 पाठशालाएँ देशभर में चल रही है। जिनके कोर्स का निर्माण, अध्यापन की प्रक्रिया, शिक्षकों की नियुक्ति, पाठशाला की व्यवस्था, साहित्य आदि की व्यवस्था में संस्थान एक बहुत बड़ा माध्यम है। संस्थान द्वारा पाठशालाओं के विधिवत् संचालन के लिए पृथक् से बोर्ड है। जिससे सभी पाठशालाएँ संबद्ध है। अनेक स्थानों पर हमारे संस्थान के विद्वान् ही पाठशालाओं में अध्यापन करा रहे हैं।

**9. शासकीय सेवाओं और व्यापार अहिंसा का परिपालन -** जिनवाणी की आराधना, गुरुओं का आशीर्वाद और जिनेन्द्र देव के प्रति सच्ची श्रद्धा का यह सुफल हुआ है कि प्रायः यहाँ से अध्ययन करने वाले विद्वान् अच्छे से अच्छे रोजगार में स्थापित हो गए हैं। कोई व्यापारी है तो वह व्यापार करते हुए अपने अहिंसाधर्म का पालन करता है। शासकीय सेवा में कार्य करने वाले विद्वान् नीतिसंगत तरीके से कार्य कर रहे हैं और नैतिक शिक्षा के माध्यम से जैनतर छात्रों के जीवन को बदल रहे हैं। आचारण-विचार की शुद्धि के कारण और बहुमुखी प्रतिभा के कारण वे जैनसमाज का नाम रोशन कर रहे हैं। व्यापार करने वाले विद्वान् नैतिक आचारण का पालन कर रहे हैं, समाज को समय-समय पर मार्गदर्शन दे रहे हैं एवं समाज के नेतृत्व में वे उनकी मदद कर रहे हैं।

**10. पारिवारिक जीवन में सफल -** संस्थान के प्रत्येक विद्वान् का जीवन अनुकरणीय है। वे अपने परिवार के प्रति कर्तव्य, माता-पिता के प्रति कर्तव्य, समाज के प्रति कर्तव्य को इस बखूबी रीति से निभा रहे हैं। वे लोगों के प्रशंसा पात्र बने हुए हैं। लोगों का कहना है कि इन श्रमण संस्कृति संस्थान के

विद्वानों से जीवन जीने की कला सीखना चाहिए। परिवार कैसे चलाना है? लोगों के प्रति सम्मान की भावनाओं को कैसे उत्कृष्ट बनाना है? इनसे सीखना चाहिए।

- **वर्तमान में श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर** - आज देश-विदेश में श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर अपने प्रमाणिक ज्ञान-विज्ञान के बल पर विद्वानों को समाज को सौंप रहा है, समाज भी भरपूर सहयोग कर रही है। संस्थान ने विविध व्यवस्थाएँ विद्वान् निर्माण के लिए सादर प्रस्तुत की है, जिसमें मात्र सहयोग सम्पूर्ण जैन समाज का, पूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का आशीर्वाद और निर्यापक मुनिपुंगव सुधासागरजी महाराज की प्रेरणा ही है। संस्थान ज्ञान-विज्ञान का सर्वश्रेष्ठ साधन-साध्य बनकर उभरा है। विद्वानों की खान कहा जाने वाला संस्थान, आज विविध विषयों के प्रस्तौता विद्वानों को समाज को उपलब्ध करा रहा है। प्रायःकर विद्वत्त्वर्ग आपनी लौकिक आजीविका का निर्वहन करते हुए समाज को निःस्वार्थ रूप से जिनवाणी का स्वाध्याय करा रहे हैं। पाठशालाएँ संचालित हैं, पुस्तकों का प्रकाशन, शिविरों का आयोजन, पर्यूषण पर्व पर विद्वानों को भेजा जाना, श्रेष्ठ संगीतकार, श्रेष्ठ विधानाचार्य-प्रतिष्ठाचार्य आदि के माध्यम से संस्थान आज दृढ़तम तरीके से कार्य कर रहा है। जो कि अपने आप में अद्वितीय है।
- **विद्वानों की उपलब्धि और जिनप्रभावना** - अधुना, श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर के विद्वान् अपने अध्ययन समाप्ति पश्चात् समाज द्वारा प्राप्त आजीविका के लिए पाठशाला-स्वाध्याय आदि, शासकीय नौकरी प्राप्त करना, कुशल व्यापारी बनना आदि अनेक प्रकार से सरस्वती और लक्ष्मी के साथ वे जिनवाणी के प्रति अत्यंत बहुमान के साथ जिनवाणी की प्रभावना कर रहे हैं। आज भारतवर्ष एवं विदेश में लगभग 500 स्थानों पर श्रमण संस्कृति के पोषक विद्वान् जिनवाणी की प्रभावना के निमित्त से पर्यूषण पर्व पर प्रवचनार्थ जा रहे हैं। श्रमण संस्कृति रजत गौरव महोत्सव के सुअवसर पर भारत देश के लगभग 2000 स्थानों पर संस्कार शिक्षण शिविरों का आयोजन हुआ, जिसमें लगभग 500000 पाँच लाख लोगों ने स्वाध्याय किया। इसमें करीब 200000 दो लाख तो बच्चे ही होंगे। संस्थान की अनेक उपलब्धियाँ हैं, वे सारी की सारी उपलब्धियाँ जिनवाणी की प्रभावना के लिए ही हैं।
- **विद्वत्परम्परा में श्रमण संस्कृति संस्थान का योगदान** - हमारे संस्थान की विद्वत्परम्परा पं. भूरामल शास्त्री, जो कि आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज-आचार्यश्रीविद्यासागरजी महाराज-मुनिश्री सुधासागरजी महाराज के क्रम से चल रही है। प्राचीन, अर्वाचीन और वर्तमान विद्वत्परम्परा को देखे तो एक बात सामान्य है कि इन विद्वानों को पंक्ति से अर्थ करना आता है। आज यह परम्परा धीरे-धीरे समाप्ति की ओर हैं। संस्थान के विद्वानों का समूह निरंतर अभ्यास कर रहा है कि वे हमारे पूर्ववर्ती विद्वानों का अनुसरण कर परम्परा को जीवित बनाए रख सके।

- **संस्थान से आगामी अपेक्षाएँ** - श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर आज जैनसमाज में एक ब्रांड है। ब्रांड बनने में 25 वर्ष का लंबा समय लगा है। इसमें पूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का अपरिमित आशीर्वाद और पूज्य सुधासागरजी महाराज की प्रेरणा एवं उनकी सकारात्मक ऊर्जा के प्रबल संबल भी है। ऐसे में, हमारा उत्तरदायित्व बनता है कि इस छवि को निरंतर बनाए रखें, उसके लिए आवश्यक हैं कि निम्न बिन्दुओं को भी सम्मिलित किया जाए तो संस्थान के गौरव के लिए महत्त्वपूर्ण पहल होगी।
- द्वादशवर्षीय पाठ्यक्रम के सफल संचालन के लिए संस्थान की शाखाएँ या जोन का निर्माण किया जावे।
- संस्थान में शिविरों के लिए आयोजन के पृथक् से कार्ययोजना होना चाहिए।
- प्रत्येक आचार्यप्रणीत ग्रन्थ का पंक्ति से अर्थ लगाना आना चाहिए।
- जैन पुरातत्व के क्षेत्र में सूक्ष्मता से अध्ययन करना चाहिए।
- भाषाओं पर पकड़ परिपक्व होना चाहिए।
- अंग्रेजी भाषा का ज्ञान परिपक्व होना चाहिए।
- प्राकृत की गाथाएँ, संस्कृत के शतक और हिन्दी के दोहे आदि अधिक से अधिक कण्ठस्थ होना चाहिए।
- निरंतर पढ़ते रहने का अभ्यास और शोधकार्य में प्रवृत्ति होना चाहिए।
- संवाद शैली, भाषा विज्ञान, मंत्र-विज्ञान, मूर्ति-विज्ञान आदि का विशेष ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

उपरोक्त योग्यताओं को क्रम-क्रम से या अपनी रुचि के अनुसार अवश्य धारण करना चाहिए। ये योग्यताएँ आपको लौकिक और पारलौकिक दोनों उपलब्धियाँ दिलायेगी। तब कहीं जाकर हम विद्वत्परम्परा में अपना योगदान निभा पायेंगे और जिनवाणी माँ के प्रति अपना समर्पण प्रकट कर पायेंगे।

जिनेन्द्र भगवान के वचन गणधर-आचार्य-मुनिराज महाराज क्रमशः धारण करते हैं, जन-जन तक पहुँचाते हैं। इसी क्रम में, विद्वानों को भी यही कार्य सौंपा गया है कि वे भी जिनेन्द्र भगवान के वचनों को यथावत् जन-जन तक पहुँचाये। इसमें एक भी अक्षर में हीनाधिकता नहीं करना। विद्वान् सिर्फ यथावत् वचनों को कहने का अधिकारी है। वह चिंतक हो सकता है, शोध कर सकता है, भगवान के वचनों की यथावत् व्याख्या कर सकता है, नये-नये प्रयोग कर सकता है परंतु शर्त यही है कि याथावत् प्रतिपत्ति का नाश नहीं होना चाहिए। इस बात को ध्यान में रखकर आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने आशीर्वाद प्रदान किया, मुनिश्री सुधासागरजी महाराज ने प्रेरणा दी और विद्वत्समाज, श्रावकसमाज और श्रेष्ठीवर्ग ने मिलकर विद्वत्सृजन का महत्त्वपूर्ण उपक्रम खड़ा कर दिया, जिसके आज सुफल सर्वत्र विद्यमान है और संस्थान से आशा भी लोगों की यही है कि वे

याथात्म्य प्रतिपत्ति की हानि न होने दें क्योंकि ऐसा होने से जिन वचनों में दूषण लगेगा, जो कि घोर अपराध है, दण्डनीय है और अधो गति की ओर ले जाने वाला है।

श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर विद्वानों के सृजक के रूप में आया है और अपने कर्तव्यों को भलीभाँति निभाया है और निभा रहा है। संस्थान का गौरव विद्वान् और विद्वानों का गौरव संस्थान है। इस विषय को संस्थान पूर्णतया निभाते हुए आज समाज को महत्वपूर्ण आयाम प्रस्तुत किए हैं, जिससे यह बात पूर्णतया स्पष्ट हो जाती है कि वर्तमान की महान् आवश्यकता को देखते हुए श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर ने जो विद्वानों का सृजन किया है वह अत्यंत महत्वपूर्ण और उपादेय है।

- **मेरे अनुभव** - संस्थान मेरा गौरव है। मैं अपने जीवन में संस्थान के प्रति सादर समर्पित होकर अपने वहाँ के अनुभव भी आपके साथ अत्यंत श्रद्धा के साथ लिख रहा हूँ।

1. मैं संस्थान का प्रथम बैच का विद्यार्थी रहा हूँ। संस्थान को जीवन्त होते हुए मैंने अपनी आँखों से देखा है और हृदय से अनुभव किया है। कितना कठिन परिश्रम रहा है उस समय का। सम्पूर्ण जैन समाज का, साँगानेर जैन समाज का, पढ़ाने वाले शिक्षकों का, बैनाड़ा जी, डॉ शीतलचन्द्रजी का और न जाने कितने ही ऐसे सार्थक पहल करने अनेक लोगों का, खूब-खूब श्रम खपा है संस्थान की उन्नति के लिए। मुझे आज भी याद है, सर्वप्रथम हम लोगों को संघीजी के मंदिर में लगभग 4-6 महीने रहकर पढ़ना पड़ा। तब संस्थान का परिसर तैयार हो रहा था। वहाँ साँगानेर की जैन समाज के श्रावकों ने माता-पिता की कमी महसूस नहीं होने दी। वह संस्थान का प्रथम वर्ष था और हमारा भी। वहाँ के श्रावकों ने रक्षाबंधन पर बहिनों की कमी महसूस न हो, इस कारण से साँगानेर के समाज से सभी श्रावकों ने अपनी नन्हीं मुन्नी बेटियों के साथ संस्थान पधारे, और हम सभी को एक पंक्ति में बिठाकर राखी बँधवाई, वह पल भावुक करने वाला था। वह दृश्य आज भी जीवंत है। श्री महेश जैन सतना वाले, हम लोगों को प्रतिदिन जैन दर्शन की कक्षा पढ़ाते थे। उस समय वे संघीजी मंदिर में रहते थे। पढ़ाने की इतनी ललक थी कि वे साइकिल से लगभग 3 किलोमीटर आने-जाने का सफर तय करते थे। उस समय के रास्ते बहुत सुनसान थे और खराब भी। एक बार तो उनके पैर में फोड़ा हो गया था, लेकिन फिर भी वे मात्र हम लोगों को पढ़ाने के लिए आया करते थे। बैनाड़ाजी माह में लगभग 15 दिन का समय संस्थान में देते थे। वे ही आज मेरी जिनेन्द्र भगवान के प्रति दृढ़ आस्था के सृजक हैं। डॉ. शीतलचन्द्र जी ने जो लाड़-प्यार हम लोगों को दिया वह अन्य दुर्लभ है। उनकी शिक्षाएँ आज भी हमारे लिए कार्यकारी हैं। संस्थान ने इतने वर्षों में खूब उपलब्धियाँ पायी हैं, जिनमें संस्थान के अपने ही गुण हैं।

2. जब संस्थान में पढ़ने आये थे। तब संघी जी मंदिर में ही रहना था और सभी धार्मिक कक्षाएँ वहीं लगती थी। आदरणीय बैनाडाजी ने बालबोध भाग पढ़ाया था। फिर उसकी परीक्षा ली। परीक्षा में मेरा द्वितीय स्थान लगा। सिर्फ एक छोटी-सी गलती के कारण मेरा एक नम्बर कट गया। गलती थी स और श की। चत्तारि शरणं.. मैंने ऐसा लिखा था। सो मेरा एक नम्बर काट लिया और मुझे 100 में से 99 अंक मिले। मैंने उनसे पूछा - आपने मेरे एक अंक कम कर दिया है, ऐसा क्यों? तब उन्होंने कहा - आपने शरणं .. ऐसे लिखा है। जबकि सरणं ऐसे लिखा जाना था। तब मैंने कुछ हिन्दी की किताबें उठायी और उनको बताया- देखो गुरुजी! इसमें तो शरण ऐसी ही लिखा है और शरण शब्द में श ही आता है। सरण लिखना गलत है। उन्होंने कहा - नहीं! चत्तारि सरणं... ऐसे ही लिखा जाता है। उनकी यह बात मुझे तब समझ आयी, जब मैंने प्राकृत भाषा को पढ़ा। प्राकृत में श और ष के स्थान पर स हो जाता है। सच में, ऐसे गुरु जिन्होंने एक-एक बारीकी से हमें सिखाया है, हम उनके कृतज्ञ हैं।

3. हम लोगों की चाय पीने की बड़ी लत थी। संस्थान में चाय पीना और बनना निषिद्ध था। एक बार हम लोग सुबह-सुबह बाहर की दुकान पर चाय पीने गए और अधीक्षक श्री पवन दीवानजी ने पकड़ लिया। वे बड़े सख्त और अनुशासनप्रिय अधीक्षक रहे हैं। हम लोगों की पेशी हुई आदरणीय गुरुजी डॉ. शीतलचन्दजी के समक्ष। उन्होंने पहले बहुत फटकार लगायी, चाय पत्ती कैसे बनती है? और चाय पत्ती की हानियाँ बतायी। उन्होंने बाद में, एक दिन की अतिरिक्त भोजनशाला में ड्यूटी का दण्ड देकर बात समाप्त कर दी। वहाँ हमने सीखा कि कैसे छात्रों के साथ समन्वय करना है, कैसे उन्हें अनुशासित रखना और कैसे उन्हें दण्ड देना? आज अगर हमें कोई बहुमुखी प्रतिभा का धनी कहता है तो इसमें एक मात्र कारण संस्थान और वहाँ के गुरुजन ही हैं।

4. एक बार मैं बैनाडा जी के पास गया। मैंने कहा - मुझे आईएएस की पढ़ाई करना है। तब उन्होंने समझाते हुए कहा - बेटा! हमने यहाँ आपको आईएएस बनाने के लिए नहीं रखा है। हमने यहाँ आपको जैनदर्शन का उत्कृष्ट विद्वान् बनाने के लिए रखा है। आप वही बने, आईएएस भी आपके पैर छुएगा। उनकी वह बात उस दिन तो बहुत बुरी लगी थी। पर आज उनकी वही बात सुकून देती है। मैं आज जो हूँ, वह आईएएस बनकर भी नहीं हो सकता था। धन्य हैं ऐसे गुरुजन!!

## श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर

दीपक मात्र तेल बाती से ही नहीं जतला ज्योति को प्रज्वलित रखने के लिये हवा भी आवश्यक है। जलते हुये दीपक पर कोई पात्र रख देना फिर देखना, कुछ समय बाद बुझ जाता है। उसमें पूर्ण तेल भरा है, बाती भी है फिर भी बुझ गया, क्योंकि उसे हवा नहीं मिली। जीवन मात्र भोजन से ही नहीं चलता उसे जीवित रखने के लिये ऑक्सीजन की भी नितान्त आवश्यकता है। परमात्मज्योति को कायम रखने के लिये भक्ति रूपी ऑक्सीजन की भी अति आवश्यकता है।

**साहिलों पर नहीं मिला करते हैं खजाने समुन्दरों के  
मोतियों को पाने के लिये गहराई में उतरना पड़ता है।।**

धर्म प्रभावना और संस्कारों के वितरण का कोई समीचीन मार्ग है तो वह पाठशाला और संस्कार शिक्षण शिविर। प्रतिष्ठा, पर्यूषण पर्व, महावीर जयंती ये सब तो हम एक त्यौहार या पर्व के रूप में मनाते हैं जिन्हें मनाना हमारा अपना गौरव है। परन्तु इन सबसे हम नैतिकता की ओर पूर्णरूपेण नहीं बढ़ पाते हैं। पाठशाला और शिक्षण शिविर जीवन को जीवन्त बनाती है। संस्कार शिक्षण शिविर एक ऐसा अनुष्ठान आयोजित किया जा रहा है जिसमें वास्तव में संस्कारों के क्रम निरन्तर बनाये रखने का श्रेष्ठ उपक्रम निर्मित होगा।

**चाहत हो गर मंजिल पाने की , रास्ते मिल ही जाते हैं।  
थकते नहीं जो कभी राहों में मंजिल भी वही पाते हैं।।**

निश्चित ही सत्य है कि दृढ़ इच्छा शक्ति को जहाँ, वहाँ कार्य स्वयमेव सिद्ध हो जाते हैं। अब हमारा आत्मविश्वास इतना होना चाहिये कि इन संस्कार शिक्षण शिविर की गतिविधि को सम्पूर्ण भारत देश के कोने-कोने में पहुँचाने का पूर्ण प्रयास करें। जिसमें सम्पूर्ण समाज का पूर्ण योगदान आवश्यक है। शायद इन्हीं भावनाओं से -

**हर आदमी के भीतर सोता है एक झरना**

**इस इंतजार में कोई आयें और...**  
**ऊपर की कठोर परतें हटायें और...**  
**और एक नयी धारा जीवन की बहायें...**

संस्कार शिक्षण शिविर में हमने बहुत कुछ सम्मिलित किया है। जैसे कुछ मनोरंजन, कुछ पुरस्कार, कुछ ज्ञान और कुछ समाधान है। जिनका दैनिक जीवनचर्या से गहरा सम्बन्ध है। एक ओर जहाँ संस्कार शिक्षण शिविर में जैनधर्म का हम अध्ययन कराते हैं तो दूसरी ओर विभिन्न प्रतिभाओं को आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करते हैं। दूसरी ओर हम सामाजिक उन्मूलन के दृष्टिकोण को रखते हुये ज्योतिष-वास्तु से संबंधित जितनी भी समस्यायें होती है उन पर भी विचार और समाधान की कोशिश करते हैं। तीसरी ओर बच्चों के लिये अपने आजीविका के निमित्त कौन-सी प्रोफेशन अच्छा रहेगा इस सम्बन्ध में कैरियर काउंसलिंग का भी आयोजन किया जाता है। मानव स्वस्थ रहें, इस दृष्टिकोण को रखते हुये योग शिविर, व्यक्तित्व के निखार के लिये पर्सनल्टी डेवलपमेंट आदि की कक्षाओं संचालन भी हमारे समूह का प्रमुख उद्देश्य है। हम सच्चे देव-शास्त्र-गुरु के ऊपर समीचीन श्रद्धा को रखते हुये पूर्ण ईमानदारी और समर्पण के साथ इस कार्य में संलग्न है। जिसमें आपका सहयोग ही हमें सदैव पथप्रदर्शक के रूप में मदद करता रहेगा।

**भूले भटके इस जीवन को तुम जीवन पथ दिशा दे गये।**  
**थक कर रुके हुये पैरों को गति का नया विकास दे गये।।**  
**यह लोहा बन गया स्वर्ण सम, पाकर पारस स्पर्श तुम्हारा।**  
**जो कुछ भी यह बना अकिंचन, वह ऋण प्रसाद तुम्हारा।।**  
**आज वही सब अर्पित है, जो कुछ तुमसे पाया है।**  
**मेरा अपना नहीं है कुछ भी, यह आशीष तुम्हारा।।**

हम आशान्वित है आप सबसे, कि आप सब हमारे इस ज्ञानयज्ञ सदैव अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। जिन प्रभावना की सुगंधी स्वयमेव चहुँओर फैल जायेगी।

**सदाकत खुद-ब-खुद करती है, शोहरत जमाने में**  
**कभी खुशबू भी कहती है मुझे तुम सूँघकर देखो।।**

हम विश्वास जताते हैं आपके प्रति और आपसे आशा करते हैं कि आप भी अपना भरोसा हम पर बनायें। जिससे इस पुनीत कार्य की अग्रिम रूपरेखा में हम सब जुड़कर संस्कारों के उन्नयन का लक्ष्य पूर्ण कर सकें। सच्चे देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में विनयाञ्जली प्रकट करते हुये-

**हे गुरुदेव! मैंने चरण छुये है हजार बार**  
**ऐसा आशीष दो आचरण छू सकूँ एक बार।।**

- **शिविर का महत्व एवं आवश्यकता -**

**“ज्ञान समान न आन जगत् में, सुख को कारण**

**यह परमामृत जनम जरा, मृत रोग निवारण ” ॥**

जिनागम में स्वाध्याय को परमतप कहा गया है, तो आचार को परमधर्म क्योंकि स्वाध्याय और आचरण जीवन को उन्नत बनाते हैं इसलिए स्वाध्याय की ओर रुचि जाग्रत करने में शिविर का अपना एक महत्व है। परंतु आज के भौतिकवाद, व्यासायीकरण और समाजीकरण के युग में स्वाध्याय की परम्परा लुप्त प्रायः है जिसका हर्जाना वर्तमान पीढ़ी को उठाना पड़ रहा है।

इसको देखते और समझते हुए दिगम्बर जैनाचार्यों, साधु-संतों की प्रेरणा से इन शिविरों में जैन धर्म का प्रारंभिक एवं आवश्यक ज्ञान कराया जाता है और वहीं उचित वातावरण निर्मितकर सदाचार एवं नैतिकता के संस्कार दृढ़ किए जाते हैं।

शिविर एक सुनियोजित एवं सुव्यवस्थित प्रक्रिया है जिसमें सामूहिक दृढ़ संकल्प के साथ-साथ समय एवं सीमित संसाधनों द्वारा ज्ञान और आचरण की प्रेरणा कर प्रभावना की जाता है। इन शिविरों में आधुनिक भाषा शैली में प्रशिक्षित सुयोग्य शास्त्री विद्वानों द्वारा निःस्वार्थ भाव से अध्यापन का कार्य करवाया जाता है। समय पाबन्दी, अनुशासन, सादगी एवं शालीन व्यवहार शिविर की अपनी एक विशेषता है।

शिविर के पाठ्यक्रम में जहां शिक्षा के सिद्धान्तों एवं मनोविज्ञान के सिद्धान्तों का समावेश है तो वहीं शिक्षण पद्धति में शिक्षण के साथ सामूहिक प्रार्थना, योग, पूजन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम शिविर के विशेष आकर्षण है।

जैन-धर्म के प्रारंभिक ज्ञान के साथ-साथ सच्चे देव-शास्त्र-गुरु के प्रति दृढ़ आस्था, श्रावक के षट् आवश्यकों को पालने की पृष्ठभूमि तैयार करना और संस्कारों का वपन करना ये शिविर की समस्त गतिविधियों में अन्तर्निहित उद्देश्य है।

सुसंस्कारित करने के लिए शिविर वह सस्ता, सुन्दर और टिकाऊ माध्यम है जो समाज को सत्यं, शिवं, सुन्दरं का दर्शन कराता है इसलिए समाज से निवेदन है कि अपने नगर/गांव में सामाजिक समरसता का वातावरण निर्माण कर शिविर को लगाने की पहल करें और समाज को नई गतिविधि से जोड़कर श्रमण- संस्कृति की प्रभावना में सहभागी बनें।

#### ● शिविर के उद्देश्य -

- गुम होती नैतिकता को पुनः स्थापित करना।
- विलुप्त होती आगम परम्परा को पुनः आगमिक बनाना।
- नष्ट होते संस्कारों को पुनर्जीवित करना।
- व्यसन मुक्त जीवन एवं समाज की संरचना।
- सामूहिक पारिवारिक एकता, सामाजिक समरसता, राष्ट्रीय, धार्मिक और सांस्कृतिक भावना का विकास करना।

- श्रमण संस्कृति और श्रावक संस्कृति की मर्यादा के महत्व को स्थापित करना ।
- धार्मिक रूचि जाग्रत करना ।

### ● शिविर की दिनचर्या -

- प्रातः - प्रार्थना, योग, पूजन एवं धार्मिक कक्षाएँ।
- दोपहर - स्वाध्याय एवं कक्षाएँ।
- सायं एवं रात्रि - आरती, प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम ।

### ● शिविर पद्धति -

श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर द्वारा समाज के द्वारा लिखित आमंत्रण पर शिविर लगाया जाते हैं एवं समाज को भी शिविर लगाने हेतु हमारे विद्वान् एवं संस्थान प्रेरित करता है। पूज्य गुरुदेव निर्यापक मुनिपुंगव सुधासागरजी महाराज की परम प्रेरणा इसमें सबसे अग्रणीय होती है। समाज का पत्र मिलने के बाद विवरण पत्रक भेजा जाता है, जिसके माध्यम से शिविर लगाने हेतु सर्वेक्षण कराया जाता है। शिविर अवधि सात से दस दिन की होती है।

शिविर में प्रथम एवं द्वितीय भाग, छहढाला, भक्तामर स्तोत्र, तत्त्वार्थ सूत्र, रत्नकरण्ड-श्रावकाचार, द्रव्य-संग्रह आदि के साथ पूजन विधि का योग्य व कुशल विद्वानों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है। शिविर में पेन, कापी, बेच, प्रमाण पत्र, बेग तथा पुस्तकों की व्यवस्था सांगानेर संस्थान द्वारा की जाती है।

शिविर में सभी आयु वर्ग के लोग सम्मिलित हो सकते हैं।

- **कार्याविधि** - शिविर के दौरान प्रथम दिन उद्घाटन होता है। शिविर के 9वें दिन परीक्षा तथा 10 वें दिन स्थानीय समापन होता है।

स्थानीय समापन समाज को करना होता है। जिसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय आदि स्थान प्राप्त शिविरार्थियों को पुरस्कृत करना, प्रशिक्षक विद्वानों का सम्मान आदि स्थानीय समाज के द्वारा किया जाता है।

स्थानीय समापन समारोह के अलावा एक सामूहिक शिविर समापन समारोह का आयोजन भी किया जाता है, जिसमें प्रथम स्थान प्राप्त शिविरार्थियों एवं विशेष सहयोग देने वालों तथा प्रशिक्षक विद्वानों का सम्मान 'सांगानेर संस्थान' एवं शिविर समिति तय करती है। शिविर के दौरान वरिष्ठ विद्वानों एवं पदाधिकारियों द्वारा समय-समय पर निरीक्षण भी किया जाता है।

- ❖ **सफल शिविर की कार्ययोजना** - किसी भी शिविर के सफल आयोजन के लिए आवश्यक है कि हम उसकी कार्ययोजना उत्तम ढंग से तैयार करें। यदि कार्ययोजना उत्तम होगी तो कार्य भी उत्तम होने की पूरी संभावना होगी। शिविरों के सफल आयोजन के लिए निम्नलिखित कार्ययोजना का निर्माण किया जाना चाहिए, जिसे हम शिविर डायरी के रूप में भी प्रयोग कर सकते हैं। निम्न बिन्दुओं के आधार पर सफल कार्ययोजना प्रस्तुत है -

## कार्ययोजनाका स्वरूप

- शिविर डायरी/कार्ययोजना क्यों ? और आपको क्या करना है ?
- अध्यापक विद्वानों हेतु निर्देश
- शिविर उद्घाटन समारोह
- शिविर दिनचर्या एवं स्थानीय समापन समारोह
- स्थानीय समापन समारोह मिनिट्स
- स्थानीय समापन बिन्दुवार संचालन
- समाज स्वीकृति फॉर्म
- पुस्तक सामग्री विवरण
- चेकलिस्ट
- शिविर की दिनचर्या
- द्वादशवर्षीय प्रथमवर्ष के लिए सूची
- दानदाताओं की सूची
- शिविर स्थानों की सूची तैयार करने का फॉर्मेट
- सामूहिक समापन प्रपत्र
- शिविरार्थियों की सूची
- कराई गई प्रतियोगिताओं की सूची विवरण
- विद्वान् अनुभव
- समाज के पदाधिकारियों के अनुभव
- शिविरार्थी अनुभव
- समाचार पत्रों की कटिंग चिपकायें
- शिविर की फोटो चिपकायें
- शिविरार्थी फॉर्म का सेम्पल

### शिविर डायरी क्यों ? और आपको क्या करना है ? -

- अध्यापक विद्वानों हेतु निर्देश (ध्यान से पढ़ें)
- शिविर उद्घाटन समारोह (इसके अनुसार ही उद्घाटन करने का प्रयास करें)
- शिविर दिनचर्या एवं स्थानीय समापन समारोह (इसके अनुसार ही शिविर की गतिविधियाँ करने का प्रयास करें)
- स्थानीय समापन समारोह मिनिट्स (इसके अनुसार ही समापन कार्यक्रम करने का प्रयास करें)
- स्थानीय समापन बिन्दुवार संचालन (इसके अनुसार ही संचालन करने का प्रयास करें)
- समाज स्वीकृति फॉर्म (इसे पूरा भर लें)
- पुस्तक सामग्री विवरण (इसे पूरा भर लें)
- चेकलिस्ट (शिविर समाप्ति के बाद इसे पूरा भर लें )
- शिविर की दिनचर्या (आपकी क्या दिनचर्या रही है ? इसका विवरण भरें)
- द्वादशवर्षीय प्रथमवर्ष के लिए सूची (इसे पूरा भर लें)
- दानदाताओं की सूची (इसे पूरा भर लें)
- शिविर स्थानों की सूची तैयार करने का फॉर्मेट (इसे पूरा भर लें)
- सामूहिक समापन प्रपत्र (दोनों प्रतियों में इसे पूरा भर लें)
- शिविरार्थियों की सूची (कक्षावार इसे पूरा भर लें)
- कराई गई प्रतियोगिताओं की सूची विवरण (इसे पूरा भर लें, कितने प्रतियोगियों ने भाग लिया, यह भी लिखा जा सकता है।)
- विद्वान् अनुभव (इसे पूरा भर लें)
- समाज के पदाधिकारियों के अनुभव (अवश्य लिखवा लें)
- शिविरार्थी अनुभव (अवश्य लिखवा लें)
- समाचार पत्रों की कटिंग चिपकायें (प्रतिदिन की न्यूज प्रकाशित करने का प्रयास करें और चिपकाएं)
- शिविर की फोटो चिपकायें (कुछ फोटो के प्रिंट निकलवाकर चिपकाएं) यदि व्हाइट्सएप भेजते हैं तो डाक्यूमेंट फॉर्मेट में ही भेजे।

- शिविरार्थी फॉर्म का सेम्पल (आवश्यकता पड़ने पर इसका उपयोग करें)

### अध्यापक विद्वानों को निर्देश -

- 0 दिए समस्त निर्देश, प्रपत्र आदि को ध्यान से पढ़ लें, जिससे कोई भी त्रुटि न रह जाए।
- 0 शिविर के दौरान निर्धारित परिधान कुर्ता-पायजामा ही पहनें।
- 0 प्रतिदिन की रिपोर्ट शिविर व्हाइट्सग्रुप में अथवा संयोजक को व्यक्तिगत रूप से रात्रि कक्षाओं की समाप्ति उपरान्त प्रदान करें।
- 0 शिविर उद्घाटन की कम से कम दो-तीन फोटो व्यक्तिगत रूप से शिविर स्थान का नाम लिखकर सागर क्षेत्रीय संयोजक को भेजे।
- 0 प्रतिदिन की संचालित कक्षाओं की एक या दो फोटो अवश्य भेजे एवं प्रतिदिन की संक्षिप्त रिपोर्ट जिसकी न्यूज बनायी है, वह भी भेजे।
- 0 प्रयास करें, आपके द्वारा कराए जा रहे अध्यापन के समाचार दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित हो, एतदर्थ समाज के स्थानीय संयोजकों से सम्पर्क कर उन्हें प्रतिदिन की न्यूज बनाकर अवश्य दें।
- 0 समाचार प्रकाशित होने की स्थिति में तत्काल समाचार की कटिंग व्हाइट्सग्रुप पर सागर क्षेत्रीय संयोजक को भेजे।
- 0 किसी भी प्रकार का विवादित विषय स्पर्श न करें।
- 0 कक्षा में समय से 5 मिनट पूर्व पहुँचें।
- 0 सांस्कृतिक कार्यक्रम पूर्णतया धार्मिकता से जुड़े हुये ही करवाये।
- 0 शिविर समिति के निर्देशानुसार ही गतिविधियाँ संचालित करें, स्वेच्छानुसार नहीं।
- 0 प्रतिदिन अभिषेक-देवपूजन अवश्य करें।
- 0 नवीन शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग करें एवं आपके द्वारा किए गए नवाचारों को हमें अवश्य बताएं, जिससे अन्यत्र उनका क्रियान्वयन किया जा सके।
- 0 श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर के प्रति जिम्मेदार एवं समर्पित होकर अध्यापन करायें।

0 शिविर कैसा लगा ? इसके अनुभव लिखित लेना है (लेखक के नाम पता सहित)।

0 समापन में ली गई एवं शिविर अध्ययन के दौरान ली गई फोटो कम से कम 5 प्रति अवश्य निकलवायें एवं भिजवायें भी।

0 समाज के अध्यक्ष, मंत्री, एवं गणमान्य श्रेष्ठीवर्ग, समाजसेवी, आदि से लेटरपैड पर या सादे कागज पर शिविर के सम्बन्ध में गुण-दोष एवं सुझाव लिखकर अवश्य दें।

#### ❖ शिविर उद्घाटन समारोह -

##### ● प्रारम्भिक व्यवस्थायें -

1. मंच, 2. माईक, 3. भगवान की फोटो, आचार्यश्री की फोटो एवं मुनिपंगव सुधासागरजी महाराज की फोटो, 4. दीपक, 5. मंगलकलश, 6. तिलक, 7. मौली, 8. बैठकव्यवस्था, 9. माला, 10. श्रीफल।

##### ● उद्घाटन कार्यक्रम -

|                    |                                            |
|--------------------|--------------------------------------------|
| प्रातः 6.00 बजे से | अभिषेक पूजन                                |
| प्रातः 7.30 बजे से | झंडारोहण                                   |
| प्रातः 7.45 बजे से | चित्रानावरण                                |
| प्रातः 7.50 बजे से | दीपप्रज्वलन                                |
| प्रातः 7.55 बजे से | मंगलकलश स्थापना करना।                      |
| प्रातः 8.00 बजे से | मंगलाचरण।                                  |
| प्रातः 8.10 बजे से | समाज द्वारा विद्वान् का स्वागत एवं सम्मान। |
| प्रातः 8.20 बजे से | समाज द्वारा शिविर की उपयोगिता पर विचार।    |
| प्रातः 8.40 बजे से | विद्वान् द्वारा शिविर की रूपरेखा बताना।    |
| प्रातः 9.00 बजे से | कक्षायें प्रारम्भ।                         |

नोट:- मंगलकलशादि विराजमान हेतु जो भी राशि निश्चित हो वह करना चाहिये जिससे उस राशि का उपयोग शिविर आयोजन हेतु किया जा सके।

### ❖ शिविर दिनचर्या -

|                    |                                       |
|--------------------|---------------------------------------|
| प्रातः 5.00 बजे से | प्रार्थना।                            |
| प्रातः 5.15 बजे से | ध्यान, योग।                           |
| प्रातः 6.45 बजे से | अभिषेक, शांतिधारा, पूजन।              |
| प्रातः 8.30 बजे से | कक्षायें प्रारम्भ।                    |
| दोप. 2.00 बजे से   | विभन्नि प्रतियोगितायें।               |
| दोप. 3.30 बजे से   | कक्षायें प्रारम्भ।                    |
| सायं. 7.00 बजे से  | आरती एवं भक्ति।                       |
| सायं. 7.30 बजे से  | प्रवचन, शंका-समाधन एवं लघु प्रश्नमंच। |
| सायं. 8.20 बजे से  | सांस्कृतिक कार्यक्रम।                 |

### ❖ स्थानीय समापन समारोह -

स्थानीय समाज की क्षमतानुसार रात्रि 8.00 बजे से समापन समारोह का आयोजन करना चाहिए जिसमें -

1. प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान एवं सान्त्वना प्राप्त शिविरार्थियों को पुरस्कार प्रदान करना।
2. सान्त्वना पुरस्कार समाज द्वारा स्वयं के निर्णय अनुसार ही किए जाएं, तो उत्तम होगा।
3. शिविर कैसा लगा ? इसके अनुभव लिखित लेना है (लेखक के नाम पता सहित)। (पुनः निर्देश)
4. समापन में ली गई एवं शिविर अध्ययन के दौरान ली गई फोटो कम से कम 5 प्रति अवश्य निकलवायें एवं भिजवायें भी। (पुनः निर्देश)
5. समाज के अध्यक्ष, मंत्री, एवं गणमान्य श्रेष्ठीवर्ग, समाजसेवी, आदि अपने लेटरपैड पर शिविर के सम्बन्ध में गुण-दोष एवं सुझाव लिखकर अवश्य दें। (पुनः निर्देश)

❖ **समापन समारोह हेतु - (प्रातः या सायंकाल)**

**दिनांक -**

**समापन समारोह स्थल -**

● **संचालन मिनिट्स**

|                                          |                   |
|------------------------------------------|-------------------|
| ● आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का पूजन | 7.00से 7.40 तक    |
| ● मंगलाचरण                               | 7.40 से 7.50 तक   |
| ● चित्रानावरण                            | 7.50 से 7.55 तक   |
| ● दीप-प्रज्वलन                           | 7.55 से 8.00 तक   |
| ● अतिथि स्वागत एवं सत्कार                | 8 से 8.10 तक      |
| ● सांस्कृतिक कार्यक्रम                   | 8.10 से 8.20 तक   |
| ● विद्वान् स्वागत एवं सत्कार             | 8.20 से 8.30 तक   |
| ● शिविरार्थियों का स्वागत                | 8.20 से 8.30 तक   |
| ● स्वागत भाषण                            | 8.30 से 8.35 तक   |
| ● संस्थान का परिचय                       | 8.35 से 8.40 तक   |
| ● शिविर रिपोर्ट-प्रतिवेदन                | 8.40 से 8.50 तक   |
| ● सांस्कृतिक कार्यक्रम                   | 8.50 से 9.05 तक   |
| ● सांस्कृतिक कार्यक्रम                   | 9.05 से 9.10 तक   |
| ● विद्वान् सम्मान                        | 9.10 से 9.20 तक   |
| ● विद्वान् अनुभव कथन                     | 9.20 से 9.40 तक   |
| ● शिविर संयोजक टीम का सम्मान             | 9.40 से 9.50 तक   |
| ● शिविरार्थी अनुभव कथन                   | 9.50 से 10.00 तक  |
| ● शिविरार्थियों का सम्मान                | 10.00 से 10.30 तक |
| ● आभार एवं समापन घोषणा                   | 10.30 बजे         |

**बिन्दुवार संचालन करें (इसे पूरा अवश्य भरें)**

|                                           |                         |  |
|-------------------------------------------|-------------------------|--|
| आचार्यश्री विद्यासागरजी<br>महाराज का पूजन | शिविरार्थियों द्वारा    |  |
| मंगलाचरण                                  | शिविरार्थियों द्वारा    |  |
| चित्रानावरण                               | अतिथियों द्वारा         |  |
| दीप-प्रज्वलन                              | अतिथियों द्वारा         |  |
| अतिथि स्वागत एवं सत्कार                   | वाचिक                   |  |
| सांस्कृतिक कार्यक्रम                      | शिविरार्थियों द्वारा    |  |
| विद्वान् स्वागत एवं सत्कार                | वाचिक                   |  |
| शिविरार्थियों का स्वागत                   | वाचिक                   |  |
| स्वागत भाषण                               | समाज के अध्यक्ष द्वारा  |  |
| संस्थान का परिचय क                        | विद्वानों द्वारा        |  |
| शिविर रिपोर्ट-प्रतिवेदन                   | विद्वानों द्वारा        |  |
| सांस्कृतिक कार्यक्रम                      | शिविरार्थियों के द्वारा |  |
| विद्वान् अनुभव कथन                        | विद्वानों द्वारा        |  |
| शिविर संयोजक टीम का<br>सम्मान             | समाज द्वारा             |  |
| शिविरार्थी अनुभव कथन                      | शिविरार्थियों द्वारा    |  |
| शिविरार्थियों का सम्मान                   | संलग्न सूची द्वारा      |  |

|                      |                             |  |
|----------------------|-----------------------------|--|
| समिति का सम्मान      | संयोजक एवं विद्वानों द्वारा |  |
| आभार एवं समापन घोषणा | स्थानीय संयोजक द्वारा       |  |

### समाज स्वीकृति फॉर्म

शिविर स्थान का नाम----- दिनांक-----

शिविर की निश्चित की गई दिनांक-----

शिविर स्वीकृति      हाँ/नहीं      दि जैन समाज के घरों की संख्या      -----

समाज के अध्यक्ष का नाम-----

मोबाइल नम्बर-----

समाज के मंत्री का नाम-----

मोबाइल नम्बर-----

दो स्थानीय संयोजकों के नाम 1-----मोबाइल नं.-----

2-----मोबाइल नं.-----

महिला मंडल की अध्यक्षा का नाम-----मोबाइल नं.-----

कितने मंदिर हैं----- धर्मशाला ----- पाठशाला चलती है -----

स्थानीय विद्वान् या त्यागी व्रती के नाम

1-----मोबाइल नं.-----

2-----मोबाइल नं.-----

स्थानीय संयोजक एवं सम्पर्क सूत्र-----

समाज के अध्यक्ष/मंत्री हस्ताक्षर

स्थानीय संयोजक के हस्ताक्षर

संयोजक हस्ताक्षर

## i trdfnl lexndkfoj . k

|                                   |                           |               |           |              |                |
|-----------------------------------|---------------------------|---------------|-----------|--------------|----------------|
| f kof LFku dki jkule , oär k      |                           |               |           |              |                |
| v/; k d fo} ku d kule , oälsky ua |                           |               |           |              |                |
| LFkuh, l als d d kule , oälsky ua |                           |               |           |              |                |
| <b>dz</b>                         | <b>i trdfnl lexndkule</b> | <b>l ä; k</b> | <b>nj</b> | <b>dq ew</b> | <b>mi . lh</b> |
| 1                                 | HDr lej Lr ls             |               |           |              |                |
| 2                                 | Ngky k                    |               |           |              |                |
| 3                                 | r RkZ w                   |               |           |              |                |
| 4                                 | vlyk i ) fr               |               |           |              |                |
| 5                                 | b'Vnsk                    |               |           |              |                |
| 6                                 | nØ l æg                   |               |           |              |                |
| 7                                 | t S/leZ k k&1             |               |           |              |                |
| 8                                 | t S/leZ k k&2             |               |           |              |                |
| 9                                 | j Rdj . Ml J kod l p k    |               |           |              |                |
| 10                                | d k M                     |               | fu%kd     | fu%kd        | fu%kd          |
| 11                                | i s                       |               | fu%kd     | fu%kd        | fu%kd          |
| 12                                | c s                       |               | fu%kd     | fu%kd        | fu%kd          |
| 13                                | c S j                     |               | fu%kd     | fu%kd        | fu%kd          |
| 14                                |                           |               |           |              |                |
| 15                                |                           |               |           |              |                |
| 16                                |                           |               |           |              |                |
| 17                                |                           |               |           |              |                |
| 18                                |                           |               |           |              |                |
| 19                                |                           |               |           |              |                |
| 20                                |                           |               |           |              |                |
| dg                                |                           |               |           |              |                |

l ek ds/; {k @ a h g r k k}

i tr dr k g r k k

{ls h i z k h g r k k}

| शिविर की दिनचर्या का विवरण |  |
|----------------------------|--|
| प्रातः -                   |  |
| दोपहर -                    |  |
| सायं -                     |  |
| रात्रि                     |  |

|                                    |                     |          |          |     |
|------------------------------------|---------------------|----------|----------|-----|
| f kof LFku d ki jkule , oär k&     |                     |          |          |     |
| v /; k d fo} ku dkule , oälsby ua& |                     |          |          |     |
| LFku h l äls d dkule , oälsby ua&  |                     |          |          |     |
| dz                                 | i nskysoly la dkule | i yki rk | elsby ua | Qti |
|                                    |                     |          |          |     |
|                                    |                     |          |          |     |
|                                    |                     |          |          |     |
|                                    |                     |          |          |     |
|                                    |                     |          |          |     |
|                                    |                     |          |          |     |
|                                    |                     |          |          |     |
|                                    |                     |          |          |     |
|                                    |                     |          |          |     |
|                                    |                     |          |          |     |
|                                    |                     |          |          |     |
|                                    |                     |          |          |     |
|                                    |                     |          |          |     |
|                                    |                     |          |          |     |
|                                    |                     |          |          |     |
|                                    |                     |          |          |     |
|                                    |                     |          |          |     |
|                                    |                     |          |          |     |
|                                    |                     |          |          |     |
|                                    |                     |          |          |     |
|                                    |                     |          |          |     |
|                                    |                     |          |          |     |
|                                    |                     |          |          |     |
| dq                                 |                     |          |          |     |

{s, i, z, h, g, l, k}

**nkunk kv led h ph**

[illegible]

l e k t d s r / ; { k e a n g r k f k }

i t r d r k z l r k k

{s, i, z, h, g, l, k}



# I lefjd I elu gsj z=

|                                   |               |                             |                |             |
|-----------------------------------|---------------|-----------------------------|----------------|-------------|
| f fof LFku dki jkule , oär k      |               |                             |                |             |
| v/; k d fo} ku d kule , oälsby ua |               |                             |                |             |
| LFkuh I als d d kule , oälsby ua  |               |                             |                |             |
| <b>fo'k d kule</b>                | <b>i loh;</b> | <b>f fof LFku dki jkule</b> | <b>elsby u</b> | <b>vk q</b> |
|                                   | i ðe          |                             |                |             |
|                                   | f r h         |                             |                |             |
|                                   | r r h         |                             |                |             |
| <b>fo'k d kule</b>                | <b>i loh;</b> | <b>f fof LFku dki jkule</b> | <b>elsby u</b> | <b>vk q</b> |
|                                   | i ðe          |                             |                |             |
|                                   | f r h         |                             |                |             |
|                                   | r r h         |                             |                |             |
| <b>fo'k d kule</b>                | <b>i loh;</b> | <b>f fof LFku dki jkule</b> | <b>elsby u</b> | <b>vk q</b> |
|                                   | i ðe          |                             |                |             |
|                                   | f r h         |                             |                |             |
|                                   | r r h         |                             |                |             |
| <b>fo'k d kule</b>                | <b>i loh;</b> | <b>f fof LFku dki jkule</b> | <b>elsby u</b> | <b>vk q</b> |
|                                   | i ðe          |                             |                |             |
|                                   | f r h         |                             |                |             |
|                                   | r r h         |                             |                |             |
| <b>fo'k d kule</b>                | <b>i loh;</b> | <b>f fof LFku dki jkule</b> | <b>elsby u</b> | <b>vk q</b> |
|                                   | i ðe          |                             |                |             |
|                                   | f r h         |                             |                |             |
|                                   | r r h         |                             |                |             |
| <b>fo'k d kule</b>                | <b>i loh;</b> | <b>f fof LFku dki jkule</b> | <b>elsby u</b> | <b>vk q</b> |
|                                   | i ðe          |                             |                |             |
|                                   | f r h         |                             |                |             |
|                                   | r r h         |                             |                |             |

fo} ku glr k k

&LFkuh I als d glr k k

## शिविरार्थियों की सूची

[illegible]

### करायी गई प्रतियोगिताओं की नाम और उनका सामान्य विवरण

[illegible]

| समाचार पत्रों की कटिंग चिपकाये |        |
|--------------------------------|--------|
| समाचार पत्र का नाम             | दिनांक |

|  |
|--|
|  |
|--|

| शिविर की फोटो चिपकाए      |        |
|---------------------------|--------|
| कक्षा या गतिविधि का नाम - | दिनांक |

|  |
|--|
|  |
|--|

- ❖ शिविर में अध्यापन कराने वाले विद्वानों के अनुभव
- ❖ स्थानीय संयोजकों के अनुभव
- ❖ समाज के अध्यक्ष-मंत्री आदि पदाधिकारियों के अनुभव
- ❖ शिविरार्थियों के अनुभव

श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, साँगानेर जयपुर  
द्वारा आयोजित

श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर

आशीर्वाद – आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज  
प्रेरणा- निर्यापक मुनिपुंगवश्री सुधासागरजी महाराज

स्थान –

दिनांक –

शिविरार्थी फॉर्म

नाम – ..... पिता/पति का नाम

– ..... मोबाइल नं. (व्हाइट्सएप) – .....

..... जन्मतिथि – .....

आयु – .....

लौकिक शिक्षा..... ☐ ..... ☐ ..... धार्मिक शिक्षा .....

..... ☐ अभिरूचि .....

..... पता – .....

..... विषय – प्रथम भाग द्वितीय भाग

छहढाला ☐ तत्त्वार्थसूत्र ☐ व्यसंग्रह ☐ इष्टोपदेश ☐

भक्तामरस्तोत्र ☐ आलापपद्धति ☐ सवार्थसिद्धि ☐

योग ☐ अन्य (नाम लिखे)

शिविरार्थी हस्ताक्षर

स्थानीय संयोजक हस्ताक्षर

❖ श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविरों की वृहत् आयोजना का स्वरूप –

- **प्रस्तावना** - श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, साँगानेर जयपुर द्वारा संस्थान के 25 वर्ष की पूर्णता के अवसर पर श्रमण संस्कृति रजत गौरव महोत्सव-2022 का आयोजन भव्यता के साथ किया गया। इस आयोजन में संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का आशीर्वाद और मुनिपुंगव श्री सुधासागरजी महाराज की परम प्रेरणा रही है। इस पावन प्रसंग पर देशभर में श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर के आयोजन की भूमिका बनी। जिसमें मुझे सागर क्षेत्र के शिविरों का क्षेत्रीय संयोजक नियुक्त किया गया। मैं प्रसन्न हुआ क्योंकि संस्थान के गौरव के प्रति कुछ श्रेष्ठ करना मेरा भाग्य है। इस अवसर पर हमने अपनी टीम के साथ मिलकर सागर क्षेत्र के लगभग 108 स्थानों पर शिविरों का आयोजन किया। जिसकी भव्यता ऐतिहासिक रही। सागर शिविर की प्रशंसा प्रत्येक स्थान पर हुई। हमने संस्थान के प्रति गौरव को रखते हुए, इस कार्य के लिए लगभग 2 से ढाई महीने का समय दिया। जिसमें बारी-बारी से अनेक स्थानों पर शिविरों का आयोजन किया। अनेक स्थानों पर सर्वे कराया, वहाँ की समाज से मिले और निरंतर सम्पर्क में रहे। इसी दौरान हम सभी ने आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के पास जाकर शिविर के बैनर का विमोचन किया और आचार्यश्री का आशीर्वाद भी प्राप्त किया। आचार्यश्री का आशीर्वाद फलित हुआ और उसकी ऐतिहासिकता स्वर्णारंकित हो गई।
- यह कार्य बहुत दुरूह था, परंतु संस्थान के अधिष्ठाता महोदय, निदेशक महोदय, प्राचार्य महोदय, मुख्य संयोजक महोदय एवं समस्त कार्यकारिणी कमेटी का निरंतर समर्थन और मार्गदर्शन मिलता रहा। जिसके परिणामस्वरूप हमने पंचम चरणों में शिविरों का आयोजन किया।
- ❖ प्रथम चरण - श्रीदि जैन मंदिर बालक काम्प्लेक्स, सागर को सेंटर में रखते हुए दो मंदिरों को इसमें सम्मिलित किया।
- ❖ द्वितीय चरण - 25 स्थानों पर सेंटर बनाकर लगभग 75 मंदिरों में शिविरों का आयोजन किया।
- ❖ तृतीय चरण - 9 स्थानों पर सेंटर बनाकर 30 से अधिक मंदिरों में शिविरों का आयोजन किया।
- ❖ चतुर्थ चरण - 1 स्थान बीना पर सेंटर बनाकर बीना नगर के समस्त मंदिरों में शिविरों का आयोजन किया।
- ❖ पंचम चरण - यह चरण अनुपूपुर जिले के कोतमा नगर में आयोजित हुआ। जिसमें 3 मंदिरों का सम्मिलित किया गया।
- ❖ अर्थात् उपरोक्त जानकारी के आधार पर यह तय किया गया है कि सागर क्षेत्र के शिविरों की संख्या सर्वाधिक रही। हमारे इस कार्य में सुनील सुधाकर शास्त्री द्रोणगिरि, अरूण जैन शास्त्री जबलपुर, पंडितश्री विजय जैन शास्त्री शाहगढ़, राजेश जैन शास्त्री सेसई, अरिहंत जैन शास्त्री बड़ामलहरा, सुनील जैन शास्त्री खरगापुर आदि अनेक विद्वानों ने खूब खूब परिश्रम करके इन शिविरों को शिखर तक पहुँचाया है।
- ❖ **शिविर के आयोजन के पूर्व शिविर कार्यशाला का आयोजन** - शिविर कार्यशाला और पत्रकार वार्ता-स्थान - श्री दिगम्बर जैन वर्णी भवन मोराजी सागर - श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान

साँगानेर के स्थापना के 25 वर्ष होने पर संस्कृति रजत गौरव महोत्सव के अन्तर्गत श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविरों का भारत देश में वृहत् स्तर पर आयोजन किया जा रहा है। जिसमें मुझे सागर क्षेत्र का क्षेत्रीय प्रभारी नियुक्त किया गया है। शिविरों के आयोजन के पूर्व विद्वान् कार्यशाला और पत्रकार वार्ता का आयोजन दिनांक 04 मई 2022 को रखा गया है जिससे हम शिविरों की सम्पूर्ण जानकारी जन-जन तक पहुँचा सके।

❖ सागर क्षेत्र में लग रहे हैं शताधिक स्थानों पर संस्कार शिक्षण शिविर - श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर जयपुर द्वारा सागर संभाग क्षेत्र के शताधिक स्थानों पर श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविरों का आयोजन ग्रीष्मावकाश कर रही हैं। सम्पूर्ण भारत वर्ष में इन शिविरों का आयोजन चल रहा है। उसी तारतम्य में, संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के आशीर्वाद एवं निर्यापक मुनिपुंगव सुधासागरजी महाराज की पावन प्रेरणा से ५ मई से १५ मई २०२२ तक शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर अनेक वर्षों से नैतिक शिक्षा, धार्मिक शिक्षा एवं राष्ट्र निर्माण भूमिका निभाने के लिए बाल-आबाल को शिक्षित कर रही हैं। सागर संभाग क्षेत्रीय प्रभारी डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़ ने बताया कि ५ मई २०२२ से प्रारंभ होने शिविर - सागर शहर के नेहा नगर, पायगा, लिंक रोड, अर्हत क्यूट जिनालय आदि एवं आसपास के क्षेत्र शाहगढ़, बडागाँव धसान, पथरिया, देवरी, राहतगढ़, खडेरी, बड़ामलहरा, हीरापुर, बंडा, करीपुर, मालथौन आदि अनेक स्थान पर। इन शिविरों में लगभग ५००० शिविरार्थी भाग लेंगे और लगभग १०० से अधिक शिक्षक-शिक्षिकाएँ अध्यापन करायेंगे। सभी शिविरों का सामूहिक समापन समारोह १५ मई २०२२ को आर्यिका दृढमति माताजी के सान्निध्य में भाग्योदय तीर्थ सागर पर होने की निश्चय चल रहा है। शिविरों के सफल संचालन के लिए श्री सुनील सुधाकर शास्त्री द्रोणगिरि, श्री आनंद जैन शास्त्री रामटौरिया, श्री अरिहंत शास्त्री बड़ामलहरा, श्री सुनील शास्त्री खरगापुर, श्री कपिल शास्त्री सेसई आदि अनेक विद्वानों का सहयोग प्राप्त हुआ है।

❖ शिक्षण शिविर कार्यशाला एवं पत्रकार वार्ता सम्पन्न- संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के आशीर्वाद एवं निर्यापक मुनिपुंगव सुधासागरजी महाराज की प्रेरणा से सागर संभाग क्षेत्र में श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर जयपुर द्वारा आयोजित होने वाले श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविरों के सफल संचालन हेतु ४ मई २०२२ को श्री दिगम्बर जैन वर्णी भवन मोराजी सागर में शिक्षण शिविर कार्यशाला एवं पत्रकार वार्ता का आयोजन किया गया। डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़ बताया कि इसका मुख्य उद्देश्य है नैतिक संस्कारों को बढ़ाना, राष्ट्र के प्रति समर्पण और निष्ठा का भाव जागृत करना, जीव मात्र के प्रति दया का भाव और सौहाद्र-प्रेम की भावना के साथ-साथ हित-अहित का परिज्ञान। आज युवापीढ़ी नैतिक मूल्यों से दूर होती जा रही है, व्यसनों की प्रवृत्तियाँ बढ़ रही है, दया और प्रेम के भावों में भी कमी आयी है, ऐसे में एक स्वस्थ उद्देश्य लेकर हम कार्य करने आये हैं। इन शिविरों में लगभग ५००० से अधिक शिविरार्थी सम्मिलित होंगे और १०० से अधिक अध्यापक विद्वानों द्वारा अध्यापन कराया जायेगा। यह कार्यशाला अध्यापक विद्वानों को मार्गदर्शन और आयोजन संबंधी दिशा-निर्देशों के लिए आयोजित की गई है। यहाँ आज पत्रकार वार्ता का भी आयोजन रखा गया है जिसका उद्देश्य यही है कि जन-जन तक इन शिविरों के नैतिक

मूल्यों की चर्चा हो, और जो भी इन शिविरों की खबरों से मुखातिब हो, वह अपने जीवन में नैतिक मूल्यों को प्रकट कर सकें।

#### ❖ शिविरों का आयोजन का क्रम -

1. श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर की ओर श्रमण संस्कृति रजत महोत्सव के अन्तर्गत श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविरों का आयोजन सागर क्षेत्र में दिनांक 29 मार्च 2022 से प्रारंभ किया गया। इन शिविरों का प्रारंभ श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर बालक काम्प्लेक्स सागर से हुआ है। देखा जाए तो रजत महोत्सव वर्ष के सबसे पहला शिविर लगाने का श्रेय भी इस सागर नगर और इस जिनालय को जाता है। यहाँ पर बाल बोध भाग 1 और 2 एवं तत्त्वार्थसूत्र की कक्षाओं का अध्यापन कराया गया। इसमें डॉ. आशीष जैन आचार्य, शाहगढ़ और आनन्द जैन शास्त्री रामटौरिया ने शिविर अध्यापन कराया। विविध रचनात्मक कौशल को बढ़ाने वाली प्रतियोगिताओं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से शिविरार्थियों ने बहुत लाभ प्राप्त किया। प्रतिदिन शिविरार्थियों ने प्रार्थना, जिनवाणी स्तुति आदि में स्वयं के द्वारा सम्पादन किया। यह शिविर चार ग्रुप में विभाजित किया गया। प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग। ग्रुप के अनुसार ही अध्ययन और प्रतियोगिताओं में भाग लेना था। सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले शिविरार्थियों को पुरस्कृत किया गया एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। श्रीमती रूबी जैन, श्रीमती रीना जैन एवं श्रीमती ज्योति जैन ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त किया। सभी शिविरार्थियों ने रचनात्मक कौशल के अन्तर्गत संवाद लिखो, कहानी लिखो, अभिनंदन पत्र बनाओ, गीत बनाओ और गाओ आदि गतिविधियों में भाग लिया। समाज के अध्यक्ष डॉ. श्री अरुणजी सराफ, उपाध्यक्ष डॉ. राजेश जैन, महामंत्री श्री कमलेश जैन आदि ने सम्पूर्ण कार्यक्रम को श्रेष्ठ बनाने में एवं साँगानेर संस्थान के प्रति अपनी दृढ़ता प्रकट की। इस शिविर के सफल आयोजन में श्रीमती रीना जैन, श्री राजकुमार जैन, श्रीमती निशा भायजी आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

2. श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर, जयपुर द्वारा श्रमण संस्कृति रजत गौरव महोत्सव के अन्तर्गत श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन देश में आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के आशीर्वाद से एवं सुधासागरजी महाराज की प्रेरणा से किया जा रहा है। 1996 में श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर की स्थापना हुई थी। उसी क्रम में सागर क्षेत्र में प्रथम चरण में 29 मार्च से 8 अप्रैल 2022 तक बालक काम्प्लेक्स सागर में शिविर का सफलतम आयोजन किया गया। द्वितीय चरण में सागर क्षेत्र के 22 स्थानों पर शिविरों का आयोजन किया गया। जिनमें सागर शहर के पायगा, लिंकरोड, अर्हतकूट जिनालय और नेहानगर, शाहगढ़, बण्डा, करपुर, हीरापुर, देवरी, बड़ा मंदिर पथरिया, पथरिया सेमरा, सिरोंज, पठारी, बरौदिया, मालथौन, बड़ामलहरा, राहतगढ़, विजावर, बम्हौरी, बरायठा, बाजना, परसौरिया। तृतीय चरण में सागर शहर के गौराबाई मंदिर, शनिचरी, सिंघई मंदिर, वर्णी कॉलोनी, दीनदयाल कॉलोनी, अंकुर कॉलोनी, तिलकगंज, बाहुबली कॉलोनी, पगारा रोड़, सुभाषनगर आदि स्थानों पर आयोजन की रूपरेखा है, जो कि 17 मई से 25 मई 2022 तक चलेंगे। इसी क्रम में चौथे चरण में बीना शहर में वृहत् स्तर पर शिविरों की आयोजना है जो कि 27 मई से 4 जून 22 तक चलेंगे। इन शिविरों के लिए आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का साक्षात्

आशीर्वाद दो बार प्राप्त हुआ है एवं अनेक साधुसंघों का आशीर्वाद और सान्निध्य प्राप्त हुआ है। जैसे - मुनिश्री अजितसागरजी महाराज ससंघ, मुनिश्री विमलसागरजी महाराज ससंघ, मुनिश्री पद्मसागरजी महाराज, मुनिश्री सुप्रभसागरजी महाराज ससंघ, मुनिश्री दुर्लभसागरजी महाराज ससंघ, आर्यिका दृढमति माताजी ससंघ, आर्यिका गुरुमति माताजी, आर्यिका पूर्णमति माताजी ससंघ आदि। इसी क्रम में आर्यिकाश्री अकलंकमति माताजी और आर्यिकाश्री सिद्धमति माताजी का सान्निध्य नेहानगर सागर में शिविर के लिए प्राप्त हुआ। वहीं दूसरी ओर उनके आशीर्वाद एवं प्रेरणा में सामूहिक समापन समारोह भी आयोजित हो रहा है, जो कि 15 मई 2022 को है। इन शिविरों के संचालन में श्री उत्तमचन्द जैन पाटनी मुख्य संयोजक का सकारात्मक दृष्टि और दृढतम कार्ययोजना रही है। वही अधिष्ठाता डॉ जयकुमार जैन, निदेशक डॉ शीतचलचन्द जैन, प्राचार्य अरूण कुमार जैन का सतत् मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। संस्थान के अध्यक्ष श्री शांतिकुमार जैन, कार्याध्यक्ष श्री --, महामंत्री श्री सुरेश जैन, कोषाध्यक्ष श्री ऋषभ जैन के उत्कृष्ट और दृढतम संकल्प ने आज लाखों की संख्या में लोगों को जिनवाणी के रसास्वादन का अवसर प्रदान किया है। शिविर के सफल आयोजन में हमारी टीम के सदस्य श्री सुनील सुधाकरजी शास्त्री द्रोणगिरि, श्री आनंद जैन शास्त्री रामटौरिया, क्षेत्रीय सह प्रभारी श्री अरिहंत जैन शास्त्री बड़ामलहरा और सुनील जैन शास्त्री खरगापुर का अप्रतिम योगदान रहा है, जिसका उल्लेख शब्दों से करना कठिन है। मैं डॉ. आशीष जैन आचार्य, शाहगढ़, जिन्हें क्षेत्रीय संयोजक सागर क्षेत्र का बनाया गया, इसके लिए संस्थान का आभारी हूँ।

श्रमण संस्कृति संस्थान, साँगानेर जयपुर द्वारा देशभर के कोने-कोने में सहस्राधिक विद्वानों को तैयार करके जिनवाणी की निस्वार्थ सेवा के लिए तैयार किए हैं, जो कि आज अपने उद्देश्य में सफल है। जहाँ एक ओर सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की सम्यक् आराधना के सुफल स्वरूप अधिक विद्वत्जन शासकीय सेवाओं में कार्यरत हैं या फिर वे अच्छे व्यवसायी हैं, साथ-साथ जिनवाणी की सेवा भी कर रहे हैं। आज जहाँ एक श्रमण संस्कृति के प्रति अनेक प्रश्नचिह्न खड़े करने वाले लोग, संस्थाएँ और अभियान चल रहे हैं वहीं दूसरी ओर श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर जैसे उत्कृष्ट संस्थान ने मिशनरी सोच पर पाबंदी लगायी है। अभी ओर अधिक जागरूकता की आवश्यकता है, जो समाज, साधु, विद्वान् सबको एक साथ मिलकर लाना है।

पूज्य गुरुदेव गुरुणां गुरु आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की मंद मंद मुस्कान शिविरों की बात सुनकर प्राप्त होना, हमें तो आह्लादित करने के लिए पर्याप्त थी। उनका आशीर्ष और अनुकम्पा अद्वितीय है। सच ही कहते हैं लोग- हमने भगवान का तो नहीं देखा है, पर आचार्यश्री जैसे ही भगवान होते होंगे।

हम निर्यापक मुनिपुंगव सुधासागरजी महाराज के आभारी हैं जिन्होंने हम संस्थान में पढ़ने का सौभाग्य प्रदान किया और आज जिनवाणी की सेवा करने में हमें महत्वपूर्ण योगदान करने योग्य बनाया है। वैसे भी देखा जाए जो कार्य आज की स्थिति में पूज्य मुनिश्री ने किए हैं, वे अद्भुत हैं, अद्वितीय हैं, जिनकी कल्पना मात्र ही हमारे लिए प्रसन्नता का विषय बनती है।

❖ **शिविर आयोजना** - महानुभाव! आपको बताते हुए प्रसन्नता का विषय है कि हमारे द्वारा आयोजित 22 स्थानों के शिविरों में 50 विद्वानों ने अध्यापन एवं संयोजन का कार्य किया है।

जिन्हें हम प्रशस्ति-पत्र, गिफ्ट, दुपट्टा, तिलक आदि से सम्मानित कर रहे हैं। इसके साथ-साथ अनेक मुनि महाराजों एवं आर्यिका माताजी द्वारा भी शिविर में अध्यापन का कार्य किया गया है। सम्पूर्ण शिविरों के कुल शिविरार्थियों की संख्या लगभग 5000 के आसपास रही है। जिनमें 81 कक्षाओं का संचालन हुआ। 81 कक्षाओं के प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त शिविरार्थियों को हम नेहानगर सागर में 15 मई 2022 को समापन समारोह के अवसर उच्च स्तरीय शील्ड, उपयोगी और उत्तम गुणवत्ता की गिफ्ट, दुपट्टा, तिलक आदि से सम्मानित कर रहे हैं। साथ-साथ वे लोग जो शिविरों के लिए नींव के पत्थर हैं, ऐसे स्थानीय संयोजकों को भी सुंदर और आकर्षक प्रशस्ति-पत्र, उत्तम गुणवत्ता वाली गिफ्ट, दुपट्टा, तिलक आदि सम्मानित कर रहे हैं। सभी भाग लेने वाले शिविरार्थियों के लिए प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए गए हैं, एवं स्थानीय स्तर पर पुरस्कार भी दिए गए हैं। सभी शिविरों का स्थानीय स्तर पर समापन समारोह दिनांक 14 मई 2022 को किया गया। जहाँ लोकल स्तर पर भी प्रावीण्य सूची में सम्मिलित शिविरार्थियों को सम्मानित किया गया। इसी क्रम में समापन समारोह के आयोजन सकल दिगम्बर जैन समाज नेहानगर सागर के सभी पदाधिकारियों को भी हम सम्मानित करने का भाव लेकर उन्हें प्रशस्ति पत्र, उत्तम गुणवत्ता वाली गिफ्ट, दुपट्टा, तिलक आदि से सम्मानित कर रहे हैं। हमारी सम्पूर्ण संयोजक मण्डल की टीम को भी प्रशस्ति पत्र, उत्तम गुणवत्ता वाली गिफ्ट, दुपट्टा, तिलक आदि से सम्मानित कर रहे हैं।

शिविर का आय-व्यय - संस्थान द्वारा शिविरार्थियों के लिए कॉपी, पेन, बेग, पुस्तकें आदि की व्यवस्था निःशुल्क करायी गयी है। कहीं-कहीं के शिविरार्थियों ने जिनवाणी की अवमानना न हो, एतदर्थ पुस्तकों के मूल्य को भी प्रदान किया है, जो कि एक सराहनीय कदम है। कॉपी 8 रुपये, पेन 2 रुपये, बेग 3.5 रुपये, प्रमाण-पत्र 3.5 रुपये, पुस्तकों में छहढाला...., भाग 1...., भाग 2...., तत्त्वार्थसूत्र...., आलापपद्धति...., इष्टोपदेश...., द्रव्यसंग्रह, प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय शील्ड 615 रुपये आदि व्यय एवं अध्यापक विद्वानों को संस्थान अपने स्तर उत्तम सम्मान राशि प्रदान करता है। अर्थात् एक शिविर स्थान पर कम से कम 31000 रुपये का खर्च संस्थान का होता है। आप सभी के लिए समापन समारोह हेतु संस्थान 81 कक्षाओं के 243 शिविरार्थी, 50 विद्वान्, 44 स्थानीय संयोजक और अन्य सहयोगियों हेतु लगभग 2 लाख रुपये के पुरस्कार और सम्मान पत्र में व्यय कर रहा है। 22 स्थानों पर शिविरों में लगभग संस्थान का 8 लाख रुपये का व्यय हुआ है।

इस प्रकार से श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर देश में हजारों शिविरों का आयोजन देश के सभी राज्यों में कर रहा है, जिनमें बड़-चढ़कर के संस्थान व्यय भी कर रहा है। संस्थान आप सभी के सहयोग से चल रहा है। यह आप भी जानते हैं जो गुणवत्ता संस्थान ने प्रदान की है, वैसी गुणवत्ता दूर-दूर तक विद्वानों में अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। अतः आप भी जुड़िए और एक विद्वान् को तैयार करने का मनोभाव बनाईये। वह जिनवाणी की सेवा करेगा, उससे आपको ही पुण्य होगा।

मैं समस्त अध्यापक विद्वानों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने इतनी भीषण गर्मी में अथक परिश्रम के साथ अध्यापन कराया है, मैं सभी शिविरार्थियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने पूरे मनोयोग से जिनवाणी को समझा है और अपने जीवन में उसे उतारेंगे भी। मैं अपनी साथी

संयोजक टीम के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, अगर उनका सहयोग न होता है तो ये शिविरों का आयोजन संभव नहीं था। शिविर संचालन के महत्वपूर्ण पायदान स्थानीय संयोजकों के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। नेहानगर सागर की सकल दिगम्बर जैन समाज के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने सामूहिक समापन की स्वीकृति प्रदान की। आर्यिकाद्वय जिनका आशीष और सन्निधि ने हमारे कार्यक्रम को उत्कृष्ट बनाया है उनके प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। सामूहिक समापन आदि में हमारे विद्वत्श्री दीपक जैन शास्त्री सागर का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जिसके लिए उन्हें पृथक् से धन्यवाद ज्ञापित करते हैं। शिविर के मुख्य संयोजक सहित समस्त साँगानेर संस्थान की कमेटी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं कि उन्होंने ये अवसर प्रदान करके हम सबको गौरवशाली बनाया है, इसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

अन्त भला सो सब भला..प्रारंभ भी जिनसे और अंत भी जिनसे ऐसे हमारे गुरुदेव आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज और मुनिपुंगव सुधासागरजी महाराज के प्रति कृतज्ञता के साथ नमोस्तु निवेदित कर रहे हैं कि अगर आप न होते तो ये सब कारवाँ कहाँ होता ? कोटि कोटि नमोस्तु!!!

**3.** श्रुत की आराधना के लिए सबसे अनूठा उपक्रम स्वाध्याय है। स्वाध्याय और अपने आपको जानने, समझने एवं ज्ञान के लिए तथा जिनवाणी के सामान्य अध्ययन एवं गूढ़ अध्ययन के लिए पढ़ना आवश्यक है। पढ़ने के लिए रूचि आवश्यक है और रूचि के लिए माध्यम आवश्यक है। पाठशाला और स्वाध्याय परम्परा अनूठा कार्य कर रही है श्रावकों के लिए अध्यापन और जीवन निर्माण के लिए, परंतु इनमें और अधिक मूल्यांकन को श्रेष्ठ बनाते हुए संस्कार शिक्षण शिविर की उपयोगिता स्वाध्याय के प्रति रूचि उत्पन्न करने के लिए श्रेष्ठ उपक्रम है। इसी उपक्रम को संचालित करते हुए श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर जयपुर द्वारा श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविरों का आयोजन वृहत् स्तर पर देश भर में श्रमण संस्कृति रजत गौरव महोत्सव के उपलक्ष्य में किया जा रहे हैं। इसी क्रम में सागर क्षेत्र की जिम्मेदारी मुझे दी गई। जिसमें मैंने सुनील सुधाकर शास्त्री द्रोणगिरि, श्री अरिहंत जैन शास्त्री बड़ामलहरा, सुनील जैन शास्त्री खरगापुर और राजेश जैन शास्त्री सेसई आदि के सहयोग से शिविरों का वृहत् स्तर पर आयोजन प्रारंभ दिनांक 29 अप्रैल 2022 से प्रारंभ किए। प्रथम चरण में बालक काम्प्लेक्स में शिविर का आयोजन हुआ। तत्पश्चात् दिनांक 5 मई से 15 मई 2022 तक सागर क्षेत्र के 22 स्थानों पर शिविरों का भव्य आयोजन हुआ, जिसमें लगभग 5000 शिविरार्थियों ने भाग लिया एवं 3231 शिविरार्थियों ने परीक्षा दी। इस शिविर में 55 विद्वानों के द्वारा अध्यापन कार्य कराया गया। सभी को श्री दि जैन मंदिर नेहानगर सागर में सम्मानित किया गया। इसमें नेहानगर समिति का खूब खूब आभार। सुखद परिणामों की प्राप्ति हुई। तत्पश्चात् दिनांक 17 मई से 25 मई 2022 तक सागर शहर के नौ मंदिरों में श्री गौराबाई दि जैन मंदिर नमकमंडी, वर्णी कॉलोनी, रामपुरा वार्ड, सिंघई मंदिर, बीच का मंदिर, बालक हिलव्यू, तिलकगंज, शनीचरी, और दीनदयाल कॉलोनी सागर में आयोजित हुए। जिसमें 3000 से अधिक संख्या पढ़ने वालों की रही एवं 1771 शिविरार्थियों ने परीक्षाएं दी। 46 कक्षाओं का संचालन हुआ, जिसमें 138 प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय शिविरार्थियों को सम्मानित करते हुए पुरस्कृत किया गया। 27 विद्वानों द्वारा अध्यापन कार्य कराया गया। जिनके नाम निम्न हैं - 1. डॉ. आशीष जैन आचार्य 2. सुनील सुधाकर शास्त्री द्रोणगिरि

3. पं. विजय जैन शास्त्री शाहगढ़ 4. राजेश जैन शास्त्री सेसई 5. पीयूष जैन शास्त्री मडदेवरा 6. महिमा जैन शास्त्री सागर 7. ऋतिका शास्त्री राहतगढ़ 8. दीपक जैन शास्त्री सागर 9. अरूण शास्त्री जबलपुर 10. सुनील शास्त्री खरगापुर 12. ब्र साधना दीदी सागर 13. प्रिंस शास्त्री जाखलौन 14. नीलेश जैन शास्त्री सागर 15. अरिहंत शास्त्री बडामलहरा 16. सुविज्ञा शास्त्री 17. मानसी शास्त्री 18. कपिल शास्त्री सेसई 19. पीयूष जैन शास्त्री सागर 20. आशीष जैन शास्त्री बंडा 21. सम्यक् शास्त्री तारादेही 22. सुदर्शन जैन शास्त्री सागर 23. ऋषि शास्त्री बरायठा 24. राजेश शास्त्री खमरिया 25. आनंद शास्त्री रामटौरिया 26. जितेन्द्र शास्त्री मडावरा 27. नमन शास्त्री खुरई। 25 स्थानीय संयोजकों ने उत्तरदायित्व संभाला। बालबोध भाग 1, भाग2, छहढाला, तत्त्वार्थ सूत्र, सर्वार्थसिद्धि, भक्तामर स्तोत्र, द्रव्यसंग्रह, आलापपद्धति आदि की कक्षाओं का संचालन हुआ।

प्रतिदिन कक्षाओं का विद्वानों निरीक्षण किया गया एवं साँगानेर के पदाधिकारियों को सूचना भी दी गयी। साथ-साथ मुख्य संयोजक श्री उत्तमचन्द जी पाटनी का निरंतर मार्गदर्शन प्राप्त करते करके ही कार्य सम्पादित किया है।

समापन समारोह के दिवस प्रातः कालीन बेला में श्रुत आराधना करते हुए विद्यावर्धक बाल संस्कार अनुष्ठान का कार्यक्रम 25 मई 2022 को प्रातः 6 बजे से किया गया। जिसमें लगभग 1000 लोगों ने भाग लिया। इसके दो केन्द्र बनाए गये थे। श्री गौराबाई दिगम्बर जैन मंदिर नमकमंडी सागर और श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर वर्णी कॉलोनी सागर। श्री चक्रेश जैन सिंघई अध्यक्ष वर्णी कॉलोनी और संतोष जैन घड़ी अध्यक्ष गौराबाई मंदिर का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है। गौराबाई मंदिर समिति अध्यापन कराने वाले सभी विद्वानों के आवास और भोजन की सामूहिक व्यवस्था की और सामूहिक समापन की जिम्मेदारी भी आपके द्वारा निभायी गयी है, जो कि प्रशंसनीय है और हम आपके आभारी भी हैं।

इस शिविर की एक सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही है कि समस्त अध्यापक विद्वानों से समाज द्वारा प्रदान की जाने वाली नगद राशि को न लेकर श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर की रसीद बनवाई है, जिसमें सर्वप्रथम श्री आशीष जैन शास्त्री बण्डा और सम्यक् जैन शास्त्री शास्त्री प्रथम वर्ष के छात्र ने यह प्राथमिकता प्रकट की है। जो प्रशंसनीय और अनुकरणीय है। समाज के लोगों द्वारा संस्थान के प्रति ऐसा उत्कृष्ट समर्पण देखते हुए सभी स्थानीय संयोजक के माध्यम से समाज के पदाधिकारियों ने विद्वानों का सर्वश्रेष्ठ सम्मान करने का उपक्रम बनाया। उसमें प्रत्येक विद्वान् को लगभग एक रुपये मूल्य का 12\*18 की साइज का हार्डबोर्ड का गोल्डन पत्र वाला प्रशस्ति पत्र एवं लगभग 2500 मूल्य का सफारी कम्पनी का फाइबर का सूटकेस भेंट किया। 138 शिविरार्थियों को शील्ड के साथ लगभग 300 रुपये मूल्य की पानी की बोटल प्रदान की गई और स्थानीय संयोजकों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। साथ-साथ आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के जीवन दर्शन पर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें लकी ड्रा के माध्यम से 10 सान्त्वना और प्रथम, द्वितीय, तृतीय कुल 13 पुरस्कारों का चयन किया गया। जिसमें लगभग प्रथम में 3000 रुपये मूल्य की उषा कम्पनी की मिक्सी, द्वितीय में 2500 रुपये मूल्य का सफारी का सूटकेस, तृतीय में 1700 रुपये मूल्य का ओवन तथा 10 सान्त्वना में 500 रुपये मूल्य की पानी की बोटल प्रदान की गई।

इस शिविर की उपलब्धि एक ऐतिहासिक कार्य और भी हुआ है, वह है भव्य वृहत् प्रदर्शनी। शिविरार्थियों द्वारा जो भी उपलब्धि प्राप्त की गई, उसकी भव्य प्रदर्शनी लगाई गयी है, जिसको स्वयं देखते तो आनंद अनुभव तो करते ही साथ-साथ गौरव का भी अनुभव करते। हम इसे फोटोग्राफ के माध्यम से भी देख सकते हैं। इसकी भव्यता और प्रशंसा चहुँ ओर रही।

हम जिनवाणी की आराधना के साथ-साथ मानव जीवन को कैसे रचनात्मकता की ओर ले जाना है, इसका पूर्ण ध्यान रखते हुए आयोजन को कर रहे हैं, जिसके श्रेष्ठ और उत्तम परिणाम प्राप्त हो रहे हैं। इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए हम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री विद्यालसागरजी महाराज के आभारी हैं जिन्होंने सफल होने का आशीर्वाद प्रदान किया। पूज्य निर्यापक मुनिपुंगव सुधासागरजी महाराज की प्रेरणा, जिन्होंने इस सम्पूर्ण आयोजन को चारचाँद लगाए हैं। हमारा संस्थान, जिसने अवसर और सेवा प्रदान की, शिविर समिति के सभी वरिष्ठजन, हमारे सभी साथी, सभी अध्यापक विद्वान्, सभी स्थानीय संयोजक, सभी मंदिरों के पदाधिकारीगण, नींव के रूप में कार्य करने वाले महानुभाव, समापन समारोह की आयोजन समिति आदि आप सभी के हम बहुत बहुत आभारी हैं, जिन्होंने ऐसा श्रेष्ठ अवसर प्रदान किया है।

4. संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के परम आशीर्वाद एवं निर्यापक मुनिपुंगव श्री सुधासागरजी महाराज के परम प्रेरणा से श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, साँगानेर द्वारा श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर श्री नाभिनंदन दिगम्बर जैन मंदिर बीना सागर मप्र में दिनांक - 27 मई से 04 जून 2022 तक आयोजित किए गए। इस शिविर में बीना नगर के 6 मंदिरों को समाहित किया गया। प्रत्येक मंदिर के बाहर से एवं विशेष स्थान आदि से वाहन की व्यवस्था की गई, जिससे शिविरार्थी पढ़ने के लिए सरलता से पहुँच सके। इस शिविर में बीना नगर के शिविरार्थियों ने बढ-चढ़कर भाग लिया। शिविर में आलापपद्धति, सर्वार्थसिद्धि, छहढाला, द्रव्यसंग्रह बालबोध भाग - 1 एवं भाग-2 आदि की कक्षाओं का संचालन किया गया। प्रातःकाल अभिषेक-शांतिधारा-पूजन का उपक्रम किया गया, जिसे प्रायःकर बालसमूह ने ही गति प्रदान की। तत्पश्चात् बच्चों को उत्तम स्वल्पाहार की व्यवस्था भी की गई। तत्पश्चात् कक्षाओं का संचालन किया गया। दोपहर के समय प्रत्येक दिन श्रुतस्कन्ध विधान का आयोजन किया गया, जिसमें शिविरार्थियों ने खूब उत्साह दिखाया। रात्रिकालीन समय में आरती, कक्षाएँ एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सामूहिक समापन श्रुत पंचमी 4 जून 2022 को किया गया। जिसमें प्रातःकाल विशाल शोभायात्रा निकाली गयी और रात्रि में सभी शिविरार्थियों को प्रमाण-पत्र एवं गिफ्ट देकर सम्मानित किया गया। शिविर में अध्यापन हेतु डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़, पंडितश्री विजय जैन शास्त्री शाहगढ़, पंडितश्री अंकित जैन राहतगढ़, पंडितश्री राजेश जैन शास्त्री सेसई, पंडितश्री अरिहंत जैन शास्त्री बड़ामलहरा, पंडितश्री सुनील जैन शास्त्री खरगापुर, पंडितश्री पीयूष जैन शास्त्री मडदेवरा एवं पंडितश्री रिषी जैन शास्त्री बीना ने कराया।

निश्चित रूप से बीना शिविर ऐतिहासिक रहा है। बीना शिविर के उत्साह को देखकर वहाँ की समाज ने भी साँगानेर और वहाँ के विद्वानों के प्रति गौरवभाव प्रकट किया है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में इसी प्रकार से शिविरों के आयोजन के लिए बीना समाज अग्रसर रहेगी।

5. जिनेन्द्र भगवान द्वारा कहे गए मार्ग का अनुशरण करके हम भी जिनेन्द्र बन सकते हैं। इसी उपक्रम में श्रुत की आराधना के लिए सबसे अनूठा उपक्रम स्वाध्याय है। स्वाध्याय और अपने आपको जानने, समझने एवं ज्ञान के लिए तथा जिनवाणी के सामान्य अध्ययन एवं गूढ़ अध्ययन के लिए पढ़ना आवश्यक है। पढ़ने के लिए रुचि आवश्यक है और रुचि के लिए माध्यम आवश्यक है। पाठशाला और स्वाध्याय परम्परा अनूठा कार्य कर रही है श्रावकों के लिए अध्यापन और जीवन निर्माण के लिए, परंतु इनमें और अधिक मूल्यांकन को श्रेष्ठ बनाते हुए श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर की उपयोगिता स्वाध्याय के प्रति रुचि उत्पन्न करने के लिए श्रेष्ठ उपक्रम है।

संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के आशीर्वाद एवं निर्यापक मुनिपुंगवश्री सुधासागरजी महाराज की प्रेरणा से श्री दि जैन श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर द्वारा सागर क्षेत्र के लगभग **108 मंदिरों को जोड़कर 37 शिविर केन्द्रों** पर श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें **100 से अधिक अध्यापक विद्वानों** द्वारा अध्यापन कराया गया। 5000 से अधिक शिविरार्थियों ने इसमें भाग लिया है। उक्त कार्यक्रम का सामूहिक समापन समारोह दिनांक 21 मई 2023, रविवार, सायं 8.00 बजे से आयोजित है। श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर के 26 वर्षों की सम्पूर्ति के उपलक्ष्य में इस वर्ष शिविरों का आयोजन हो रहा है। श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर निरंतर जिनवाणी के प्रति बहुमान प्रकट करता हुआ श्रावकजन में स्वाध्याय की परम्परा को पुनर्जीवित कर रहा है। इसी क्रम में आज लगभग 13000 द्वादशवर्षीय पाठ्यक्रम में सम्मिलित श्रावकजन है।

**सागर क्षेत्र में प्रथम चरण में** नेहानगर सागर, मालथौन, बड़ामलहरा, बड़ा मंदिर पथरिया, शांतिनगर बंडा, बड़ामंदिर बंडा, वरी, टड़ा, सुरखी, केसली, रहली, पठारी, परसौरिया, अमरमऊ, बरायठा, बम्हौरी, बकस्वाहा, मड़देवरा, बमीठा व **द्वितीय चरण में** गौराबाई मंदिर, सिंघई मंदिर, बीच का मंदिर, रामपुरा वार्ड, बाहुबली कॉलोनी, वर्णी कॉलोनी, पठा मंदिर, शाहगढ़, गीतांजलि ग्रीनसिटी, गोपालगंज, शनिचरी, अर्हतकूट भाग्योदय, अंकुर कॉलोनी, शांतिनगर पगारा रोड, महावीर मंदिर शास्त्री वार्ड, मनोरमा कॉलोनी, जरूआ खेडा, वर्धमान कॉलोनी, बालक हिलव्यू आयोजित किए गए। **जिसमें प्रथम चरण में** विद्वत्श्री डॉ. आशीष जैन आचार्य, शाहगढ़, श्री सुनील जैन सुधाकर शास्त्री, श्री राकेश जैन शास्त्री खमरिया, श्री राजेश जैन शास्त्री सेसई, श्री अरिहंत जैन शास्त्री बड़ामलहरा, श्री विशांक जैन शास्त्री सौजना, श्री अंकित जैन शास्त्री पडवार, श्री शशांक शास्त्री बड़ामलहरा, श्री नमन जैन शास्त्री खुरई, श्री शुभम जैन शास्त्री महारौनी, श्री श्रेयांस जैन शास्त्री सागर, श्री गर्वित जैन शास्त्री भोपाल, श्री पीयूष जैन शास्त्री मड़देवरा, श्री निकेत जैन शास्त्री भगवां, श्री अरमान जैन शास्त्री जबलपुर, श्री सुपनेश जैन शास्त्री

मोहली, श्री अंकित जैन शास्त्री सिमराखुर्द, श्री रोहित जैन शास्त्री शाहगढ़, श्री सम्यक् जैन तारादेही, श्री निवेश जैन शास्त्री मड़ावरा, श्री प्रिंस जैन शास्त्री लार, श्री प्रसून शास्त्री पठारी, श्री प्राशु जैन शास्त्री टीकमगढ़, श्री रीतेश जैन शास्त्री भगवां, श्री रवीन्द्र जैन शास्त्री महाराष्ट्र, श्री रवीन्द्र जैन शास्त्री सिमरिया, श्री अनिमेष जैन शास्त्री सागर, श्री कमल जैन शास्त्री विराटनगर, श्री पीयूष जैन शास्त्री सागर, श्री नमन जैन शास्त्री, श्री अंकित जैन शास्त्री पड़वार, श्री विजय जैन शास्त्री शाहगढ़, श्री नमन जैन अहमदाबाद, श्री समग्र जैन शास्त्री बुडेरा, श्री गौरव जैन शास्त्री सापोन, श्री सौरभ जैन शास्त्री सागर, श्री श्रेयांस जैन शास्त्री जेवरा, श्री आकाश जैन शास्त्री, श्री आयुष जैन शास्त्री लार, श्री पीयूष जैन शास्त्री सागर, श्री संयम जैन शास्त्री मड़देवरा, दीपक जैन शास्त्री सागर, अंशुल जैन शास्त्री एवं **द्वितीय चरण** में विद्वत्श्री डॉ. आशीष जैन आचार्य, शाहगढ़, पं. राजेश जैन शास्त्री सेसई, पं. पीयूष जैन शास्त्री मड़देवरा, पं. प्रिंस जैन शास्त्री सागर, पं. विवेक जैन शास्त्री एरोरा, श्रीमती आशा जैन सेसई (अहम् योग), पं. संदीप जैन शास्त्री बड़े, पं. सिद्धार्थ जैन शास्त्री रामटौरिया, पं. श्री श्रेयांस जैन शास्त्री घुवारा, पं. श्री हर्ष जैन शास्त्री इंदौर, डॉ. ब्र. समता दीदी मरौरा इंदौर, ब्र. दीक्षा दीदी कोतमा, पं. श्री पीयूष जैन शास्त्री सागर, पं. सुनील शास्त्री द्रोणगिरि, पं. पारस जैन शास्त्री रामटौरिया, पं. बंटी जैन शास्त्री सगरा, श्रीमती अनीता जैन (अहम् योग), श्रीमती कीर्ति जैन (अहम् योग), , शुभम जैन शास्त्री सागर, पं. अरिहंत जैन शास्त्री मलहरा, पं. आकाश जैन शास्त्री मोहली, पं. रोहित जैन शास्त्री शाहगढ़, पं. राकेश जैन शास्त्री खमरिया, पं. अनुज जैन शास्त्री भगवां, पं. विजय जैन शास्त्री शाहगढ़, पं. गर्वित जैन शास्त्री भोपाल, पं. सचिन शास्त्री रिछावर, पं. पीयूष जैन शास्त्री सागर, पं. अभिषेक जैन मलगुवां, पं. श्री दीपेश जैन शास्त्री मड़देवरा, पं. श्री आयुष शास्त्री ललितपुर, पं. अंकित जैन शास्त्री बम्हौरी, पं. प्राशु जैन शास्त्री टीकमगढ़, श्रीमती अनीता जैन छाया, पं. अंशु जैन शास्त्री भगवां, ब्र. चंदन दीदी जबलपुर, ब्र. संध्या दीदी जबलपुर, पं. आशीष जैन शास्त्री बंडा, पं. संयम जैन शास्त्री सागर, पं. श्री राजकुमार शास्त्री सागर, पं. श्री अभिषेक जैन शास्त्री घुवारा, पं. श्री पीयूष जैन शास्त्री बीला, पं. श्री कमल शास्त्री विराटनगर, पं. श्री आयुष जैन शास्त्री लार, अरिहंत जैन शास्त्री पथरिया, पं. श्री शीलचन्द्र जैन ललितपुर, पं. अतिशय जैन शास्त्री छबड़ा, पं. श्री सृजन जैन शास्त्री मड़देवरा, पं. श्री सुदर्शन शास्त्री रामटौरिया, पं. श्री पारस शास्त्री परसौरिया, पं. श्री निवेश शास्त्री मड़ावरा, पं. श्री श्रेयांस शास्त्री जेवरा, पं. श्री अमन जैन शास्त्री बंडा, पं. आनंद जैन शास्त्री मड़देवरा, विजय जैन शास्त्री एरोरा, अक्षय जैन शास्त्री बांदकपुर, रोविल जैन शास्त्री हरदी ने अध्यापन कराया। **स्थानीय संयोजक के रूप में प्रथम चरण** में नेहानगर सागर में श्री कमल जैन, अशोक जैन, श्री के सी जैन, श्री विमल जैन, पं. अनिल जैन शास्त्री, मालथौन में श्री योगेश जैन, श्री अनिल जैन, श्री रजनीश जैन, बड़ामलहरा में श्री महेश जैन, श्री राजेन्द्र जैन, श्री प्रमोद जैन, बड़ा मंदिर पथरिया में श्री कमलेश जैन, श्री राहुल जैन, शांतिनगर बंडा में श्री महेन्द्र जैन,

ब्र. सुमन दीदी बड़ामंदिर बंडा में श्री विजय जैन, ब्र. इन्द्रा दीदी, ब्र. वसु दीदी, देवरी में श्री रजनीश जैन, श्रीमती कल्पना जैन, श्रीमती मंजूषा जैन, टड़ा में श्री महेश जैन, श्री मुकेश जैन, सुरखी में श्री वीरेन्द्र जैन, ब्र. रूपाली दीदी, श्री आगम जैन, रहली में श्री आनंद जैन, श्री सुरेन्द्र जैन, श्रीमती ज्योति जैन, पठारी में डिम्पल जैन, परसौरिया में श्रीमती सोनम जैन, श्रीमती सविता जैन, बरायठा में श्री नीरज जैन शास्त्री, बम्हौरी में श्री चन्द्रकुमार जैन, बकस्वाहा में श्री अनेकान्त जैन, मड़देवरा में श्री विवेक जैन शास्त्री, बमीठा में श्री सोमिल जैन, श्री प्रिंस जैन, श्रीमती मीना जैन, श्रीमती पिंगी जैन, श्री आशीष जैन आदि ने सहयोग प्रदान किया है। **द्वितीय चरण में स्थानीय संयोजकों** में गौराबाई मंदिर से श्री प्रेमचंद जैन बमनौरा, मनीष जैन बम्हौरी, प्रदीप जैन बिलहरा, अभय जैन बरायठा, श्रीमती अनीता जैन छाया, श्रीमती आशा सेठ, श्रीमती अंजु सेठ, नवीन कुमार जैन, सिंघई मंदिर से श्रीमती कुमुद जैन, बीच का मंदिर से कु अदिति आदेश जैन, रामपुरा वार्ड से श्रीमती रजनी जैन, श्रीआलोक जैन, श्रीमती कान्ता जैन, बाहुबली कॉलोनी से श्रीमती कीर्ति जैन, श्री दीपक जैन प्ला स्टिक, श्री सुनील जैन, श्रीमती मोना जैन, श्रीमती सारिका जैन, श्रीमती अदिति चौधरी, वर्णी कॉलोनी से श्री चक्रेश सिंघई, श्रीमती जयश्री जैन, श्रीमती रेखा जैन, वंदना जैन, श्रीमती उषा जैन, श्रीमती ज्योति खमकुआ, श्रीमती रचना जैन दिगम्बर, श्रीमती सुनीता जैन, श्रीमती ऋतु जैन, पठा मंदिर से श्रीमती कविता जैन, शाहगढ़ से श्री विमल कुमार खटौरा, प्रवीण जैन तिगोड़ा, कमल कुमार डेवडिया, रिंटु सेठ (विवेक भैया), गीतांजलि ग्रीनसिटी से अंकुश जैन बहेरिया, वैभव जैन, श्रीमती रजनी जैन, संजय जैन वाघराज, कविता जैन वाघराज, प्राची जैन वाघराज, गोपालगंज से श्री राहुल जैन सतभैया, श्री ऋषभ जैन, शनिचरी से ब्र. रचना दीदी, अर्हत्कूट जिनालय भाग्योदय से श्री राजेश जैन शिक्षक, श्री दीपेश जैन सोनू, श्रीमती निराली जैन, अंकुर कॉलोनी से पं.श्री उदयचन्द शास्त्री, श्रीमती माया विनोद जैन, श्रीमती सीमा जैन bsnl, शांतिनगर पगारा रोड़ से श्री पंकज जैन, श्री अशोक जैन, श्री शैलेश जैन, महावीर मंदिर शास्त्री वार्ड से श्री प्रदीप जैन, श्री अनिल जैन, श्री संदीप जैन, मनोरमा कॉलोनी से श्री अरूणकुमार सिंघई, श्री धर्मेन्द्र भायजी, जरूआखेडा से श्री राकेश मोदी, श्री सुनील अनिमेष जैन, श्री सुकुमाल जैन, वर्धमान कॉलोनी से डॉ. पवन जैन शिवा मेडीकल, कमल जैन बिलहरा, पवन जैन जूना पायल वाले, बालक हिलव्यू से आलोक कुमार जैन, पं. प्रकाशचन्द जैन बरा, सुरेन्द्र जैन प्राचार्य, श्रीमती सपना जैन आदि का सहयोग प्राप्त हुआ है।

सभी शिविरों का एक साथ प्रारंभ दिनांक 12 मई 2023 को प्रातः 8 बजे से हुआ। जिसमें मंगलाचरण, कलश स्थापना के साथ उद्घाटन सत्र प्रारंभ किया गया। तत्पश्चात् कक्षाओं का विधिवत् संचालन हुआ। प्रत्येक स्थान पर बालबोध भाग -1 एवं द्वितीय, छहदाला, भक्तामर स्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र, आलापपद्धति, सर्वार्थसिद्धि, इष्टोपदेश, रत्नकरण्डकश्रावकाचार, पुरुषार्थसिद्धि उपाय

आदि ग्रन्थों का अध्ययन कराया गया। इसमें लगभग 2000+3000= 5000(दो शिविरों को मिलाकर) श्रावकों द्वारा परीक्षा दी गई।

समय-समय पर शिविरों के निरीक्षण के लिए वरिष्ठ विद्वान् श्री सुरेश जैन मारौरा, श्री नन्हेभाई जैन शास्त्री सागर आदि द्वारा किया गया। शिविर गौरव अध्यक्ष श्री संतोष जैन घड़ी, शिविर अध्यक्ष श्री चक्रेश जैन सिंघई एवं राकेश जैन चच्चा के मार्गदर्शन में सागर शिविरों का सफल संचालन हुआ है।

बाहुबली कॉलोनी एवं वर्णी कॉलोनी में श्री अरूण जैन शास्त्री जबलपुर के मार्गदर्शन में विद्यावर्धन बाल संस्कार का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें सभी ने बढ़ चढ़कर के भाग लिया।

श्री मुकेश जैन शास्त्री ललितपुर, पंडितश्री विजय जैन शास्त्री, डॉ. शैलेश जैन बांसवाड़ा, डॉ. सोनल जैन शास्त्री दिल्ली, डॉ. राजेश जैन शास्त्री ललितपुर, आनंद जैन शास्त्री रामटौरिया, अमित जैन शास्त्री जबलपुर आदि का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है।

प्रतिदिन कक्षाओं का विद्वानों निरीक्षण किया गया एवं साँगानेर के पदाधिकारियों को सूचना भी दी गयी। साथ-साथ मुख्य संयोजक श्री उत्तमचन्द जी पाटनी का निरंतर मार्गदर्शन प्राप्त करते करके ही कार्य सम्पादित किया है।

श्री दिगम्बर जैन मंदिर वर्णी कॉलोनी समिति का अध्यापन कराने वाले सभी विद्वानों के आवास और भोजन की सामूहिक व्यवस्था की और सामूहिक समापन वर्णी कॉलोनी एवं गौराबाई दिगम्बर जैन मंदिर कटरा सागर के संयुक्त रूप से निभायी गयी है, जो कि प्रशंसनीय है और हम आपके आभारी भी है।

हम जिनवाणी की आराधना के साथ-साथ मानव जीवन को कैसे रचनात्मकता की ओर ले जाना है, इसका पूर्ण ध्यान रखते हुए आयोजन को कर रहे हैं, जिसके श्रेष्ठ और उत्तम परिणाम प्राप्त हो रहे हैं। इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए हम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री विद्यालसागरजी महाराज के आभारी हैं जिन्होंने सफल होने का आशीर्वाद प्रदान किया। पूज्य निर्यापक मुनिपुंगव सुधासागरजी महाराज की प्रेरणा, जिन्होंने इस सम्पूर्ण आयोजन को चारचाँद लगाए हैं। हमारा संस्थान, जिसने अवसर और सेवा प्रदान की, शिविर समिति के सभी वरिष्ठजन, हमारे सभी साथी, सभी अध्यापक विद्वान्, सभी स्थानीय संयोजक, सभी मंदिरों के पदाधिकारीगण,

नींव के रूप में कार्य करने वाले महानुभाव, समापन समारोह की आयोजन समिति आदि आप सभी के हम बहुत बहुत आभारी हैं, जिन्होंने ऐसा श्रेष्ठ अवसर प्रदान किया है।

ये शिविर निश्चित ही मानवीय जीवन के लिए तो उपयोगी हैं ही, साथ-साथ पारलौकिक जीवन के आधार हैं। प्रत्येक जन अपने कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने के लिए इन शिविरों की ओर नजरें टिकाये बैठा है, आगामी वर्ष में पुनः शिविरों का आयोजन हो, ऐसी भावना हम तक पहुँच रही है। यह हमारी श्रेष्ठतम उपलब्धि है।

**❖ सांगानेर द्वारा आयोजित श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविरों के विषय में विशिष्ट महानुभावों, विद्वानों एवं शिविरार्थियों आदि के विचार -**

- सागर नगर विधायकश्री शैलेन्द्र जैन जी द्वारा (जैसा कि उन्होंने श्री दि जैन मंदिर गौराबाई सागर में सामूहिक शिविर समापन 25 मई 2022 को अपने विचार व्यक्त किए)

श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर जयपुर द्वारा श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविरों का आयोजन वृहत् स्तर पर सागर क्षेत्र में किया गया। जिसका सामूहिक समापन समारोह श्री दि जैन गौराबाई मंदिर कटरा बाजार सागर में आयोजित किया गया। मैं भी वहाँ पहुँचा और शिविरार्थी का उत्साह देखकर अत्यंत प्रसन्न हुआ। समाज की उन्नति के लिए शिक्षा के प्रति किए जा रहे प्रयास ही सराहनीय कदम है, मैं इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ। साँगानेर के विद्वानों ने वास्तव में बहुत ही श्रेष्ठ कार्य किया है। आज धार्मिक पढ़ाई के प्रति आप सभी का इतना अधिक रुझान देखकर मुझे गौरव हो रहा है। मैं साँगानेर की पूरी टीम को शुभकामनाएँ और बधाईयाँ देता हूँ।

- अधिष्ठाता श्री डॉ. जयकुमार जैन (नेहानगर सागर में सामूहिक शिविर समापन के अवसर व्यक्त भावाव्यक्ति)

श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान सच्चे देव-शास्त्र-गुरु के लिए सादर समर्पित होकर कार्य कर रहा है। परम पूज्य मुनिपुंगव सुधासागरजी महाराज ने आबाल-वृद्ध को जिनधर्म के प्रति हृदय आस्थावान् बनाये रखने के लिए अनेक उपक्रमों हेतु आशीर्वाद प्रदान किया है। श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर की स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने पर श्रमण संस्कृति रजत गौरव महोत्सव का आयोजन बड़ी भव्यता के साथ किया जा रहा है। जिसमें देशभर में शिक्षण शिविरों का वृहत् आयोजन किया जा रहा है। इसी उपक्रम में सागर क्षेत्र के विभिन्न अंचलों में शिक्षण शिविरों का आयोजन हुआ। बुंदेलखंड की इस धरा पर ज्ञान-ध्यान और अध्यात्मिकता के लिए निरंतर प्रयास किये जाते रहे हैं। हम भी उसी क्रम में आपके मध्य आये हैं। मैंने सागर क्षेत्र के विविध स्थानों पर आयोजित शिविरों के सामूहिक समापन नेहानगर सागर में उपस्थित होकर आनंद की अनुभूति कर रहा हूँ। जिस भव्यता और दिव्यता के साथ सामूहिक समापन का कार्यक्रम किया गया है वह अद्वितीय है। इस कार्यक्रम से ही शिविर की सफलता को जाना और समझा जा सकता है। डॉ. आशीष जैन आचार्य के संयोजन में यह शिविरों आयोजन निश्चित ही नवीन आयामों को स्थापित करेगा।

- **निदेशक डॉ. शीतलचन्द्र जैन के भाव** - श्रमण संस्कृति संस्थान, साँगानेर द्वारा अपने 25 वर्षों के कार्यकाल में यह एक ऐतिहासिक कार्य है, जिसमें वृहत् स्तर पर भारत वर्ष में शिविरों का आयोजन किया गया है। हालांकि शिविरों का कार्य संस्थान नियमित रूप से करता आया है और करता रहेगा। चूँकि संस्थान ने इस वर्ष रजत गौरव महोत्सव के उपलक्ष्य में शिविरों के आयोजन को प्राथमिकता दी है। इस वर्ष सागर क्षेत्र के शिविरों की प्रशंसा सुदूर तक पहुँची। डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़ के अथक परिश्रम ने उनके संस्थान के प्रति समर्पण के भाव प्रदर्शित किया है। शिविरों का आयोजन करने वाले, कराने वाले, इसमें पढ़ने वाले आदि सभी को पुण्यसंचय ही होता है। यही पुण्य आपको इस लोक और परलोक की सम्पदा दिलाता है इसलिए जो भी इन शिविरों से जुड़ रहे हैं सही मायने में वे अपने पुण्यसंचय के कार्य से जुड़ रहे हैं अपने कल्याण से जुड़ रहे हैं। आशा करता हूँ कि डॉ. आशीष जैन आचार्य और उनकी पूरी टीम इसी प्रकार से कार्य करते रहेंगे और जिनवाणी की निस्वार्थ सेवा करना ही परम ध्येय बनाकर आत्मकल्याणार्थ कार्य करते रहेंगे, ऐसी अनंत शुभकामनाएँ हैं।

- **प्राचार्य अरूण कुमार जैन** (जैसा कि उन्होंने श्री नाभिनंदन दिगम्बर जैन मंदिर बीना शिविर के समापन समारोह अपने विचार व्यक्त किए)

सागर क्षेत्र में आयोजित शिविरों के दौरान मैं बीना शिविर के समापन के अवसर पर पहुँच पाया हूँ। यहाँ दृश्य देखकर मैं अभिभूत हो गया हूँ। आज श्रुत पंचमी का दिन है। सभी शिविरार्थियों की विविध गतिविधियाँ अपने आप में उत्कृष्ट रही। माता-बहिनें अपने माथे पर जिनवाणी रखकर चली थी, कुछ माता-बहिनें मंगलकलश लिए थी, बच्चे झंडा लेकर चल रहे थे, कुछ नारों लिखे तख्तियों को लेकर चल रहे थे। बीना नगर का यह एक ऐतिहासिक शिविर होगा। यहाँ का उत्साह देखकर हमें हर्ष और गौरव की अनुभूति हुई कि हमारे संस्थान ने जिन पौधों को सींचा था, आज वे वृक्ष बनकर हजारों लाखों लोगों को अपनी ज्ञान छाया दे रहे हैं। क्षेत्रीय संयोजक डॉ. आशीष जैन आचार्य की अद्भुत और अवर्णनीय प्रबंधन क्षमता भी यहाँ समझ आयी। उन्होंने जिन ढंग से शिविरों का प्रबंधन किया है वह काबिले तारीफ है। सागर क्षेत्र में उन्होंने लगभग 100 स्थानों पर शिविरों का आयोजन किया है, जो कि बहुत बड़ी संख्या है। पूरी टीम को ढेर सारी शुभकामनाएँ दे रहे हैं और वे सब इसी प्रकार से कार्य करते रहे, ऐसी आशा करता हूँ।

- **उत्तमचन्द्र पाटनी जयपुर** (जैसा कि उन्होंने बीना शिविर के समापन समारोह में विचार व्यक्त किए)

सागर क्षेत्र में आयोजित शिविरों के दौरान मैं और प्राचार्य अरूण कुमार जैन साँगानेर, बीना शिविर में आज 4 जून 2022 को यहाँ आए। आज श्रुत पंचमी का महान पर्व है। शिविर समापन भी इसी दिन होना था। बीना नगर में एक ऐतिहासिक शिविर का आयोजन हुआ। आज प्रातःकाल जिस प्रकार से हजारों जनसमूह जिनवाणी को मस्तिष्क पर रखकर शोभायात्रा निकाल रहे थे, वह दृश्य अत्यंत आह्लादकारक रहा। शिविर में शिविरार्थियों की खूब खूब संख्या और संस्थान के प्रति सभी शिविरार्थियों की श्रेष्ठ भावनाओं ने हमें अभिभूत किया है। पूरे भारतवर्ष में शिविरों का आयोजन चल रहा है। इसमें सागर क्षेत्र के शिविरों का अपना विशेष महत्त्व रहा है। संयोजक डॉ. आशीष जैन

आचार्य, शाहगढ़ और उनकी पूरी टीम को ढेर सारी शुभकामनाएँ और आशीर्वाद है, कि वे इसी समर्पण के साथ संस्थान से जुड़कर कार्य करते रहे।

- **विद्वत्श्री सुनील सुधाकर शास्त्री उपसंयोजक सागर शिविर** -सागर क्षेत्रीय संस्कार शिक्षण शिविर: संस्कारों की सुव्यवस्थित आयोजना - मानव जीवन में संस्कारों का महत्व सदैव सर्वोपरि रहा है। संस्कार हीनः पशुभिः समानः युक्ति संस्कारों के महत्व को मूर्धन्य रूप से प्रतिष्ठापित करती है। जीवन में संपूर्ण संसाधनों की उपलब्धता के बावजूद यदि संस्कारों का अभाव है तो संसार की संपूर्ण उपलब्धियाँ भी तुच्छ प्रतीत होती हैं। भारतीय संस्कृति में जैन संस्कृति तो संस्कारों की पर्याय रूप संस्कृति ही है। मानव जीवन संस्कारों के माध्यम से ही उत्कर्ष को प्राप्त होता है। वर्तमान परिपेक्ष की समाजिक परिस्थितियाँ विद्रूपता से भरी हुई हैं। संस्कारों के प्रति जागरूकता के लिए प्रतिबंधित करने वाली हैं। आज का युग भौतिकता एवं सांसारिक संसाधनों की महत्वता का युग है। जिसमें अर्थ एवं भौतिक उपलब्धि को ही उत्कर्ष का प्रतीक माना जाता है। ऐसे विषम वातावरण में हम अपनी संस्कृति एवं परंपराओं का परित्याग करते जा रहे हैं। अधर्म पापाचरण की ओर उन्मुख हो रहे हैं। आज का युवा वर्ग धर्म से विमुख होकर अर्थ की ओर ही उन्मुख है। जिससे पारिवारिक एवं निजी जीवन अत्यंत अशांत हो रहा है, अवसाद एवं नकारात्मकता जीवन को बहुत हद तक प्रभावित कर रही है। व्यक्ति स्वार्थ से युक्त होकर सिर्फ अपने तथाकथित उत्थान में लगा है। सामाजिकता, संयुक्त परिवार, सेवा, करुणा आदि उदात्त भाव मनसे रिक्त हो रहे हैं। ऐसे विषम संस्कार विहीन वातावरण में परम पूज्य निर्यापक मुनि सुधा सागर जी महाराज की पावन प्रेरणा एवं संत शिरोमणि आचार्य भगवन विद्यासागर जी महाराज के पावन आशीर्वाद से संचालित श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर एक आशा की किरण के रूप में प्रतिष्ठापित होकर संस्कारों के पुनर्जागरण हेतु अहर्निश प्रयत्न कर रहा है। अपनी स्थापना के 25 वर्षों की पूर्णता के साथ श्रमण संस्कृति रजत गौरव महोत्सव संपूर्ण भारत वर्ष में धार्मिक शिक्षण शिविरों के वृहद आयोजन एवं संस्कारों के शंखनाद के साथ मनाया जा रहा है। संस्कार शिक्षण शिविर सम्पूर्ण भारत देश को विभिन्न अंचलों में बांट कर संस्थान के प्रतिभावान समर्पित विद्वानों को सुचारू रूप से शिविर संचालन एवं संयोजन का गुरुतर कार्य सौंपा गया है। सागर नगर में निवासरत होने के कारण मुझे भी सागर अंचल के लगभग 108 स्थानों पर आयोजित शिक्षण शिविरों को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने का अवसर प्राप्त हुआ। संस्थान के प्रथम बैच के प्रतिभाशाली, समर्पित, प्राकृत भाषा के मर्मज्ञ विद्वान डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़ के प्रधान संयोजन में सागर क्षेत्रीय शिक्षण शिविर ऐतिहासिक एवं नूतन आयामों के साथ संपन्न हुए। सागर क्षेत्रीय शिविरों में विभिन्न प्रकार के नवाचार एवं विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से शिक्षण शिविरों को रोचक एवं गुणवत्तापूर्ण संचालित किया गया। संस्थान के लगभग 35 समर्पित विद्वानों द्वारा तत्त्वार्थ सूत्र, छहढाला, आलाप पद्धति, द्रव्य संग्रह, इस्टोपदेश, भक्तामर स्तोत्र, आदि विभिन्न विषयों की कक्षाओं के साथ दैनिक जीवन में की जाने वाली श्रावकोचित क्रियाओं का भी अनुगमन कराया गया। सागर क्षेत्रों में क्षेत्रीय शिविरों में विशिष्ट योजना के साथ श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर के गौरवपूर्ण 25 वर्षों की उपलब्धियों को एवं पूज्य मुनि सुधा सागर जी महाराज की उदात्त भावना को जन जन तक पहुंचाने का पुनीत कार्य शिक्षण शिविरों के माध्यम से संपन्न हुआ।

सागर क्षेत्रीय शिविर में संस्कारों के शंखनाद का पुनीत उद्देश्य लेकर किया गया कार्य अपने लक्ष्य की संपूर्ण सिद्धि के साथ निरंतर गतिशीलता को प्राप्त है। श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर निस्वार्थ भाव से आज वह कार्य कर रहा है जिस कार्य की समाज में नितान्त आवश्यकता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास संस्कारी जीवन से ही संभव है। ज्ञान समान न आन जगत में सुख को कारण है ज्ञान ही सुख की उपलब्धता का मूल कारण है। अतः श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर संपूर्ण जनमानस को जैन दर्शन के तत्वज्ञान के साथ-साथ संस्कारित जीवन जीने का जो पवित्र मार्ग दिखा रहा है उससे संस्थान का गौरव सहस्र वर्षों तक स्थाई रहेगा, एवं पूज्य गुरुदेव सुधा सागर जी महाराज का प्रचंड तेज अंधकार को नष्ट कर दिव्य प्रकाश पुंज सदैव बिखराता रहेगा। पूज्य मुनिपुंगव सुधा सागर जी महाराज का गर्व श्रमण संस्कृति संस्थान जयवंत हो। श्रमण संस्कृति रजत गौरव महोत्सव जय वंत हो। जय वंत हो। जय वंत हो।

- **श्री चक्रेश सिंघई अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रभ दिग. जैन मंदिर वर्णी कॉलोनी सागर** - प्रचंड ग्रीष्म ऋतु में सुधातुल्य रहे शिक्षण शिविर - मई-जून की भीषण ग्रीष्म ऋतु में श्रमण संस्कृति संस्थान द्वारा संस्कार शिक्षण शिविरों का आयोजन करने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ स्थानीय संयोजक के रूप में। शिविर के स्वरूप को बहुत ही नजदीक से समझने का अवसर प्राप्त हुआ। शिविर की व्यवस्थाओं के बीच में थोड़ा समय निकालकर कभी-कभी कक्षा में अध्ययन करने का भी अवसर प्राप्त होता था शिविर की संयोजन से पहले शिविर के प्रति जो उदासीनता का भाव था वह शिविर के आयोजन के प्रथम दिन ही उत्साह में बदल गयी। शिक्षण शिविर का ऐसा स्वरूप एवं व्यवस्थित कार्य योजना देखकर लगा कि धार्मिक शिक्षण शिविर ही एकमात्र उपाय हैं जो समाज में धार्मिक कार्यों के प्रति बढ़ रहे शिथिलाचार एवं उदासीनता को समाप्त करके आगामी पीढ़ी के लिए संस्कारों की ऊर्जा और उत्साह का संचार कर सकते हैं। पहले लगा था इतनी भीषण गर्मी में बच्चे कैसे धार्मिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए एकत्रित हो पाएंगे लेकिन जब सांगानेर से पधारे भैया जी लोगों के द्वारा रोचक एवं सरल तरीके से अध्यापन कार्य प्रारंभ हुआ तो शिक्षण शिविरों में धार्मिक शिक्षा प्राप्त करने वालों की कतार लग गई। यहां तक की बैठक व्यवस्था भी बार-बार परिवर्तित करने का अवसर उपस्थित हुआ। सागर नगर के ही गौरव स्थानीय विद्वान श्रमण संस्कृति संस्थान के प्रथम बैच के स्नातक रहे डॉ आशीष जैन आचार्य एवं उनकी टीम का कुशल संयोजन अद्भुत रहा उनके कुशल नेतृत्व एवं विद्वत्ता पूर्ण कार्यों ने संपूर्ण शिविर को गौरव प्रदान किया ऐसे शिक्षण शिविरों का आयोजन इस तरह लग रहा था कि मानो प्रचंड ग्रीष्म ऋतु में मुनि पुंगव सुधासागर जी द्वारा निरूपित वचनों का अमृत ही बरस रहा हो जिनके वचनों से आबाल-वृद्ध के हृदय में अपार शीतलता का अनुभव हुआ है। आज वर्तमान समय में जिस तरह की परिस्थितियां समाज में निर्मित है उन विषम परिस्थितियों के समाधान के लिए प्रतिवर्ष प्रत्येक दिगंबर जैन मंदिर में आग्रह पूर्वक शिक्षण शिविरों का आयोजन अवश्य ही होना चाहिए।
- **श्री संतोष जैन घड़ी ,निदेशक - बीटीआईआरटी कॉलेज सागर** - जीवन्त व्यक्तित्वों को संस्कारित कर रहे सांगानेर के शिविर - सागर नगर में समय-समय पर विभिन्न आचार्यों, साधु-संतों ,विद्वानों

का समागम प्राप्त होता रहता है। धर्मउर्वरा भूमि सागर नगरी को अनेक महान संतों, महापुरुषों, व्रतीजनों, विद्वानों को को उत्पन्न करने का गौरव प्राप्त है। नगर के प्रसिद्ध व्यवसायी, समाज सेवा में अग्रणी एवं शिक्षण कार्य से जुड़े होने के नाते मुझे विभिन्न आयोजनों शिक्षण शिविरों आदि में सम्मिलित होने का हमेशा गौरव प्राप्त होता रहता है। श्रमण संस्कृति रजत गौरव महोत्सव के अंतर्गत इस बार सागर नगरीय क्षेत्रों व खासकर गौराबाई दिगंबर जैन मंदिर को केंद्र में रखकर आयोजित श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर को बहुत नजदीक से जानने का अवसर प्राप्त हुआ। वास्तव में पूज्य मुनि श्री सुधा सागर जी महाराज के पावन आशीर्वाद एवं प्रेरणा से संचालित श्रमण संस्कृति संस्थान द्वारा सामाजिक संस्कारों के लिए दिया जा रहा योगदान संस्तुत्य है। श्रमण संस्कृति संस्थान के ही स्नातक विद्वान डॉ आशीष जी आचार्य के मार्गदर्शन में संचालित शिक्षण शिविर कुछ अलग एवं अनूठे रहे हैं। जो परंपरागत धारणाओं से हटकर कुछ नवीन क्रियाकलापों के द्वारा रोचकता एवं अपनी लक्ष्य की प्राप्ति में सफल रहे हैं। श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर में दिए जा रहे संस्कार अध्यापन कराने आए सभी भैया जी के मुख मंडल पर झलकते दिखाई देते हैं। बुंदेलखंड के बच्चों में इस तरह की अद्भुत प्रतिभा का समावेश कर उन्हें तराशने का अद्भुत कार्य श्रमण संस्कृति संस्थान के द्वारा किया जा रहा है। वास्तव में पाषाण के प्रतिबिंब का संस्कार करने के साथ-साथ जीवंत व्यक्तित्व को संस्कारित करना भी वर्तमान समय की आवश्यकता है। डॉ आशीष जी आचार्य जी के कुशल नेतृत्व में संचालित सागर क्षेत्रीय शिक्षण शिविरों ने निश्चित ही नए आयाम स्थापित किए हैं। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि संस्थान द्वारा इस तरह का पुनीत कार्य प्रतिवर्ष संचालित होता रहेगा। रजत गौरव वर्ष के अवसर पर संस्कारों का जो शंखनाद हुआ है उसकी ध्वनि कई वर्षों तक वातावरण में गुंजायमान रहेगी। हमारे लिए सौभाग्य का विषय रहा कि मुझे ऐसे पावन कार्य में प्रत्यक्ष सहभागिता एवं व्यवस्थाएं करने का अवसर प्राप्त हुआ। भविष्य में भी ऐसे पावन कार्यों के लिए जो भी सहयोग बन पड़ेगा उस सहयोग के लिए संकल्पित और कटिबद्ध रहूंगा।

- **श्री विकास जैन सिंघई** - श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविरों की सुव्यवस्थित कार्ययोजना - श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर की स्थापना के 25 होने पर श्रमण संस्कृति रजत गौरव महोत्सव मनाया गया। संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का आशीर्वाद और निर्यापक मुनिपुंगवश्री सुधासागरजी महाराज की प्रेरणा से इस महोत्सव को गति प्राप्त हुई। इस महोत्सव को मनाने के लिए पूरे देश में संस्कार शिक्षण शिविरों की आयोजना बनाई गई। इस आयोजना में संस्थान के ही पूर्व छात्रों को क्षेत्रीय प्रभारी नियुक्त करके शिविरों की आयोजन के लिए पहल की गई। मैंने संस्थान में बैठकर शिविरों के लिए सपोर्ट किया। पाठ्यक्रम सामग्री, सम्मान सामग्री आदि के लिए तत्पर होकर सही समय पर शिविर स्थानों पर पहुँचाया। दो से तीन माह तक यह कार्य चला। इस कार्य में परिश्रम तो बहुत हुआ पर जो जिनवाणी की अभूतपूर्व प्रभावना हुई है, उसके लिए मेरे हृदय में संतोष पैदा हुआ है।

सम्पूर्ण देश में लगभग 1500 से अधिक शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में हमारे स्नातकों के अलावा स्थानीय विद्वानों ने भी अपना सहयोग प्रदान किया। द्वादशवर्षीय

पाठ्यक्रम के लिए भी अनेक श्रावकों ने बढ़-चढ़कर स्वाध्याय करने का संकल्प लिया है। हमारे स्नातक विद्वानों ने अपने विद्वत्ता के साथ-साथ अपने उदारचरित्र से समाज को लाभान्वित किया है।

मैं बात करूँ तो सागर शिविरों की। इतना ही कहना श्रेयस्कर समझ पा रहा हूँ कि यदि सुव्यवस्थित कार्ययोजना देखना हो तो सागर शिविरों की देख सकते हैं। डॉ. आशीष जैन आचार्य के शिविर आयोजन के लंबे अनुभवों ने सागर शिविरों के माध्यम से संस्थान को नयी ऊँचाईयाँ दी है। निश्चित ही भविष्य में भी ऐसे ही आयोजन होते रहेंगे और हम सब मिलकर जिनवाणी की अभूतपूर्व प्रभावना करेंगे।

- **अरुण जैनशास्त्री जबलपुर** - ज्ञान आराधना के साथ संस्कार- श्री दिगंबर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान के संस्कृति रजत गौरव महोत्सव के अवसर पर वर्ष 2022 में मध्य प्रदेश के सागर जिले अंतर्गत श्री पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर वर्णी कॉलोनी सागरमें ग्रीष्मकालीन शिविर पढ़ाने का अवसर मिला। समाज धर्म निष्ठ एवं संस्कारित है 10 दिनों तक निष्ठा के साथ आलापपद्धति, सर्वार्थसिद्धि आदि महान ग्रंथों का अध्यापन कराया एवं मेरे साथ अनुज सुनील शास्त्री खरगापुर एवं दीपक शास्त्री सागर द्वारा विशेष कक्षाओं का आयोजन किया गया। संपूर्ण सागर के संयोजक शिविर प्रभारी डॉ. आशीष जैन आचार्य श्री सुनील कुमार जी जैन सुधाकर शास्त्री श्री अरिहंत शास्त्री सुनील शास्त्री राजेश शास्त्री आदि का विशेष योगदान रहा। वर्णी कॉलोनी सागर श्रीमती रेखा नरेंद्र जैन, श्रीचक्रेश जैन सिंघई, श्री मनोज जैन, श्रीमती जयश्री जैन आदि का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। शिविरों में ज्ञान आराधना के साथ संस्कार और धर्म प्रभावना का उपक्रम भी सर्वश्रेष्ठ स्तर पर रहा।
- **संजीव जैन शास्त्री बरा** - प्रतिभा स्वाभाविक होती है जिसका साक्षात् रूप मैंने सागर शिविरों में देखा - जिनशासन की प्रभावना श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर का मूल उद्देश्य है.. उसी तथ्य को अपना मुख्य ध्येय बनाकर हमारे संस्थान के स्नातक जन - जन तक जिनवाणी को पहुंचाने शत प्रतिशत सफल हुए हैं। जिसका श्रेय जाता है हमारे संस्थान के प्रेरणास्रोत निर्यापक मुनिपुंगवश्री सुधासागरजी महाराज को एवं वहाँ के कुशल नेतृत्व क्षमता को। सागर शिविरों में हमने डॉ. आशीष जैन आचार्य की कार्य शैली को देखा, उससे इस बात का अनुभव हुआ है कि यदि नीतिबद्ध तरीके से कार्य किए जाए, तो उसकी चमक अलग ही होती है। कार्यक्रम का आगाज व समापन दर्शनीय था जिसकी आज भी चर्चाएं होती हैं.. सागर शिविर से प्रेरित होकर अन्य संयोजकों ने भी अपने कार्यक्रमों को सफल बनाया है..
- संस्थान की गरिमा के अनुरूप तन मन धन से यह कार्य सम्पादित किया है यह संस्थान के प्रति समर्पण का ही परिचायक है.. महान व्यक्तित्व का निर्माण महान विचारों से होता है वहीं महान विचार अद्भुत कार्य के निर्माण में सहायक होते हैं उससे ऐसे कार्य सम्पन्न होते हैं जो इतिहास में अमर हो जाते हैं, सागर शिविर इस बात की मिशाल है।
- जहाँ जहाँ भी शिविर लगे हैं.. हजारों की संख्या लोग लाभान्वित हुए हैं.. सभी जगह से समाज ने संस्थान को मेरे माध्यम से प्रशंसा पत्र भेजे हैं.. विद्वानों को भी बहुत कुछ सीखने को मिला है.. हम

आशा करते हैं कि इसी प्रकार से संस्थान के प्रति आप सभी का सहयोग मिलता रहेगा। सागर शिविर की अपार सफलता के लिए पुनः बधाईयाँ और शुभकामनाएँ ...

- **राजेश जैन शास्त्री सेसई** - कोतमा नगर में श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। जिसके संयोजक का आशीष जैन आचार्य द्वारा किया गया। जिसमें मुझे (राजेश जैन शास्त्री) एवं अरिहंत जैन शास्त्री ने अध्ययन कराने का अवसर प्राप्त हुआ। जिसमें सुबह से बच्चों को पूजन प्रशिक्षण, उसके बाद भाग - एक, भाग - दो की कक्षा संचालित की, जिसमें 80 से अधिक संख्या में बच्चों ने भाग लिया एवं दोपहर में छहढाला जी की कक्षा संचालित की जिसमें 50 से अधिक महिलाओं ने भाग लिया। उसके बाद भक्तामर जी की कक्षा लगाई गई उसमें भी 70 से अधिक महिलाओं ने भाग लिया एवं सायंकालीन भक्तिभाव से आरती और उसके बाद पुनः भाग 1-2 की एवं द्रव्य संग्रह जी की कक्षा संचालित की। अंत में बाल संस्कार अनुष्ठान का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया जिसमें संपूर्ण समाज के लोगो ने भाग लिया और बहुत ही उत्साह दिखाया।
- **आनंद कुमार जैन शास्त्री रामटौरिया** - सागर क्षेत्र के शिविरों का अद्वितीय अनुभव - श्री दिगंबर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान रजत जयंती वर्ष के अंतर्गत आयोजित संस्कार शिविर में अध्यापन करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। इस उपक्रम में मेरे द्वारा बालक कॉम्प्लेक्स, सागर और बालक हिल ब्यू, सागर इन दोनों स्थानों पर अध्यापन कराया गया। यह संपूर्ण शिविर वास्तव में अद्भुत और अद्वितीय रहे हैं। शिविर का अर्थ होता है - वह है जो हमें शिव अर्थात् मुक्ति की ओर ले जाए। मोक्ष की ओर ले जाने का कार्य इन शिविरों के माध्यम से किया गया। स्वाध्याय में लोगों की रुचि देखकर मन उत्साहित है। साथ ही इन शिविरों के माध्यम से हम सब साथी समाज में कार्य कर रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे। यह योग्यता व अवसर प्रदान करने के लिए मैं श्री दिगंबर जैन समाज संस्थान का आभारी हूँ।
- सागर क्षेत्र संबंधी शिविरों के संयोजन टीम का सदस्य होने के नाते मैंने इन शिविरों को बहुत नजदीक से देखा है इस पूरी प्रक्रिया में एक विशेषता जो मैंने चिन्हित की वह है कि क्षेत्रीय प्रभारी में नेतृत्व में आबाल वृद्ध पर्यन्त लोगो ने अति उत्साह पूर्वक शिविरों में प्रतिभाग किया और शिविर के क्षेत्र प्रभारी श्री आशीष आचार्य जी का अद्भुत प्रबंधन शिविरों के माध्यम से देखने मिला उनकी प्रबंधन क्षमता और उनके निरंतर मार्गदर्शन के कारण ही यह सागर क्षेत्र संबंधी शिविर बहुत सुव्यवस्थित तरीके से संचालित हुए। श्रमण संस्कृति संस्थान के प्रति एक बार पुनः धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।
- **-श्रीमती शीला डोडिया, जयपुर** - मोक्ष कुल को प्रकाशित करने वाली साँगानेर की विदुषी बहिनें (सागर शिविर में महत्वपूर्ण योगदान देने वाली)

श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर पूज्य गुरुदेव मुनिश्री सुधासागरजी महाराज की प्रेरणा से जहाँ एक विद्वानों को तैयार कर रहा है वहीं दूसरी ओर विदुषियों के लिए भी अनूठा

उपक्रम तैयार किया है। जिसके श्रेष्ठ परिणाम आज समाज में दिखने लगे हैं। डॉ. आशीष जैन आचार्य, शाहगढ़ द्वारा सागर शिविरों में बालिका छात्रावास की विदुषियों ने अध्यापन कार्य कराया। जैसा कि मैं जानती हूँ कि कटरा सागर में स्वाध्याय का बहुत बड़ा केन्द्र है। वहाँ पर हमारे यहाँ की विदुषियों ने कुशलता से अध्यापन कार्य कराया है, जो कि प्रशंसनीय है और समाज के लिए संस्थान की यह नूतन देन सराहनीय भी है।

- पूज्य गुरुदेव ने हम सबको उत्तरदायित्व दिया है उसे हम गौरव के साथ निभा पा रहे हैं, यह भी उनकी ही देन है। आज गुरुदेव हमारे लिए प्रेरणा दे रहे हैं कि जिनवाणी माँ के लिए सपूतों को तैयार करने के साथ-साथ अपनी सुपुत्रियों को भी तैयार करो क्योंकि आने वाला समय महिलाओं के नेतृत्व का इंतजार कर रहा है। ऐसे में, हम सबका कर्तव्य बनता है कि हम अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए बालिकाओं को भी विदुषी बनाए। इसके परिणाम आप इन शिक्षण शिविरों में आसानी से देख पा रहे होंगे।
- जहाँ एक ओर कहा जाता है कि बेटियाँ एक कुल को नहीं, अपितु दो कुलों को रोशन करती है वहीं हम दूसरी ओर कह सकते हैं कि ये बेटियों दो कुलों के साथ न जाने कितने लोगों को मोक्ष कुल का मार्ग प्रशस्त करने में अपनी सहायता करेगी। सागर शिविरों की ऐतिहासिक सफलता के पूरी टीम को ढेर सारी शुभकामनाएँ। इसी प्रकार से, कार्य करते रहे जिससे जिनवाणी के प्रति हम सब अपना बहुमान प्रकट करते रहे।
- **-कमल जैन कंदवा, नेहा नगर** - ऐतिहासिक ज्ञानाराधना का स्रोत - श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर- मुनिश्री सुधासागरजी महाराज के आशीर्वाद से सांगानेर द्वारा हमारे यहाँ नेहानगर सागर में शिविरों का आयोजन किया गया। हमारी कॉलोनी में सिद्धमती माताजी का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ। जिनकी मार्गदर्शन में सामूहिक समापन का आयोजन भी समाज की ओर रखा गया। जिसको देखकर हम सब बहुत प्रसन्न हुए। ज्ञान का ऐसा अद्वितीय उपक्रम हम सबके लिए प्रेरणीय है। डॉ. आशीष जैन आचार्य के कुशल संयोजन को हम बधाईयाँ देते हैं। सांगानेर के ऐसे अनूठे कार्य निश्चित ही समाज को मार्ग दिखाने का कार्य कर रहे हैं। हमारे यहां पर दीपक भैया सांगानेर, बहुत ही अच्छे ढंग से अध्यापन कराया है, जिसकी जितनी भी प्रशंसा करें उतनी कम है। ऐसे शिविर हर बार लगते रहे यही भावना भाता हूँ।
- **अशोक कुमार जैन नेहानगर सागर** - शिविर ही जो ज्ञानज्योति के साथ संस्कार देते हैं - सांगानेर द्वारा हमारे नेहानगर में शिविर का आयोजन हुआ। इस शिविर में छोटे बच्चों से लेकर वृद्ध तक सभी ने कुछ न कुछ सीखा है। सांगानेर से आये हुए भैयाजी ने बहुत ही बढ़िया ढंग पढ़ाया और हम सबका मार्ग प्रशस्त किया है। मैं मानता हूँ कि ऐसे शिविरों का आयोजन प्रतिवर्ष हमारी समाज हो जिससे हम समाज को नयी दिशा देने में सदा तत्पर बने रह सके। हमारी समाज ने मिलकर नेहानगर में 20-25 शिविर स्थानों का एक साथ सामूहिक समापन का आयोजन भी रखा। उस समय हमें आर्थिकारत्न श्री

सिद्धमती माताजी का ससंघ सान्निध्य भी प्राप्त हुआ था, जिससे हमारा यह कार्यक्रम और अधिक श्रेष्ठ हुआ। साँगानेर संस्थान को बहुत बहुत आभार।

- **- राशिका जैन पिता श्री राजीव जैन (कपासिया) -** संस्कार शिक्षण शिविरों नैतिक मूल्यों पर दिया जा रहा है विशेष ध्यान -श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर द्वारा आयोजित श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर सागर शहर के अनेक अंचलो में नैतिक शिक्षा संस्कार की पाठशाला, रचनात्मक मूल्यों के प्रति जागरूकता, सामाजिक एवं मूल्यपरक शिक्षा के लिए योगदान देने वाली शिक्षा तथा राष्ट्र के प्रति समर्पित भाव को प्रदान करने वाली शिक्षा को लक्ष्य करके आयोजित होने वाले इन शिविरों से देश के विभिन्न स्थानों से पधारे अनेक विद्वानों द्वारा अध्यापन का कार्य कराया जाना हमसे के लिए गौरव की बात है। सागर शहर की नमक मंडी में, वर्णी कॉलोनी, तिलक गंज, रामपुरा वार्ड, दीनदयाल नगर, बालक हिल व्यू आदि अनेक स्थानों पर इन संस्कार शिक्षण शिविरों का आयोजन वृहद् स्तर पर हुआ। इनमें 2000 से अधिक शिविरार्थियों की संख्या है। जिसमें नमक मंडी कटरा में 800 से शिविरार्थी रहे हैं। इस प्रकार के शिविरों में हमारे पूरे जीवन को परिवर्तित किया है। धर्म का ज्ञान हुआ है और जीवन को सकारात्मक रूप से जीने का फलसफा मिला है। बहुत बहुत धन्यवाद आप सबका। महाराजश्री के लिए नमोस्तु!
- **नाम - जैनी जैन पिता जयकुमार जैन(उम्र 14 वर्ष, विषय - भाग - 2) -** श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर में हमें बहुत सारी चीजों को सीखने का मौका मिला। बहुत सारे धार्मिक कार्यक्रम हुए जिसमें बच्चों और बड़ों ने भाग लिया और शिविर के दौरान विद्वान भैया जी का सम्मान किया गया। सुबह के समय योग होता है और उसके बाद 6:30 बच्चे से पूजा होती है और उसके बाद मिष्ठान वितरण और उसके बाद भैया 'पीयूष' हमें भाग-२ का अध्ययन कराते हैं जिसमें भैया जी हमें बहुत अच्छे से अध्ययन कराते हैं और खेल-खेल में सिखाते भी हैं। मैंने तो इस शिविर से बहुत खुश होना भी सीखा है और पाया है कि जीवन में अच्छे बनना है तो धर्म का साथ कभी नहीं छोड़ना है।
- **श्रीमती ममता जैन कटरा बाजार सागर -** शिविरों की ऐतिहासिक आयोजना- श्री दिगंबर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान साँगानेर द्वारा आयोजित धार्मिक संस्कार शिक्षण शिविर में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। वास्तव में शिक्षण शिविर के माध्यम से जिनवाणी का जो मर्म हृदय की गहराइयों में समाहित हुआ वैसा स्वरूप आज तक समझ में नहीं आया। साँगानेर से पधारे भैया जी लोगों द्वारा बहुत ही सहज एवं सरल भाषा में जिनवाणी के तत्वों का गूढ़ रहस्य समझाया गया। साथ ही जैन धर्म में उत्पन्न श्रावक की दिनचर्या क्या होना चाहिए? किस प्रकार से है? और अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का ज्ञान शिविर के माध्यम से प्राप्त हुआ। डॉ आशीष जी भैया जी का सफल संयोजन ने संपूर्ण कार्यक्रम को बहुत ही ज्ञानवर्धक एवं रुचि पूर्ण बनाया। ऐसे शिविर समाज में छुट्टियों के दिनों में अवश्य लगते रहे ताकि संस्कारों से दूर हो रहे बच्चे धर्म एवं संस्कृति से जुड़ सकें।

➤ **संदर्भ ग्रन्थ सूची -**

- परमात्म गीतिका
- (आचार्य शुभचंद्र कृत पांडवपुराण)
- (जैन साहित्य/2/110,112)
- पांडवपुराण 1.14, वीर वर्द्धमान चरित्र 1.53-57
- समय - वी. नि. 593-633 (ई. 66-106)।
- ( धवला 1/प्र.14,31)।
- अकलंक चारित्र
- ( सिद्धिविनिश्चय प्रस्तावना 5/पं.महेंद्रकुमार)
- महापुराण 1.53, पांडवपुराण 1.17
- श्रवणबेलगोला (शिलालेख नं. ४०)
- (जिज्ञासा-समाधान, 17 अगस्त 2022, लाइव प्रसारण जिनवाणी चैनल)
- (क्षत्रचूडामणि, लम्ब-6, श्लोक-5)
- (इष्टोपदेश, आ.पूज्यपाद, छन्द-4)
- (आचार्य कुन्दकुन्दकृत समयसार, गाथा-116-117)
- (आचार्य कुन्दकुन्दकृत समयसार, गाथा-121-122)
- (आचार्य कुन्दकुन्दकृत भावपाहुड, गाथा-76)
- (आचार्य कुन्दकुन्दकृत नियमसार, गाथा-184)
- (आचार्य कुन्दकुन्दकृत चारित्रपाहुड, गाथा-41)
- (आचार्य कुन्दकुन्दकृत चारित्रपाहुड, गाथा-50)
- (आचार्य कुन्दकुन्दकृत भावपाहुड, गाथा-25-27)
- (आचार्य कुन्दकुन्दकृत नियमसार, गाथा-4)
- (आचार्य कुन्दकुन्दकृत समयसार, गाथा-142)
- (आचार्य कुन्दकुन्दकृत समयसार, गाथा-143)
- (उत्तराध्ययन, 6/1)
- श्रमण संस्कृति संस्थान : रजत गौरव सुधा २५साल बेमिसाल (वर्ष १९९७-२०२२) -  
डॉ. शैलेश कुमार जैन बांसवाड़ा
- शिविर स्मारिका - 2022 - डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़
- श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर फोल्डर